भजन पुष्पांजलि

भाग-2

गुरू के उपकारों की कलियां चुन-चुन सुन्दर हार बनाएं ।
निज की सारी भक्ति संजोकर गुरू के चरणों में पहनाएं ।।

भजन पुष्पांजलि

भाग–2

गुरू के उपकारों की कलियां, चुन-चुन सुन्दर द्वार बनाएं।
निज की सारी भक्ति संजोकर, गुरू के चरणों में पहनाएं।।

पावन भाव गुथे जब शब्दों में कहलाए वे भजन।
निराकार साकार की सम्मिलित कृपा करती है दिव्य सृजन।।

भजन—क्रम

अ

1.	अरी ओ शोख कलियो मुस्करा	21
2.	अगर है शौक मिलने का तो	22
3.	अनमोल जीवन ना जाए बेकार	23
4.	अखण्ड अन्नत अविनाशी रे	24
5.	अधरों पर तेरा नाम रहें, राम	25
6.	अपनी रहमत का भगवन तू	26
7.	अरे हो ज्ञान दिया दिल लिया	27
8.	अब तो सतगुरू मिल गये हैं।	28
9.	अपने गुरू की मै तो बनी रे	29
10.	अब जो मिल गया है तू ना	30
11.	अपना बना के तूने एहसान	31

आ

12.	आपने अपना बनाया	32
13.	आओ बार—बार दादा के दरबार	33
14.	आत्म धन का है पाया मैंने	34
15.	आ जाओ बन्दे गुरू की शरण	35
16.	आओ प्रभू आओ अब ना देर	36
17.	आते हैं चले जाते है, जाने वाले	37
18.	आये जो तेरी शरण में हम, दिया	39
19.	आंखो में तेरा ध्यान रहता	40
20.	आया नया साल साथ में	41

21.	आया शरण ठोकरे जग की	42
22.	आज जंगल में कैसी बस्ती	43
23.	इस जीवन में जितनी भी	44
24.	आवाज देकर, आत्म ज्ञान	45
25.	आज राम मेरे घर आये..2	46
26.	आया अवतार आया, आया	47
27.	आईया रौनका, आईया रौनका	48
28.	आज मैने देवो जी बधाईयां	49

इ

29.	इतनी शक्ति हमें देना	50
30.	इतनी शक्ति मुझे दो मेरे	51
31.	इसी जन्म में कान्हा बना	52
32.	इक आस तुम्हारी है, विश्वास	53
33.	इस माटी में सुन मेहरबां	54
34.	इतनी शक्ति हमें देना दाता	55
35.	इतना गुरू में प्यार बढ़े कि	56

उ

36.	उड़ जाएगा हंस अकेला	57
37.	उठ जाग मुसाफिर अब	58
38.	उजड़ा अंजुमन मेरा तूने	59
39.	उड़ जायेगा हंस अकेला	60
40.	उठ जा प्यारे प्रेमी तेरे मुख	61

ए

41.	ए दादा तू पूरण धनी	62
42.	ए दादा यही मांगे हम,	63

ऐ

43.	ऐ सत्गुरू ऐ मेरे मेहरबाँ, तेरे	65

ओ

44.	ओ सजना आरे तेरी दीद हुई	66
45.	ओ मेरे प्रेम पुजारी, ओ मेरे	67
46.	ओ गीता वाले सांवरे, ओ	69
47.	ओ मेरे सत्गुरू साईं कृपा	70
48.	ओ प्रेमियों गुरू बिना भी	71
49.	ओ प्यारे प्रभु के गुण गाले	73
50.	ओम अक्षर बोल, मन में अमृत	74
51.	ओ गीता वाले सांवरे, ओ	75

अं

52.	अंत समय में है जगदीश	76

क

53.	किसी गिरते को उठाये तो	77
54.	कहता हूँ कहे जात हूँ कहूँ	78
55.	कैसे मन से करता है तू इस	79

56.	कभी न बिसरूं राम को चाहे	80
57.	करती रहूँ गुणगान मुझे दो	81
58.	कहाँ जा रहा है तू ऐ जाने	82
59.	क्यूँ सोया तू गफलत का मारा	83
60.	किसी और की जरूरत ना हुई	84
61.	किसी की मुस्कुराहटों पे हो	85
62.	कोई जब राह न पाये गुरूद्वारे	86
63.	कैसे झूमें ना हम दिलो जान	87
64.	किस विधि करूं बखान प्रभु तेरे	88
65.	करता के हाथ हजार तू काहे	90
66.	कोई समझे भक्त सुजान	91
67.	क्यों दिल को फंसाये तू ये	93
68.	कितने प्यारे हो कितने शीतल	94
69.	कोई लाख करे चतुराई	95
70.	कुछ ऐसी करनी कर प्रेमी	96
71.	कुछ न कुछ तो जरूर होना है	97
72.	कितने ऊँचे भाग्य हमारे जो	98
73.	कितनी महिमा गांऊ कितना	99
74.	करो सत्संग सदा प्रभु से ही	101

ख

75.	खुद को जो मिटाया तूने	102

ग

76.	गीता भगवन के गुलशन की	103

77.	गुरू मिल्या -2 गुरू मिल्या	104
78.	गुरू तेरे दरबार आते ही आते,	105
79.	गीता भगवन तूने बदले जीवन	107
80.	गुरू से बढ़कर दुनिया में है	109
81.	गुरू प्रेम के सहारे हमें मिल	110
82.	गुरूदेव तेरा उपवन, पाया तो	111
83.	गुरू को पाया तो हमको ज्ञान	112
84.	गीता भगवन तेरी याद में	113
85.	गुरू दर्शन से नूर होता है	114
86.	गुरू तेरी महिमा जग से न्यारी	115
87.	गुरू के प्रेम में पल पल निकलता	116
88.	गुरू जी कैसे करूँ अदा तुम्हारा	117
89.	गुरू सुमिरन में जो मन डूबा,	118
90.	गुरू वचनों के सिवा दुनियां में	120
91.	गम ना करो इस दुनियां में	121
92.	गुरू जोत से जोत जगाये नर	122
93.	गीता ज्ञान सुन प्यारे तू गीता	124
94.	गुरू की महिमा गाले, भजन	126
95.	गुरू चरण प्रीत मोह लागी	128
96.	गीता भगवन सभी के दिलों	129
97.	गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके	130
98.	गुरू की मिली चरण तो मेरे	131
99.	गुरू तुझको पा कर के मुरझाया	132
100.	गुरू देता है दिल से दुआंये	133
101.	गीता भगवान की सुन लो	134
102.	गुरू चरणों में लागी री	135

103. गुरू के वचन है नैया पतवार 136
104. गुरू तेरे वचनों में जन्नत 137
105. गीता भगवन आदर्श तेरा 138
106. गाए जा गाए जा–3 गुरू 139
107. गुरू बिना चैन कहाँ रे, 140
108. गुरू तेरा दामन ना छोड़गें 141
109. गुरू का साथ है इतना 142
110. गुरू सुमिरन में जो मन 143
111. गा ले तू भी गुरू का 144
112. गीता भगवन तेरी कुर्बानी 145
113. गीता भगवन का प्यार 146
114. गीता भगवन तेरे वचनों पे 147
115. गीता भगवन चलं पीछे 148
116. गीता भगवन तूने बदले 149
117. गीता भगवन ने हम भक्तों 151
118. गीता भगवन की प्रेम कहानी 152
119. गीता भगवन के मिलने से 153
120. गीता भगवन सबके दिलों 155
121. गीता भगवन को करते नमन 157
122. गाऊंगा गीत तेरे सांझ सवेरे 158
123. गुरू जी म्हारो भाग जाग्यो रे 160
124. गर हो उसकी मर्जी, 161

च

125. चंचल मन जब स्थिर बन 162
126. चिन्ताएं छोड़ो सारी सपने 164

127. चित्त ऐसा तृप्त हुआ है 165
128. चदरिया झीनी रे झीनी 166

छ

129. छुपा लो यूँ दिल में प्यार 167
130. छोड़कर सब आ गए हम ऐ 168
131. छुआं मांग सबकी दुआ 169

ज

132. जरा सोच ले क्या किया 170
133. जमी चल रही आसमॉ चल 171
134. जिन्दगी दो दिन का जग 172
135. जो इक पल में राय मिला 173
136. जो शरण गुरू की इहलोक 175
137. जग आत्मा में जाग दिल 176
138. जिस रोज गुरू ने ज्ञान 177
139. जब से उसकी लगन लगी 178
140. जिसके सिर ऊपर तू स्वामी 179
141. जीवन अधूरा था, मेरे सत्गुरू 180
142. जिसकी नजरों गुरू से मिलती 181
143. जबसे उसकी लगन लगी 182
144. जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, 183
145. जीवन अधूरा था, मेरे सत्गुरू 184
146. जिसका मुझे था इंतजार जिस 185
147. जिस रंग में मेरा मालिक राखे 186
148. जीवन में गुरू तेरा साथ रहे, 187

149. जिसकी नजरे गुरू से मिलती 188
150. जग झमेलो की क्या है पड़ी, 189
151. जरा तो इतना बता दो भगवन, 190
152. जहां रब ले जाए चलता चल, 192
153. जगत के रंग क्या देखूं 193
154. जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, 194
155. जो सुख देता है वो दुख देता 195
156. जिसको अपना कहकर बन्दे, 196
157. जिस रंग में मेरा मालिक राखे 197

त

158. तू मेरा जीवन आसरा ओ मेरे 199
159. तेरी कशिष में सत्गुरू दर पे बुला 201
160. तेरे अहसान का बदला चुकाया जा 202
161. तेरा ही था इंतजार, मिले हो कितने 203
162. तेरी कृपा को मैने पाया, 204
163. तू पास है तो दिल का अजब 205
164. तुमको जिसने दिल में बसाया 206
165. तू भी राही मैं भी राही राही है 207
166. तेरी महिमा गाके ऋषि मुनि 208
167. तूने मुरली की धुन है सुनाई 209
168. तेरी जब से महफिल मुझे 210
169. तुम्हीं ने दिया मुझको प्रेम 211
170. तुम्हारी शरण मिल गई सांवरे 212
171. तेरे करम से बेमियांज कौन 213
172. तेरा जलवा जिसने देखा वो 214

173. तेरी रहमत के सदके ये बंदे 215
174. तेरा आणा मीठा लागे मुस्काना 216
175. तुमने गुरू जीवन दिया कितने 217
176. तू मेरा गिरधर है, तू ही मेरा 218
177. तुम अगर बख्श देने का वादा 219
178. तारों रे तारों मोहे तारों से 220
179. तेरी कैंची शान है सत्गुरू मेरा 221
180. तेरे प्रेम में तेरे प्यार में मेरा 222
181. तेरे चेहरे से नजर नहीं हटती, 223
182. तन मन तेरा जब अर्पण होगा 224
183. तेरी मेहरबानी की मेहर हो गयी 225
184. तज विशयों की दलदल सुमरिन है 226
185. तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है 227
186. तेरा ही था इंतजार मिले हो 228
187. तेरे प्यार में ऐ गुरूवर जीवन ये 229
188. तू ही तू ही बोलवे ना जिन्दगी 230
189. तेरे जलवे नूं अखां विच बसां 231
190. तेरी कर्म कहानी तेरी आत्मा ही 232
191. तोरा मन दर्पण कहलाए रे, 233

द

192 देखने में ना सुहागिन है, 234
193. दुनिया से अंधकार मटाने, 235
194. दादा के मिलने से जीवन 236
195. दादा तेरे दर आकर मिलता 237
196. दिलदार हमारे दिल को तुम 238

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
197.	दिल दीवाना है आपका दिलदार	239
198.	दिल दीवाना बिन सतगुरू के	240
199.	दर तेरे दर तेरे आये है हम	241
200.	दादा तेरे दर आकर मिलता	243
201.	दिल मे बैठा राम रमैया	244
202.	दुनिया की दौलत की ना मुझको	245
203.	दे दी हमें मुक्ति बिना खड़ग	246
204.	दुनिया करे सवाल तो हम क्या	247
205.	दादा तुमसे प्यार कितना ये हम	248
206.	दादा तेरा शुकाना तेरे जैसा	249
207.	दादा के मिलने से जीवन	250
208.	दादा जी हर घड़ी मेरे अंग	251
209.	दिखाकर जलवा लुभाया तूने	252
210.	देखता हूँ जिधर तू ही तू है,	253
211.	दिन जवानी का ढला, आई	255
212.	दुनिया एक सराय है,	256

ध

213.	धरती अम्बर में तुम दिल के	257
214.	धरती पे आया निराकार दादा	258

न

215.	नाचो प्रेमी बाजे रे हतीले	259
216.	नाम तेरा मेरे सत्गुरू स्वामी	260

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
217.	नित पाऊँ मैं दर्शन तेरा	262
218.	निस्वार्थ प्रेम का कैसा है	263
219.	नजर से प्यार छलकाओं	264
220.	ना मिले संसार तेरा प्यार	265
221.	नारायण जिसके ह्रदय में	266
222.	नींद से अब जाग बंदे	267

प

3.	पीयो रे राम रस है कोई	268
	पूरी मुरादे है सभी मेरे दिल	269
225.	पी लेना गुरू नाम का	270
226.	पवन है ये गुरू हमारा	271
227.	पीनी है तो हरि नाम वाली	272
228.	प्यारे गीता भगवान ने हमको	273
229.	पता नहीं कैसे लग जाती है	274
230.	पल पल बीत रहा है जीवन	275
231.	पूरी मुरादे है सभी मेरे दिल	276

प्र

232.	प्रभु को नहीं देखा हमने	277
233.	प्रभु तूने ये कैसी कनात	278
234.	प्रभु की लगन में दिन रात	279
235.	प्रभु विश्वास जो इंसान	280
236.	प्रभु मिलन की मस्तियो	281
237.	प्रेम की अगन हो भक्ति	282
238.	प्रेमी के दिल में कोई तमन्ना	283

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
239.	प्रेम में खिचकर द्वार पे तेरे	284
240.	प्रियतम मेरे रहबर मेरे आए	285
241.	प्रभु अपने दीवानों पर कुछ	286
242.	प्रेमी रे तू शुकाने गा पूरण	287
243.	प्रेग ही ईश है पावे जो दे	288
244.	प्रभु का ये जग सुन्दर मगर	289
245.	प्रभु चिंतन करो प्रभु प्यारे	290
246.	प्रभु मेरे जीवन को कुंदन बना	291
247.	प्रेम जब गुरू से हो गया	292
248.	प्रेम रस बरसयो री आज मोरे	293
249.	प्रेमी के दिल में कोई तमन्ना	294
250.	प्रीत की बांधी तुम संग डोर	295

फ

251.	फूल बिखरावा तेरे सदके जावां	297

ब

252.	बार बार ये जन्म ना आता	298
253.	बाजे मन में मेरे शहनाई	299
254.	बरसा दादा सुख बरसा आंगन	300
255.	बाजी रे मुरलियां हौले हौले	301

भ

256.	भर दे रे श्याम झोली भर	302
257.	भगवान की हर चीज है	303
258.	भूल जा सारी दुनिया को	304

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
259.	भक्ति की शक्ति को दुनियां	305
260.	भूला मन काहे को डेरा	306

म

261.	मन रे तू काहे न धीर-धरे	307
262.	मिली तुम्हें ये जिन्दगी, कर	308
263.	मेरे हालात सुधरे है तेरे दरबार	309
264.	मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी	310
265.	मुझको जमीं आसमां मिल गए	311
266.	मेरे दिल की पतंग कट गयी	312
267.	मत कर तू अभिमान रे बन्दे	313
268.	मन तू ज्योति स्वरूप है,	314
269.	मेरी अखां विचां श्याम मेरा	315
270.	मन बेंचे सत्गुरू के पास	316
271.	मया ने तुम्हारा अमन लूटकर	317
272.	मन के गहरे अँधियारे में,	318
273.	मिटा दे अपनी हस्ती को	319
274.	मुझे नां चरणों से अपने	320
275.	मना लगा है भोगो में,	321
276.	मांग दरबार से बन्दगी,	322
277.	मंदिर जान वाले बता	323
278.	मानुष देही मिली अमोलक	324
279.	मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरा	325
280.	मेरा सत्गुरू प्यारा मीत है	326
281.	मुझे रास आ गया है तेरे	327
282.	मेरे सतगुरू ने मुझे ये सिखाया	328

283. मेरे हठीले श्याम 329
284. मेहरबां आ गया है मेहरबानी 330
285. मिली तुम्हें ये जिन्दगी करो 331
286. माया का दीवाना राजी, होता 332
287. मैं क्या जानूं तेरी रघुराई तू 333
288. मेरी झोली छोटी पड़ गयी रे 334
289. मन के मंदिर में तेरा दीदार 335
290. मेरी श्वांसों में तू है समाया 336
291. मन अंधा मन गंदला और 338
292. मन के अंदर मंदिर बनाया 339
293. मेरी खुशियों का रहा ना 340
294. मन का मंदिर साफ सुथरा 341
295. मेहरबाँ आ गया है मेहरबानी 342
296. मिट गये सारे गम मिल गया 343
297. मिल गया सत्गुरू सहारा 344
298. मुखे ज्ञान जी वरन मिली 345
299. मानव जन्म अनमोल रे, इस 347
300. मेरे भगवन तुम्हें भक्तों को 348
301. मनन ऐसा करो मन में कि 349
302. मै तेरे नाम के गीत गाती रहूँ 350
303. मेरे सत्गुरू मेरे भगवन मेरे 351
304. मोहन रे मोहन रे थारे बिना 352
305. मिल हमको भगवन सीखा 353
306. मानव तू परिवर्तन से काहे 354
307. मेरे सत्गुरू है मेरे साथ 355

य

308. ये मौके प्यारे प्यारे मौके 356
309. या तो मिट जाइये या मिल 357
310. ये दर मिल गया, सारी 358
311. यहाँ करने उद्धार भगवान 360
312. ये भी क्या अहसान कम है 361
313. ये दुनिया बनाना, बनाके फिर 362
314. युग युग से गुरू ज्ञान की 363

र

315. रात के बाद होगा सवेरा 365
316. रंग बरसे भीगे संगत सारी 366
317. रब ढूंढने वाले मानुश्य मन 367
318. रंग लो रंग लो श्याम रंग रंग 368
319. रंग बिरंगे प्रेम के रंग में 369
320. राम नाम अति मीठा है 370
321. रमता राम रमो मोरे जिया 371
322. राम भजन रखियाई बेडा 372
323. राम कहूँ तुझको या वंशी 373

ल

324. लिखा कौन मिटाये रे बंदे 374
325. लाखों महफिल जहाँ में है 375
326. लाये है मेरे सत्गुरू सत प्रेम 377

व

327. व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो 378
328. वंशी बजाने वाले पहले क्यो 379

श

329. शमां जलती है परवाने हटाये 380
330. श्वासों के तार–तार में प्रभु 381
331. शुक्राना गाए दिल घड़ी घड़ी 382
332. श्वांस सिमरो गोविन्द 383
333. शमां जलती है, परवाने हटाए 384
334. शुक्रिया ऐ प्यार तेरा शुक्रिया 385
335. शुक्राना गए दिल घड़ी घड़ी 386
336. शुक्राना शुक्राना शुक्राना 387
337. शब्द संभाले बोलिए, शब्द के 388
338. शुक्रानों के गीत हम आए 389

स

339. सूरज कब दूर गगन से चंदा 390
340. सत्गुरू ओ मेरे सत्गुरू 391
341. सच्ची बात बताता है ये 392
342. सब धनवान गरीब है, पहुँच 393
343. सारे जहाँ के मालिक तेरी 394
344. सहारों का सहारा है सहारा 395
345. सत्गुरू तू बेमिसाल है तेरी 396

346. सत्गुरू का ये कहना, मेरे 397
347. सदा पाऊँ तेरा द्वारा, चाह 398
348. सतगुरू के हैं जो रे उन्हें 399
349. सत्गुरू तेरे वचनों में बड़ा 400
350. सच्चे हृदय से होकर समर्पित, 401
351. सत्गुरू प्यारे मेरा नाथ तू है, 403
352. सदा मुस्कराना गुरू का वचन 404
353. साधो मन का मान त्यागो 405
354. सतगुरू का संग है प्यार की 406
355. सब कुछ तज के द्वार पे तेरे 407
356. साई तेरी याद महा सुखदायी, 408
357. संसार सराय है यहां कुछ नहीं 409
358. सारी खुशियाँ आती है जब 410
359. साथ ले लो गुरू आगे बढ़ 411
360. सब कुछ दिया है तुमने इतना 412
361. सजण दिसण में अचे ना चाहे 413
362. सच में गुजरेगी जिन्दगी अपनी 414
363. सुर नर मुनि जन सब गाए तेरे 415
364. संसार के जीवों पर आशा न 417
365. सब सौंप दो प्यारे प्रभु को 418
366. सुख में समता, दुख में 419

ह

367. हजारे शुक्राने है गुरु के 420
368. है मानुष्य जन्म सोना 421
369. हर उलझन सुलझा दी 422

370.	होगा परसों जाने किसका	423
371.	हर सुबह बचपन, दोपहर	424
372.	हरि नाम के हीरे मोती,	425
373.	हम प्यार में तेरे सत्गुरू	426
374.	है प्रीत जहाँ की रीत सदा	427
375.	हम आज से हम आप के	428
376.	है मनुष्य जन्म सोना, इसको	429
377.	हर उलझन सुलझा दी गुरू	430
378.	है तमन्ना मेरी प्यारे सत्गुरू	431
379.	हर बार तेरे दर पे नवगीत	433
380.	हम तेरे प्यार में सारा आलम	434
381.	है मदमस्त मस्ती गुरू ज्ञान	435
382.	होगे किसी के लाखों मेरा	437
383.	हरेक राही को सत्संग की	438
384.	हरि ओम् हरि–हरि ओम्	439
385.	है कृपा तेरी मेरे सत्गुरू	440

अ

भजन–1

अरी ओ शोख कलियो मुस्करा देना वो जब आये
सुनो फूलो महक अपनी लुटा देना वो जब आए

वो जब आए अदब से डलिया फूलो की झुक जाए
वो जब गुजरे चमन से काफिले भवरो के रूक जाये
बहारो तुम गले उनको लगा लेना वो रूक जाए

बहुत तारीफ करती है ये कलिया
बार बार उनकी तमन्ना है कि मै भी देख लूँ
रंगो बहार उनकी हवाओ तुम नकाब
उनकी उठा देना वो जब आये

बगैर उनकी मोहब्बत के मैं जिन्दा रह न पाऊगी
मगर में राज दिल का मैं किसी से कह न पाऊगीं
निगाहे हाले दिन उनको बता देना वो जब आये ।

भजन–2

अगर है शौक मिलने का तो हरदम लौ लगाता जा,
जलाकर खुद नुमाई को भस्म तन पर लगाता जा।

पकड़कर इश्क की झाड़ू सफा कर हिज़रे ए दिल को
दुई की धूल को लेकर मुसल्लह पर उड़ाता जा।

मुसल्लह फाड़ तसवी तोड़ किताबें डाल पानी में
पकड़कर दस्त फिरस्तों को गुलाम उनका कहाता जा।

ना मर भूखा ना रख रोजा, ना जा मस्जिद जाकर सजदा
भ्रम का तौड़ दे कूचा शराबे शौक पीता जा।

हमेशा खा हमेशा पी न गफलत में रहो हरदम
नशे में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा।

न हो मुल्ला ना हो ब्राह्मण, दुई की छोड़कर पूजा
हुकुम है शाह कलन्दर का अनहल हक तू कहाता जा।

कहे मंसूर मस्ताना मैंने हक दिल से पहचाना
वही मस्तों का मचखाना, इसी के बीच आता जा।

भजन–3

अनमोल जीवन ना जाए बेकार
सव को पाकर तुम अपना जीवन बदलना
दुनिया की बातो में कभी तुम समय न खोना

अपने किए इकरार हमें करने ही पूरे
ऐसा न हो राह में हम रह जाए अधूरे
सारी दुनिया रूठे लेकिन श्याम न रूठे
अपने असली स्वरूप से महरम न होना,

आल्नद का ही सागर हर दिल में समाया
लेकिन हम ये समझे वो विषयों वे आया
राज ही ये कुछ ऐसा एक पहले जैसा
राज कहानी से कभी महरम न होना ।

जैसे जल बिन महली को कुछ भी न आए
सच्चे आशिक को प्रभु बिन चैन न आए
इश्क की आग में जलना प्रेम में डूबे रहना अपने असली

भजन–4

अखण्ड अन्नत अविनाशी रे
साक्षी स्वरूप आत्मा
क्यों बनकर जीव भरमाए तू

विषयो में खोई बहुमूल्य श्वॉसे
खो गया आके जगक सराय में
खुदी में पड़कर खुद को तू भूला
हरि से या वादा भी भूला

ओम रूप मेरा आदि पुरातन
नित शाश्वत अव्यक्त सनातन
जो करने आया करना नही या
जो मिथ्या समझा वो तू नहीं था ।

ही आना जाना मुझमें नही
आदि अन्त ही मेरा नही
मुझसे रोशन संसार सारा
चंदा सूरज विद्युत तारा
सोहम शिवम आत्म ।

भजन–5

अधरों पर तेरा नाम रहें, राम रहें या रहीम रहें
श्याम रहे या करीम रहें, हर पल तेरा ध्यान रहें।

एक है तू तेरे रूप अनेकों कण–कण में रमता है देखो,
पास है सब के दूर नही वो, सब पे कश्पा निधान रहे।

तू हर विधि सृष्टि का स्वामी, अगर अगोचर अन्तर्यामी
तुमसे लगन लगा ले जो भी हर मुश्किल आसा न रहे।

झूठी माया झूठी काया झूठा श्वांस का आना जाना
रंग में तेरे रंग गई गिरधर जीवन ये निष्काम रहे।

तू ही शक्ति तू ही भक्ति, तू ही कपट निवारक स्वामी
तेरी ही कृपा से सतगुरू मिलता सत्य का ज्ञान रहे।

भजन–6

अपनी रहमत का भगवन तू इशारा कर दें
जैसा भी चाहे तू जीवन ये हमार कर दे

मुस्कराये जो तेरी आंख तो आ जाये बहार
खाक जर्रे को तू जो चाहे तो सितारा कर दे।

लाखों सूरज भी जो चढ़ आये तो अंधेरा ना मिटा
हर तरफ रौशनी रौशनी होकर तू सवेरा कर दे

जिसको तेरे पे भरोसा है उसे डर किसका
तू जो चाहे तो तूफा को भी किनारा कर दें

कहने वालों का जमीन में हैं अदांज जुदा
कर दे एक बार बार प्रभू आनन्द नजारा कर दें ।

भजन –7

अरे हो ज्ञान दिया दिल लिया कितने प्यार से
सतगुरू में प्यार दरिया देखे ये जहान

तेरी इक नजर पे करूं जीवन को कुर्बां
तुझसे मिला ये जीवन तुझपे निसार
अरे जीवन मेरा तेरे अर्पण जैसा तू बना

सागर में रहकर भी मैं अब तक थी प्यासी
जीवन पलट दिया मेरा मिटि ये उदासी
करे अब ना छोड़ू तेरा दामन दुश्मन हो जहान

घर घर के भीतर तूने ब्रह्म है दिखाया
भ्रम सारे दूर गये जीवन में तू आया
अरे जीवन मेरा खुशियों से भर दिया ऐसा
मेहरबान

नजरे है सतगुरू तेरा रहमत भरी
जिस पे जाये नजरे करम फिर कहाँ वो जायें
अरे घायल पंछी उड़ ना पायें
बाधा प्यार का जाल

भजन–8

अब तो सतगुरू मिल गये हैं अब क्या बोलना
अब ओम बोलो हरिओम बोलो ना भूलना
ब्रह्म पा गये हैं अब तो नहीं खोजना

हर श्वास में मेरे तुम हो हर बात में मेरे तुम हो
ख्वाबो में मेरे तुम हो, जीवन में मेरे तुम हो
अब कदम कदम पे गुरू के संग ही डोलना

लो जीत गये माया से और हार गये इस दिल से
हमको ये ज्ञान रूहानी मिला सत्गुरू के श्री मुख से
इस ज्ञान ने हम को पागल करके छोड़ना

ऐ प्रेमी जगत में आकर है प्रेम तुम्हीं को करना
जो प्रेम किया अर्जुन ने बन गोपी सा दीवाना
दीवाने पन में पाओगे तुम कशण कशण

भजन –9

अपने गुरू की मै तो बनी रे जोगनिया,
हंसी उडाये चाहे सारी दुनिया।

गुरू वाली सुन मोह माया तोड़ी है
गुरू संग जोड़ी प्रीत जगत संग तोड़ी है
गुरू मोहन मेरे हो मै मोहनिया.

गुरू के हाथों में अब जीवन डोरी है
आत्म धन को जोड़ा तो जगत माया तोड़ी है
गुरू बादल मेरे हो मै मोरनिया

गुरू वचनों में तो उमरिया बितानी है
जीते जी मर के जीवन मुक्ति पानी है
गुरू चंदा मेरे हो मै चन्दनिया

प्रेम में गुरू के मै डूब ना जाऊँगी
गुरू वचनों को मान भव सागर तर जाऊँगी
गुरू महिवाल मेरे हो मै सोहमिया

भजन–10

अब जो मिल गया है तू ना छोड़ेंगें हम
जन्मों का ये नाता अपना ना तोडेंगें हम

मुरख थे जो हर जन्म में ना तुझे जान सकें
सामने रहकर भी तुझको हम ना पहचान सके
अब जो आया सतगुरू बन अंखियां खोलगें हम

कितना धीरज है तुझमें तू सह लेता अज्ञानी
माया की बातें उसकी तु पीता जैसे पानी
फिर बरसाता ज्ञान की वाणी पी जो लेगे हम।

प्यार करे दुगुना तू हमसे जब देवे तू गाली
लटके हम मोह माया में तू काटे एक–एक डाली
आन पडे जब गोद में तेरी न रो देगें हम।

भजन–11

अपना बना के तूने एहसान कर दिया है,
ये तेरा शुक्रिया है ।

दुनिया है ऐसा सागर जिसमें जहर भरा है,
नफरत से जो मिला है ऐसा ये रास्ता है,
तेरी रहमतों ने आकर सीने में घर किया है ।

क्या थी मैं क्या बनी हूँ यह बात मैं न भूलूँ,
चाहे जो तो बना दे औकात मैं न भूलूँ,
जो कुछ भी है ये दाता तेरा ही सब किया है ।

कभी इम्तहां न लेना, ऐसे ही बड़ती जाऊँ,
बल दो गुरूजी इतना तेरी प्रीत मैं निभाऊँ,
तेरी दया का सागर, मैने सदा दिया है ।

प्रहलाद के, मीरा के वंशीवाले,
आया है दौड़कर तू जब भी तुझे बुलाया ।

आ

भजन–12

आपने आपना बनाया
मेहरबानी आपकी
शीषे को हीरा बनाया
कदरदानी आपकी

हम न भूलेगे कभी
एहसान सत्गुरू ये तेरा
आने चरणों में लगाया
कदरदानी आपकी ।

प्रेम सब कुछ है जगत है,
प्रेम ही एक सार है
जो चल इस सीख पर
तो है निषानी आपकी

दादा तुमने हर जुबां को
इतना मीठा कर दिया
हर जुबां पर आज़ सत्गुरू
है कहानी आपकी ।

भजन –13

आओ बार–बार दादा के दरबार
देकर सच्चा प्यार गुरू तार देगें।

इनके चरणों में मिलती है शान्ति
मिट जाती है मन की सारी भ्रान्ति।

इनके चरणों में आओ अपना मस्तक झुकाओं
वो बना देगे आओ

इनके द्वारे पे बहती है गंगा
इसमें नहाओ तो मन हो जायें चंगा
सारे वेदों का राज प्रभु दर्शन के साथ
वो सजा देगें आओ........

नहीं कोई चमत्कारी बातें
यहाँ दिन में बदलती है रातें
अब रातें कहाँ बीती बातें कहाँ
ब भुला देगें आओ........

भजन –14

आत्म धन का है पाया मैंने गुरू से खजाना
मैं खुश हूँ मेरा नाचे दिल ये दीवाना
गाये शुकराना, शुकराना, शुकराना

तेरे ज्ञान की बंशी जो मन में समायी
तेरे द्वारे पे मैं दौड़ी आयी
तेरी बंशी ने मन के तारों को छेड़ा
ये मन अब हुआ है तेरा आशियाना

तेरे प्रेम में कैसा ये जादू किया है
गमों ने मुझ से किनारा किया है
सिखाया है तूने जो हँसना हँसाना
है आनन्द का भर दिया खजाना

सीखा है तुझसे ही शुकराना गाना
हां तूने बनाया मुझे परवाना
अब जोश में गाऊँ मैं तेरा तराना
तेरे हाथ है मेरा जीवन बनाना ।
हां तुमको जो देखा खिली दिल की कलियां
तुम्ही में समर्पण ये तन मन मेरा
ये दिल चाहता है तुम्ही में समाना ।

भजन –15

आ जाओ बन्दे गुरू की शरण
गुरू की कृपा से गुरू की कृपा से
गुरू की कृपा से मिटे सारे गम

जन्म अमोलक बिना दाम जाये
गया वक्त तेरा वापस ना आये
अब भी समय है कर ले मनन

गुरू की चरण रज मस्तक पर धर ले
उनकी कृपा से अब सागर कर ले
निश्चय ही होगें प्रभु दर्शन,

गुरू ही ब्रहमा, गुरू ही विष्णु शंकर
ह्रदय में भरा उनके करूणा समुद्र

भजन–16

आओ प्रभू आओ अब ना देर तुम लगाओ
ओ जाओ प्रभू ओ जाओ।

तेरे आने की खुशी में सजी ये महफिल है
तेरे दर्शन की चाहत मे अयस्सर ये दिल है।

तेरे द्वारे पे प्रभु आज रंग छाया है ,
तेरे ही नूर का नूरानी नशा छाया है आओ.....

तेरा दरबार है आला निराली शान तेरी
तेरी इस शान पे कुर्बान ये जान मेरी।

कि आ के प्रेमियों को दरश दिखा जाओ,
विराजो सिंहासन पर आके प्रभु देर न लगाओ।

भजन–17

आते हैं चले जाते है, जाने वाले कभी कभी यहॉं अपने
प्यार से, लोगो के दिलों में यादगार बन जाते है

रोना ना उदास होना ना ये आंसू खोना यहॉं ना दामन
भिगोना कभी पाना है अभी कुछ पाना है
कभी कुछ खोना हैं यहॉं जो होना है होगा वही
यही जिन्दगी है यहॉं जिये वही लोग जो
सारे गम भुलाकर आंसुओं में मुस्कराते है

चलना है हमें तो चलना है, अकेले चलना है
कोई भी हो या ना हो हम सफर
राहो में चले या हम रूके रूके या हम चले
कही भी रूकता नहीं ये सफर

आना जाना लगा रहे, जीवन की राहों में
राहे वहीं रहती हैं राही बदल जाते है

रातो के अंधेरी रातो के घनेरे साये में
छिपा होगा सवेरा कही
आयेगा सवेरा आयेगा उजाले लायेगा
अंधेरे होंगे हमेशा नहीं

माने यहॉ हार नहीं जो कमी किसी हाल में
वही फूल कभी कांटो में खिलाते हैं

भजन –18

आये जो तेरी शरण में हम , दिया तूने प्यार पावन
सिखा दिया तूने भगवन हमको मुस्कराना
दिल गाता है तेरा लख लख षुकाना

थे भटकते राही पा गये मंजिल अब
डूब रही थी किश्ती मिल गया साहिल अब
तुम जो मिले ओ गुरूवर खिल गया मुकददर

मन भी अब सुनता है तेरी अमृत वाणी
पाके प्यार तुम्हारी घूटी दुनिया ये फानी
मस्त कर गई ओ गुरूवर तेरी नजर नूरानी

सूने इस जीवन में तूने रंग बिखेरा
विरान जी जिन्दगी को तूने आके संवारा
तेरी रहमत से ओ गुरूवर हो गया उजाला

भजन–19

आंखो में तेरा ध्यान रहता है सुबह शाम
मुझे तेरा नाम प्यार है जो देता भव से किनारा है
मको का प्राण सहारा है

नाम तेरा जपता जो प्राणी भय ना किसी से खाये
आत्म कुल की शक्ति उसके आगे शीष झुकाये
वही सत्गुरू का प्यार है गुरू पे जीवन वारा है
मकों का प्राण सहारा है

मोह ममता की शक्ति उस पर असर नहीं कर सकती
वास है जिसके दिल में करती तेरी निर्मल मकि
जीवन को उसने संवारा है, दिल से संसार तारा है,

प्रभु भक्तों निज करूण है छांव में अपनी बिढायें
आखों में मरा अपना तसव्वुर मोह व्याधि से छुडाये
किया उपकार ये मारी है, सकल दोशो को निवारा है
धन्य धन्य गुरू हमारा है ।

भजन–20

आया नया साल साथ में जीवन है खुषहाल गुरू तेरा षुकानालेकर
जीवभाव दिया है तुमने आत्मभाव गुरू तेरा षुक्राना

मन की गुलामी से माया की सलामी से, तूने ही छुडाया
जगत में तिल तिल जलाने वाली आग से बचाया

लेकर आत्म भाव दिया तूने जीवनदान गुरू
जीवन में आके रहकर तुमने जीवन संवार दिया

प्रेम रंग से तूने रंगरेज मन की चूनर रंगा दिया
हुई चूनर लालो लाल

सिर पर स्वामी हाथ है तेरा डर किस बात का
अग्नि बाज मन कितने चलाये परवाह नही
शान का डंडा वैराग्य की तलवार शास्त्र दिया है साथ गुरू

भजन – 21

आया शरण ठोकरे जग की खाकर
दूंगा प्रभु (मैं) तेरी दया दृष्टि पाकर

पहले मगन हो सुखी नींद सोया,
सब कुछ पाने का सपना संजोग

संजोया, मिला तो वही जो आया लिखाकर
मानमाया का है बस छलावा रावण का मान भी बचने ना
पाया, रखूंगी कहॉ तक मैं खुद को बचा कर

करमों की लीला बडी है निराली,
हरिश्चन्द्र मरघट की करें
रख वाली, समाज में ये आया सब कुछ लुटाकर

ना है चाह कोई ना कोई है इच्छा,
अपनी दया की हमें दे दो भिक्षा
जिसे जग ने छोड़ा उसे तू ही राह दे दे ।

भजंन–22

आज जंगल में कैसी बस्ती बसाई तूने
बीज था एक प्रेम बेल पहुंडाई तूने

आर्थिया जा रही थी रोज षमषानों की ओर
आज उन आर्थियों की डोली सजाई तूने

तन पे ना वस्त्र हाथों ना चूडियॉ थी ।
आज उन अबलाओं की मॉग सफाई तूने

बन के साकार कष्पण आया है मन कहता है
आज ब्रहम ज्ञान की बांसुरी बजाई तूने

छिपके इस मन में अहंकार रावण रहता है
आज रावण की लंका भी जलाई तूने ।

भजन–23

इस जीवन में जितनी भी श्वांसे रहे
तेरी महिमा का गुणगान गाते रहे.————2
सत्गुरू ओ सत्गुरू————2

चांद के तारों के रोशन जहान में, इक सूरज का तेज है गहरा
चाहे ये घट रहे चाहे वो घट रहे
हर घट में तेरा ही प्रकाश रहे।

प्यार तूने दिया हमको इतना सागर में समाये न जितना
तेरी रहमत तले हम तो पलते रहे,
वचनों में ही जीवन लगाते रहे————2

तूने कितनों का जीवन संवारा मेरे जीवन का तू ही सहारा

ना कोई उलझन रहे, ना अज्ञान रहे, इस जीवन में
गुरू तेरा वास रहे————2

हम तो काबिल ना थे इस ज्ञान के
तूने अपनाया अपना जान के
मेरा मन तो है अब सिर्फ तेरे लिए
इस तन पे भी अब तेरा अधिकार रहे।

भजन – 24

आवाज देकर, आत्म ज्ञान देकर हमें तुम जगाओ
विकारो ने जकड़ा गुरू तुम छुड़ाओं

मै माया के मोह जाल में धॅस गया हूँ
मैं सपनों के संसार में रम गया हूँ
भंवर में घिरा हूँ गुरू तुम बचाओ ।

जब से गुरू से है प्रीत लगाई
जीवन की अपनी है हस्ती मिटाई
सत्संग में आओ, और राम द्वेश भुलाओ
विकारो ।

कहॉ जा रहा था नही जानता मैं
बनाये कई रिष्ते अज्ञानता में
इस बनने बनाने से गुरू तुम बचाओ ।

भजन–25

आज राम मेरे घर आये..2
नी मै ऊंचया भागा वाली मेरी
कुटिया विच चरण जो पाए।
चंदन का तिलक लगावाँ नैना दा फर्ष बिछाया
ओदा रूप ना भुलया जांए
छाई चारों ओर हरियाली घर आया जग दा वाली
मेरे सुत्ते हुए भाग जगाएं

 नी मैं चुन–चुन बेर ले आवां
पई चख–चख भोग लगावां,
उन्हा बडे प्रेम नाल खाएं
अज दिन खुषियाँ दा आया
मेरे ष्याम ने फेरा पाया
मेरे सुत्तें हुए भाग जगाएं।

भजन 26

आया अवतार आया, आया अवतार आया,
गुरू के रूप में आया, दादा के रूप में आया।

निश्काम प्यार गुरू ने दिया
और जीवन हमारा संवार दिया,
ज्ञान की शमां लिए, प्रेम पैगाम लिए
आया मसीहा आया........2

आत्म ज्योति दिल में जलाकर
ह्दय हमारा तो रोशन किया
सर्व दुखों की औषधि लिए
आया सतगुरू तो आया।

एक तू जो मिला सारी दुनिया मिला
आज तुमसा जहाँ में कोई नहीं
खुदगर्ज दुनियाँ के इक हमदर्द पाया
आया सतगुरू वो आया।

भजन–27

आईया रौनका, आईया रौनका
गुरू जी दे नाल–नाल आईया रौनका

कल सी चलिया गरम हवांवा
सतगुरू ले आया ढंडिया छावाँ
रूहा ढरिया–ढरिया गुरू तैनू तक–तक ढरियाँ।

जिस धरती ते सत्गुरू आवें
जन्नत ओये ही बन जावे
गल्ला सच्चियां–2असा आजमाईयांए गल्ला सब्जियां

दोद बिना सी नैन प्यासे
भर दित्ते तू खाली काँसे
आसां लाईयां–2 गुरू तेरे दर उत्ते आसां लाईया।

साडे लई आया जग दा वाली
आज है साडी ईद दीवाली
भरो झोलियां–2 रहमता दे नाल–नाल भरो झोलिया।

भजन 28

आज मैने देवो जी बधाईयां
सतगुरू मेरे घर आंए

सफल हुआ अज जन्म हमारा
चमक उठा है भाग्य सितारा
भाग्य मेरे ने जगाए।

खुषियाँ दा अज सूरज चढया
अज मेरे घर सत्गुरू बड्या
संगता ने मंगल गाए।

मुठ्ठियां भर–भर रत्न उडावा
कूट–कूट चूरिया में क्यों ना वंडावा
सत्गुरू दर्ष दिखाए।

कब से बिछुडे आज मिले है
मुरझाए दिल आज खिले है
सत्गुरू भाग जगाए।

इ

भजन – 29

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चले नेक रस्ते पे हमसे
भूलकर भी कोई भूल हो ना ।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचते रहे हम
जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन में बदलें की हो ना ।

हम न साचो हमें क्या मिला है
हम ये सोचे किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बॉटे सभी को
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करूणा का जल तू बहा दे
कर दे पावन हर इक मन का कोना.....

भजन–30

इतनी शक्ति मुझे दो मेरे सत्गुरू
तेरी राहों में खुद को लुटाती चलूँ
चाहें राहों में कितनी मुसीबत पडें,
फिर भी तेरा सदा गीत गाती चलूँ।

दूसरों की मदद की जरूरत नहीं
मुझको केवल तुम्हारी मदद चाहिए
लडखडाये ना मेरे कदम राह पर–2
नाम का डंका तेरे मै बजाती चलूँ।

नाम बोझिल मेरे फूल के बाग से
खो ना जाऊँ यही डर सताया मुझे
इतना वरदान दे दो मेरे देवता
खुद भी जागूं जगत को जगाती चलूं।

भजन–31

इसी जन्म में कान्हा बना ले मुझे बांसुरिया,
मुझे लगा होठों से बजाना मेरे सांवरिया।

कान्हा तेरी बंषी बड़ी किस्मत वाली है
इसीलिए तूने होठों से लगा ली है
सोये जो भाग्य हमारे जगाना मेरे सांवरिया।

इन्सा से भी अच्छा है मेरा बांसुरी बन जाना
कितनी बडी बात है तेरे होठों से लग जाना
मुझको अपनी अंगुली पर नचाना मेरे सांवरिया।

वायदा करो मोहन मुझे मुरली बनाओगे
बनवारी दुनिया को मेरी धुन पे नचाओगे
छोड़ के मुझको अकेला ना जाना मेरे सांवरिया।

भजन–32

इक आस तुम्हारी है, विष्वास तुम्हारा है,
अब तेरे सिवा भगवन मेरा कौन सहारा है।

फूलों में महक तुमसे, तारों में चमक तुमसे
है बर्फ में षीतलता, अग्नि में दहक तुमसे
जिस ओर नजर डालूं तेरा ही नजारा है।

तूफान को आना है आकर चले जाना है,
जीवन का मतलब तो आना और जाना है
अब पार लगा भगवन भक्तों ने पुकारा है।

इस मन में रमे हो तुम, इस तन में बसे हो तुम
मै तुमको कहाँ ढुंढूं कण–कण में बसे हो तुम
जिस ओर नजर डालूं तेरा ही नजारा है।

भजन–33

इस माटी में सुन मेहरबां जब तलक एक भी श्वांस है
तेरी प्रीत ना बिसराऊं मै यही होठों पे अरदास हो।

दुनिया का मेला है रंग भरा कहीं खो ना जाऊं मै भीड़ में
तेरी उंगुली ना छोडू कभी तू हर जगह मेरे साथ हो।

ऋतु आये और ऋतु जाये भी पर विनती है मेरे साहिबा
बरसात तेरे मेहर की, जीवन में बारहों मास हो।

सत्गुरू तेरे चरणों में है जन्नत से ज्यादा सुख कहीं
सर भी झुका रहे हर घडी, अंदर में दिल भी दास हो।

सबको मिले तेरी बख्शीषें, सबको मिले तेरी रहमत,
हर चेहरे पर रौनक रहें दादा ना काई उदास हो।

सत्संग हो मेरा आइना खुद को सवारूं मै प्रीत से
तेरा वचन मेरा हुकुम हो तेरे बोल मेरा लिबास हो।

भजन–34

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विष्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूलकर भी कोई भूल होना

दूर अज्ञान के हो अंधेरे तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बच के रहे हम जितनी भी जिन्दगी दे भली दे

बैर हो ना किसी का किसी से भावना मन में बदले की होना।
हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण

फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुबन
अपनी करूणा का जल तू बहा दे, कर दे पावन हरेक मन का कोना।

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर होना
हम चले नेक रस्ते पे हमसे भूलकर भी कोई भूल होना।

बडे भाग्य से अवसर आया है सत्गुरू बगिया में आया है
घर बैठे प्रीतम पाया है फिर क्यों ना हम महिमा गाये।

भजन–35

इतना गुरू में प्यार बढ़े कि तन मन इक प्राण हो जाये
गुरू बिन और न कुछ सूझे गुरू बिन और न कुछ भाये।

सत्गुरू से आदि का नाता है
रूहानी जो कहलाता है
सत्गुरू से जो प्रीत लगाता है
सत्गुरू भी उनको अपनाए।

सत्गुरू हमारा दाता है
सत्गुरू ही मुक्ति का द्वार है
सत्गुरू से जो नेह लगाता है
सत्गुरू भी उनको अपनाए।

प्रेम ज्ञान अवतारे जग में
स्वंय दादा सत्गुरू जी प्रगटे
जिसने उनको पहचाना है
उसका ही सफल जीवन होय

उ

भजन – 36

उड़ जाएगा हंस अकेला
दो दिन का जग मेला

एक डाल पर दो पक्षी थे
एक गुरू एक चेला
गुरू की करनी गुरू भरेगा
चेले की करनी चेला

जब एक तेल दिए होला
जग मग जग मग डोला
मिट गया तेल तो बुझ गई बाती
ये जग ऐसा होला

कहत कबीर सुनो भई साधो
ये जग ही तो निराला
हो इस जग का जो भेद लगाये
वही गुरू में चेला

भजन–37

उठ जाग मुसाफिर अब भोर भई,
अब रैन कहा जो सोबत है,
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सा पावत है ।

उठ नींद से अखियां खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
प्रभु जागत है तू सोवत है ।

जो कल करना है आज कर ले,
जो आज करे वो अब कर ले,
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया,
फिर पछताए क्या होवत है ।

नादान भुगत अपनी करनी,
ऐ पापी पाप में चैन कहाँ,
जब पाप की गठरी शीष धरी,
अब शीष पकड़ क्यूँ रोवत है ।

भजन–38

उजड़ा अंजुमन मेरा तूने खिला दिया
करू किस तरह से आपका सत्गुरू मैं शुकिया

पापो से आज तूने मुझको बचा लिया
अपनी ब्रहम दृष्टि से पावन बना दिया
भूलूंगी ना कभी भी मै ये उपकरा आपका।

तुमसा महान आज तक देखा कहीं नही
राजा और क्या रंक पर तेरी नजर रहे
छोडूगी ना कभी भी मै ये आंचल आपका।

जी चाहता है आपके जैसी ही मै बनू
दुनिया को छोड़कर तेरे बचनों पर ही चलू
मांगू भी तो मै क्या भला बिन मांगे सब कुछ दिया।

चलते रहे सदा गुरू वचनों पे तेरे हम
सच की राह पर चल दिये लौटे ना ये कदम
पहना दिया है ताज अब तूने जीत का।

भजन–39

उड़ जायेगा हंस अकेला हाँ अकेला
दो दिन का जग मेला

एक डाल पे दो पंछी है, एक गुरू एक चेला
गुरू की करनी गुरू भरेगा, चेले की करनी चेला

जब तक तेल दिये में होता जगमग–जगमग होला
मिट गया तेल तो बुझ गयी बाती ये जग ऐसा होता

कहत कबीर सुनो भई साधो जग है तो निराला
इस जग का जोई भेद बतावे वो ही गुरू मैं चेला।

भजन–40

उठ जा प्यारे प्रेमी तेरे मुख विच खड पावॉं
पहुंचा आज संदेषा मेरा सत्गुरू घर आंवा।
खुषियों के अज झूले पड कए बिछ गई प्रेम से अंखियां
ये मेरी सुण विनती दिल दी पुकरा सुन ले
कि घर आया सत्गुरू जी कि तेरी मेरी इक जिंदडी।

फिर सुहाना आया मौसम प्यार के गीतों का
अंखियां राह तकदी रह गई अपने प्रीतम का
इंतजार की घड़िया गुजरी आ गए कष्ण मुरारी
धरती चुप है अम्बर चुप है मौन की भाशा बोले खाली।
कि घर आए दादा जी कि..............

तुझसे प्रीत पुरानी सत्गुरू रिष्ता जन्मों का
मान रखने आया मोहन अपने भक्तों का
प्रीत की रीत न जानूं ना जानूं प्रेम निभाना
में दौड़ी आवां सत्गुरू कि एक आवाज लगावा।

रूप सलोना तेरा सत्गुरू मन को भाया है
खुषियों का ये पावन अवसर तुमने दिखाया है
जीवन मेरा पलट के तुमने
उपकार किया है इतना।

ए

भजन–41

ए दादा तू पूरण धनी
भाग्य से प्रीत तुझ संग बनी
ये बनी ही रहे और बढ़ती रहे
भीख मांगू मैं तुझसे यही

मेरे दिल में तू ही तू बसा है,
आंखों में मेरी तू ही छिपा है
तू हुआ है मेरा, मै हुई हूं तेरी
नाता तुझसे जन्म-जन्म का है
तार टूटे ना हरगिज कभी

तेरी मीठी नजर जब मैं पाऊं,
दुनियां के सारे दुख भूल जाऊं
और आशा नही अभिलाशा नहीं
सदा किरपा की दष्टि मैं चाहूं
जिसपे कायम मेरी जिदंगी

दुनियां की काहे परवाह करूं,
मै कोई रूठे भी तो क्यों डरूं मैं,
मेरा आधार तू मेरा संसार तू

भजन--42

ए दादा यही मांगे हम,
सत्गुरू करना तू हम पे करम
सत्संग में रहे, सत्संग में पले
सत्संग से ना बहके कदम

तेरी संगत बिना जिदंगी
ी सूनी अंधेरी पड़ी
मिले सत्संग का फल, खिल दिल का कमल
देखे जीवन का बगिया हरी

बढ़ती जाए लगन दम ब दम
प्यार तुझसे कभी ना हो कम
जग काजल की कोठरी है
जाने कितने दुखों से भरी

उसमें वो ही बचे जो तेरे दर पे रहे
धूल चरणों की जिसको मिली
संग संतों का पाऊँ सनम
करूं सजदा सवांरू जन्म

प्यार ही प्यार हो हर जगह
तू वो सागर ही है प्यार का
नहीं पुण्य पाप हो मुखा साफ हो
सत्य का ही हो हमको पता

प्यार से दूर होते है गम
हर परेशानी होती खत्म।

ऐ

भजन–43

ऐ सत्गुरू ऐ मेरे मेहरबाँ, तेरे एहसान कैसे करूं मै बयां
मैं धरा तू आसमान
प्रेम नजर करके रहमो करम
तूने पहुँचाया मुझको कहाँ से कहाँ
बदला है मेरा जहाँ..............

दी इतनी रहमतें जिनके मैं काबिल ना था
ऐसी थी ये जिन्दगी जिसका कोई साहिल ना था
तू मिला तो रब मिला, रब मिला तो सब मिला
झूम उठी जिन्दगी जीने का सबब मिला।

जलती जग की धूप में, तेरी छाया मिल गई
रोते नैना हंस पड़े, दिल की कली खिल गई
खुद है रहमो कर्म श्वांस है इधर उधर
ना उतार पाऊँ मैं कर्ज तेरा उम्रभर ।

दी है इतनी रहमतें झोली छोटी पड़ गई
ऐसी झोली से मेरी आंखें नीची हो गई
भाग्य तू संवारता पार तू उतारता
भक्त तेरा हर घड़ी शुक्र में गुजारता।

ओ

भजन–44

ओ सजना आरे तेरी दीद हुई है मेरी ईद हुई
चंदा तो उतरा मेरे आंगन रे तेरी दीद

ओ मतवाले जोगी, कदमों में है जन्नत तेरे चंदा

सुन मेरे ओ उजले प्रियतम तुझसे रौशन गुलशन आलम
चंदा.........

तेरा सलोना रूप निहारूं, नैनों के रस्ते दिल में उतारूं
चंदा...........

सजदे सौ–सौ बार करूं मैं, जीभर कर तुझे प्यारू करूं मैं
चंदा............

भजन–45

ओ मेरे प्रेम पुजारी, ओ मेरे कष्पण मुरारी
तूने जीवन संवारी दिया प्रेम दान
तुझपे कुर्बान, मेरी जान–2

नूरानी नूर बांगपन जो तुझमें है कहीं नहीं
दिलों जीतने का फन जो तुझमें है कहीं नहीं
मैं तेरे–तेरे प्रेम में पा गया दो जहाँ
ओ मेरे बांके बिहारी जाऊँ मै बलिहारी
दिया आत्म ज्ञान तुझपे कुर्बान...........

सत्गुरू मेरा सूरमा करे षब्द की चोट
मारे गोला प्रेम का हरे मरम की खोट
जीते जी–2 मै मर गया आषिक जां फिदा
ओ मेरे मोहन मुरारी गोवर्धन गिरधारी
दिया प्रेम दान.........

आत्मा की मधुर वंशी की तान जो तूने छेड़ दी
तो धड़कनों में आज मधुर तान घोल दे
ओ मैने–मैने खुदी दे के पाया बेखुदी का जहाँ
आत्मा की मधुर वंशी की तान जो तूने छेड़ दी

तो धड़कनों में आज मधुर तान घोल दे
ओ मैने–मैने खुदी दे के पाया बेखुदी का जहाँ
मेरे शाहों के शाह, मेरे दिल के मसीहा
दिया अभय दान तुझपे कुर्बान..........

भजन–46

ओ गीता वाले सांवरे, ओ भोले भाले सांवरे
हृदय में ज्ञान की मुरलिया बजा
कामना के कौरवों ने ऊधम मचाया है
सारा ही शरीर कुरूक्षेत्र बनाया है
पापों की सेना मुझे रही है सता। ओ....

सब दुर्योधन के साथी भी अनेक हैं
काम क्रोध शकुनि दुःषासन सभी एक है
कैसे मै मारूं इन्हें ये तो बता । ओ....

जिन्दगी है रथ तो भूमि ये जहान है
मेरे इस रथ का तो तू ही रथवान है
कर्मों के घोड़े को तू चाबुक लगा आ..........

मुझे अज्ञानता ने मारग भुलाया है
तभी दुखी आज श्यामा तेरे दर आया है
देके दिव्य ज्योति मुझे रास्ता दिखा आ

भजन – 47

ओ मेरे सत्गुरू साई कृपा अपार तेरी पाई
तूने भूले को राह दिखाई

भटक रहे थे जन्म मरण के चक्कर में
जाने अन्जाने बंघे कर्म के बधंन में
तुमने अज्ञान का पर्दा हटाया
ज्ञान सुना के हमें जाग्रत बनाया
कैसे करू मै शुकिया शब्द नहीं ढूंढ पाई
तूने भूले....

देह और आत्मा का भेंद बताया
आत्मा में परमात्मा दिखाया
मन के अधेरे में ज्योति जलाई
जिसकी ज्योति से हो गई रोषन खुदाई
खुद की खुदी को मिपके षरण में तेरी आई
तूने भूले.........

भजन–48

ओ प्रेमियों गुरू बिना भी क्या जीना
फूलां सितारों में, जग की बहारों में
गुरू सां प्यारा कोई ना

जन्म जन्म के सौगन्धो को क्षण में भंगुर होता देखा
धरती के टुकेड़ो के पीछे अपनो को ही लड़ाते
श्वासो की लड़ियाँ जाने कहाँ टूटे
राज ये जाने कोई ना गुरू सां प्यारा कोई ना

गुरू की वाणी सुन के प्यारे
आज ह्रदय का दीप जला
मन की मुरलिया बाजे में से
होठों को ये गीत मिला है
दिल मेरा नाचे सुर मेरा गाँए
गुरू सा प्यारा कोई ना गुरू

गुरू जी बोले मन मंदिर में
साई का तू दर्शन कर ले
वो प्रभु तुझसे दूर नहीं ह

उसका तू अभिनंदन कर ले
गुरू है क्यों प्यारा जाने न संसार
और सहारा कोई ना ।

भजन–49

ओ प्यारे प्रभु के गुण गाले
तेरीनैया पार लगे बोल हरि ओइम
तू दिल में प्रभु को ही ध्याले
तेरे सोमे भाग्य जगे बोल हरि ओइम

यू ना अकड कर चला करो
कुछ तो प्रभु से डरा करो
क्या लाए क्या ले जाओगे
ख्याल कभी तो किया करो
है चार निदो की तेरी जिन्दगानी
एक दिन तु यहॉं से चले

जग में क्यू भरमाता ही
प्रभु गुण क्यू नहीं गाता ही
ननुष्य तन ये मिला अमोलक
व्यर्थ इसे क्यूं गवाता ही
कुछ सोच समझ ले ए प्राणी

भजन–50

ओम अक्षर बोल, मन में अमृत घोल
मूदं ले आखें बाहर तू भीतर ऑखे खोल
उठ माया के सपने से, ज्ञान की ऑखे खोल

तू ही नहीं तेरा सब कुछ क्या
तू ही नही तेरा दुख सुख क्या
इन्द्रजाल ही ये संसार
सत्य अब तेरा प्यार ही प्यार

ज्ञान मिला अनमोल ओम
करता रहे तू यत्न ऐसा
ळो जाए मन ये मगन ऐसा
एक प्रभु का कर ले संग
प्रसानन्द में डोल ओम

भजन–51

ओ गीता वाले सांवरे, ओ भोले भाले सांवरे
हदय में ज्ञान की मुरलिया बजा

कामना के कौरवो ने ऊधम मचाया है
सारा ही षरीर कुरूक्षेत्रा बनाया है
पापो की सेना मुझे रही ही सता,

जिन्दगी ही रथ तो भूमि में जहान है
मेंरे इस रथ का तो तू ही रथवान है
कर्मो के घोडे को तू चाबुक लगा

मन दुर्योधन के साथी भी अनेक है
काम कोध षकुनि दुषासन सभी एक है
कैसे में आऊ इन्हें ये तो बता

मुझे अज्ञानता ने मार्ग भुलाया है
तभी दुखी आज ष्याम तेरे दर आया है
देके दिव्य ज्योति मुझे रास्ता बना ।

अं

भजन–52

अंत समय में है जगदीश मुझको
तेरी ही सुमिरन तेरा ही ध्यान हो

लवलीन हो चित्त वृत्ति ये मेरी
जब तक श्वांसो में प्राण और अपान हो।

योगी के सदृश लगाऊं समाधि
ओंकार अक्षर का वाचार्थ ज्ञान हो।

ना लोभ हो ना मोह हो, ना ममता किसी से
ना तन में हो पीडा ना कोई दुख का भाव हो।

क

भजन–53

किसी गिरते को उठाये तो कोई बात बने
किसी रोते को हंसाये तो कोई बात बन।

प्यार अपनों से तो हर कोई निभा लेता है
प्यार गैरों से निभायें तो कोई बात बने–2।

कांटे राहों में बिछाना तो बड़ी बात नहीं
किसी को मंजिल पर पहुँचाये तो कोई बात बने।

हंस के खुषियों में तो हो जाती है दुनिया षामिल
काम दुख दर्द में आये तो कोई बात बन।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई बना है इंसा
आदमी बनके दिखाये तो कोई बात बन।

काम अल्लाह को रिझाना है मुबारक लेकिन
उसके बंदों को रिझाये तो कोई बात बन।

प्यार सबसे करो तालीम मेरे सत्गुरू की
हम अमल में इसे लायें तो कोई बात बने।

भजन–54

कहता हूँ कहे जात हूँ कहूँ बजाये ढोल
श्वांस खाली जात है तीन लोक का मोल

रे मन हरि का भजन कर जब तक सुखी शरीर
वृद्ध भये पछतायेगा हाड़–हाड़ में पीर

रे मन भला ना कर सके तो बुरे पंथ भी ना जायें
अमश्त फल चाखे नही, विस फल काहे खायें

लेने को हरि का नाम है देने का कछुदान
तारन को है नम्रता डूबन को अभिमान

सहज मिलें सो दूध है सम भांग मिले सो पानी
कह कबीर वह तो रक सम जामें खींचातानी

चार वेद छः शास्त्र में बात मिली है दोय
दुख दीन्हे दुख होत है सुख दीन्हे सुखहोय

कबिरा सब जग निर्धना धनवन्ता नही कोय
धनवन्ता सो जानिये जामें राम धन होय

ये तन जिसकी खेलरी, गुरू अमष्त की खान
सिर दीये जो गुरू मिले तो भी सस्ता जान।

भजन–55

कैसे मन से करता है तू इस जग का व्यवहार,
इस चित होकर कभी ना सोचा,
कौन है करने हारा

क्यों विरथा गर्व जताए
पाथर को तूने राम है जाना

जीवत राम ना जाना
रमता राम सब घट भीतर ।

उसको नही पहचाना क्यों भेदभाव ना मिटाए
सत्गुरू शरण पड़े बिन कोई भेद ना उसका पाया

कण कण में कर आत्म दर्शन रमा सभी हर्शाया,
तू आनन्द में ही समाए ।

भजन–56

कभी न बिसरूं राम को चाहे दुनिया बिसरी जाये
सब अर्पण उस नाथ को भव सागर पार जो लग जाये

वो ही सांचा मीत है, वो ही पालनहारा
इस जग में कुछ है नही झूठा सब व्यवहार
चिर संगी मेरा सत्गुरू प्यारा, वो ही प्रीत जगायें चाहें

सहज मजूं हरि नाम को तजूं जगत का नेह
अपना कोई है नहीं अपनी सगी ना देह
सब कुछ दीन्हा सत्गुरू मेरे अंतर अलख जगाये

तू ही दाता तू ही खिवैया और कहीं क्यों जाऊँ
तेरी शरण है मथुरा कांशी, तुझको शीश नवाऊँ
तेरी दर्शन करके भगवन, जन्म मरण कट जाये।

भजन–57

करती रहूँ गुणगान मुझे दो ऐसा वरदान
तेरा नाम ही लेते – लेते इस तन से निकले प्राण

तेरी दया से मेरे भगवन मैने ये नर तन पाया
तेरी सेवा में बाधाये डाले जग की मोह माया
इसलिए अर्ज करती हूँ, हो सके तो देना ध्यान

राधा मीरा नरसी जैसी दुख सहने की षक्ति दो
विचलित ना हो पथ से भगवन, मुझको ऐसी भक्ति दो
तेरी सेवा में ही बीते, इस जीवन की सुबह शाम

ना जाने कब कौन घड़ी तेरा बुलावा आ जाये
मेरे मन की इच्छा मेरे मन ही मन में रह जायें
मेरी इच्छा पूरी करना, मेरे प्रियतम कष्पा निधान।

भजन–58

कहाँ जा रहा है तू ऐ जाने वाले
अंधेरा है मन का दीया जलाले

ये जीवन सफर एक आधा सफर है
बहकना है मुमकिन भटकने का डर है
सम्भलता नहीं दिल किसी के सम्भाले

जो ठोकर न खाये नही जीत उसकी
जो गिर के सम्भल जाये है जीत उसकी
निशा मंजिलों के ये पैरों के छाले

कभी ये भी सोचा कि मंजिल कहाँ है
बड़े से जहाँ में तेरा घर कहाँ है
जो बांधे थे बंधन वो क्यों तोड़ डाले।

भजन–59

क्यूँ सोया तू गफलत का मारा
जाग रे मन जाग रे

हरि सुमिरे सो हंस कहावे कामी कोधी काग रे
तन का चाला मया रे पुराना लगा दाग ये दाग रे

की जागे कोई जोगी भोगी की जागे कोई चोर रे
की जागे कोई संत प्यारा लगी राम से प्रीत रे

ऐसी जागन जाग पिया रे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे
ध्रुव को दीन्ही अचला पंदेवी प्रहलाद पाया राज रे

मन है मुसाफिर और तन है सराया
क्यूं कीन्हा अनुराग रे
रैन बसेरा कर ले डोरा, उठ चलना प्रभा तरे।

भजन–60

किसी और की जरूरत ना हुई है ना है ना होगी
मुझे तेरे दर से फुर्सत ना हुई है ना है ना होगी।

तेरा दर ही मेरा मंदिर, तेरा दर ही मेरी पूजा
प्रभु इससे सच्ची पूजा ना हुई ना है ना होगी ।

चरणों में आया प्रेमी भक्ति से झोंली भर दो
किसी ओर से ये आषा ना हुई है ना है ना होगी ।

तेरा प्रीत पावन पाई ह्रदय कमल खिला है
किसी और से ये प्रीति ना हुई है ना है ना होगी ।

यूं दर तो देखें लाखों तुझसा ना पाया काई
तेरे दर से कोई तुलना ना हुई है ना है ना होगी ।

भजन–61

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार
किसी का दर्द ले सको तो लो उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार
जीना इसी का नाम है

माना अपनी जेब से फकीर है पर दिल के यारों हम तो
अमीर है, मिटे जो प्यार के लिए है जो जिन्दगी
जले जो बहार के लिए है जिन्दगी
किसी को हो ना हो हमें है एतबार,
जीना इसी का नाम है।

रिश्ता दिल से दिल के एतबांर का
जिन्दा है हमीं से नाम प्यार का
कि मर के भी किसी को याद आयेंगें
किसी के आंसुओं में मुस्कुरायेगें

कहेगा फूल हर कली से बार–बार।
जीना इसी का नाम है।

भजन–62

कोई जब राह न पाये गुरूद्वारे आये
गुरू ही राह दिखायें, गुरू ईश्वर अवतार

गुरू मुख से ज्ञान मिला, जीने का अंदाज मिला
ज्ञान की डगर पर है तेरा उद्धार
गुरू ईश्वर अवतार

धन्य हुये गुरू पावन मिला, सत्गुरू का सत्संग मिला
गुरू ही दिखाये प्रभु का द्वार

पूजा नही प्यार करो, सत्गुरू में विश्वास धरो
गुरू ही लगाये बेड़ा उस पार

भजन–63

कैसे झूमें ना हम दिलो जान से, खुदा पाया है हमने
ईमान से

पाके खुदा की एक नजर सं, जीवन चमका जैसे सूरज हो
पहुँच – पहुँच जीवन के लक्ष्य निषान पे

उसकी नजर में ऐसी कषिष है संषय मरम सब भाग
चले है जैसे तीर चले हो कमान से

रहमतों का तू है भंडारा गल्ती किन्तु हो ना दुबारा
उसे बनायेगें तेरे ज्ञान से

प्यारे सत्गुरू ऐसे हमारे बंधन काटे गिन–गिन सारे
देखी करूणा करूणा निधान की।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भजन–64

किस विधि करूं बखान प्रभु तेरे कोटि–कोटि उपकार
कल तक थी खाली झोली और आज भरे भंडार

अजब तेरी कारीगरी ये करतार
समझ ना आये माया तेरी बदले रंग हजार

ओ गीता भगवन तूने ये दिल प्रेम से है भर ड़ाला
तेरी दया ने पल में दादा क्या से क्या कर ड़ाला–2

तू सबसे बड़ा है दानी तेरी महिमा अब है जानी
दिल हो गया बाग बहार । अजब तेरी ......

ये सच का परिवार हमारा कायम दायम रखना–2
इस बगिया में सदा खुषी के फूल खिलाये रखना–2

चाहे राजा हो या भिखारी तूने विपदा सबकी टारी
अरे चाह रे वाह पालनहार । अजब तेरी.....

ओ गीता भगवन तेरी मेहर ने बदल जीवन को डाला
दूर हुआ जन्मों से पड़ा अज्ञान अंधेरा काला

कमी भूलूं ना तेरी मेहरबानी
ये कसमहमने ठानी है
तेरा लख–लख उपकार है

समझ में आई अब महिमा तेरी
बेड़ा भी हो गया पार।

भजन–65

करता के हाथ हजार तू काहे करने चला
होगा वही जो रचा मनमानी काहे करने चला

सन्ध्या ने है रंग बिखेरे, रात अंधेरी झिलमिल तारे
सारी सृष्टि में उसकी कला तू काहे रंगने चला

माटी रूँधी तन को रचाया
प्राण है डाले जीव है बनाया
घर जोड़े और तोड़े वही
तू काहे गढ़ने चला

दान है सारा पक है दाता
पंख पखेरू सबको खिलाता
नहीं अब तक किसी को भूला
तू काहे देने चला

कठपुतली का खेल है सारा
बांधी डोरी नाच नचाता
चले तेरी न मेरी यहां तू काहे सोचे भला।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–66

कोई समझे भक्त सुजान
राम नित किरपा करते है–2

कभी कोमल हाथ प्रभु का
कभी बोझल हाथ प्रभु का
सब भांति करें कल्याण
वो पग–पग रचा करते है

कभी ज्ञान प्रभु जी देते
कभी बुद्धि ही हर लेते
कभी रखकर गूढ़ अज्ञान
वो खुद पग सीधा करते हैं

कभी धन सत्ता बरसाते
कभी दीनता दे बरसाते
कभी सुख दे स्वर्ग समान
कभी दुख दुविधा देते है

है रूप अनेक कृपा के
कभी जप कभी हार कराते
प्रभु का निर्दोष विधान देखो
कब क्या–क्या करते है।

भजन–67

क्यों दिल को फंसाये तू ये देष है बेगाना
सपने की है सब रचना, धोखा ना कहीं खाना

जीवन है तेरा जैसे एक बुलबुला पानी का
नहीं कुछ भी भरोसा है तेरी जिन्दगानी का
कोई ना समझ पाए कुदरत का ये अफसाना

नश्वर है अरे प्राणी सारे सामान यहाँ
आया है फकत तू तो, बनके मेहमान यहां
बेशक प्रयोग में ला पर दिल नही भटकाना

जो रिश्ते बनाए है तुझे अन्त तक रूलायेंगे
पड़े संकट जब भी कोई वो नजरे चुरायेंगे
हरि नाम ने ही आखिर है काम तेरे आना

यहां काल और माया ने कैसा खेल रचाया है
गुरू कृपा बिना प्राणी कोई छूट ना पाया है
माया जाल कटाने को गुरू षरण में है आना।

भजन – 68

कितने प्यारे हो कितने शीतल हो
न्यारे न्यारे हो ओ सत्गुरू में सत्गुरू
ये जो दुनिया हैये वन है कॉटो का
तू फूलवारी है ओ सत्गुरू मेंरे सत्गुरू।

मौज में तेरे चलती रहूँ मै
सत्गुरू मुझको ऐसा बना दो
अपने प्रेम के रंग में में मेरा
मनुष्य मेरा रंग दो
तेरे साये में मेरा साया हो ये
पल भर में जुदा न हो ।

तुझसे ही बस नेह लगाऊँ
श्वांस–श्वांस में तुझको पाऊँ
हरदम तेरे गीत में गाऊँ
सुध – बुध भूल मै जाऊँ
मेरे जीवन की मेरे सत्गुरू जी
तुम ही मन्जिल हो

भजन – 69

कोई लाख करे चतुराई
कर्म का लेख मिटें ना रे भाई
जरा समझो इसकी सच्चाई कर्म का

इस दुनिया में भाग्य के आगे
चले ना कोई उपाय
कागज हो तो हर कोई बाचे
करम ना बाचा जाए
इक दिन इसी किस्मत के कारण
वन को गए रघुराई

काहे मनुश्य धीरज खोता
काहे तू नाहक रोये
अपना सोचा कभी नहीं होता
भाग्य करे सो हो होये
चहे हो राजा चाहे भिखारी
ठोकर तभी ने यहॉं खाई ।

भजन–70

कुछ ऐसी करनी कर प्रेमी
फिर जन्म ना बारम्बार मिले
माया तो बहुत मिल जायेगी
गुरू ऐसा कहां हर बार मिले

एक–एक वस्तु से प्यार किया, किया प्यार कभी ना ईश्वर से
तू जन्म–जन्म से बिछुड़ है, अपने ही पिता परमेश्वर से
मुक्ति तेरे द्वारे बैठी है जो सत्गुरू तारनहार मिलें

क्यों भरम ने तुझको घेरा है कुछ तेरा है ना मेरा है
समान बटोरा बरसों का दुनियां एक रैन बसेरा है
तेरा क्या है तू क्यों सोच रहा चाहे जीत मिलया हार मिला

प्रभु की करूणा तुझपे है हुई जो साथ गुरू का पायाहै
गुरू ने किरपा कर मन में तेरे ये ज्ञान का दीप जलाया है

तुझ अर्जुन को मुक्ति देने
गुरू कृष्ण का बन अवतार मिले।

भजन–71

कुछ न कुछ तो जरूर होना है
सामना आज उनसे होना है

तोड़ो फेंको रखो करो कुछ भी
दिल हमारा है या खिलौना है

उठके महफिल से मत चले जाना
तुमसे रोषन ये कोना है

जिंदगी और मौत का मतलब
तुमको पाना है तुमको खोना है

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–72

कितने ऊँचे भाग्य हमारे जो हमने सत्गुरू पाया है
जलती हुई इस दुनियां में मिली ये शीतल छाया है

भरे ये दुख ही दुख जिसमें थी ऐसी दास्तां सबकी
ला ना जब तलक ये दर परेषां जिन्दगी थी
कोई मिला है मसीहा जिसने सारा रोग मिटाया है

कोई गुणवान था निर्गुण सभी अपनाए जाते है
गुरू सागर दया का है दया बरसाए जाते है
दुनियां ने जिसको ठुकराया गुरू ने गले लगाया है

यहां बैचेन रूहों को सब्र संतोश मिलता है
जो हैं बेहोश जन्मों से उन्हें भी होष मिलता है
लें जाए वो रहमत जिसने दर पर षीष झुकाया है

कलम लिख–लिख के धरी है, जुबां गा–गा के हारी है
जमीं आकाश से ऊँची गुरू महिमा तुम्हारी है
दादा तेरी रहमत से ये ज्ञान का दीप जलाया है।

भजन–73

कितनी महिमा गांऊ कितना करूं सत्कार
एक जिहवा है मेरी तेरे गुण है बेषुमार
सब सुख देने वाले तेरा षुक है सौ–सौ बार
सौ–सौ बार लख–लख वारे ।।

तेरी रहमत इतनी औकात न भूले
जो दी है तूने सौगात न भूले
चाहे भूल जाए ये जग सारा
भूले ना कभी तेरा द्वारा

इस द्वारे पे आके मिला है हमको करार
सेवा सुमिरन सत्संग मिला संतों का परिवार।

हे पाक पवित्र ये वचन तुम्हारे
निर्मल हो जैसे गंगा के धारे
जो इन, चरणों में आता है
सब पाप मैल धूल जाता है
अगम अगोचर है तू तेरा आर न पार
निराकार भी तू है और तू ही है साकार।

कोई गाए न गाए तुझे फर्क नही पड़ता
तेरा ऊंचा रूतबा नहीं घटता बढ़ता

तू अजर अमर अविनाशी है
ये माया तेरी दासी है
संतों की सेवा करती प्यार दे बेशुमार
जो तेरा हो जाएं वो इसका हकदार

भजन–74

करो सत्संग सदा प्रभु से ही प्यार करो
कोई कुछ भी जो कहे ना कभी विचार करो
चिंता की बात नहीं हंसता यदि जमाना
अरे इसका तो ये दस्तूर ही पुराना है
प्रभु के भक्तों को बदनाम किया करते हैं ।।

वही है धन्य जो सत्संग से सुहाता है
श्रवण वा मनन में मन को सदा लगाता है
वही तो जिदंगी में परम शांति पाता है
गुरू के ज्ञान का जो पान किया करते हैं ।।

ख

भजन–75

खुद को जो मिटाया तूने
फिर हमे बनाया तूने
आज हम सबके दिल मे
तू ही तू समाया है

मंजिलों को पाया हमने तेरे इक इषारे से
डूबते हुओं को तुमने लगाया किनारे से
भूला ना सकेंगे तुमको प्यार तेरा पाया है

मिथ्या जग में मन को मोड़ा नूरानी नजारे है
जुड़ गए जो सच से अब हम सत्य के सहारे हैं
दीप जो जलाया तुमने अंधेरा मिटाया है

प्रेम का ये रंग सच्चा है, इस जहां में यूं फैले
साफ हो जाएं दिल सारे जो ये जन्मों से मैले
आज अपने दिल में ना ही षिकवा ना षिकायत है

ग

भजन–76

गीता भगवन के गुलशन की शान देखो
कैसे डाली है मुर्दों में जान देखो
वो कयामत के धनी है बेमिसाल देखो

रो तो को हंसाया एक पल छिन में
मन को भी मार भगाया जिन्होंने
ना कोई तीर तलवार उठाया हाथों में

गीता भगवन की महिमा अपरम्पार है
जिनका जीवन आदर्ष अनूठा है
भर कर जिये जगत में अमर हो गये

आये साधारण वेश में सत्गुरू बन
अकर्मी बने निश्काम कर्म किये
महात्यागी महायोगी महासंयासी थे

मेरे गीता भगवन करूणा बाले थे
वो तो प्रेम के अवतार निराले थे
मै उनके प्रेम के रंग में आज रंग गई।

भजन–77

गुरू मिल्या –2 गुरू मिल्या दिल नच है उठा–2
सुन ली है मेरी रब ने दुआ

खुशियों से तूने मेरी झोली भर दी
ऋतु ये रंग ली कुछ और कर दी
उठे दिल में उमंग जैसे लहरा दी तंरग
मिले गुरू तेरे संग हमें मिला है खुदा।

दिल दी तमन्ना अज पूरी हो गयी
आई है बहार गुल खिलेंगे कई
मिली तुझसे नजर हुआ दिल पे असर
ना रही है कसर ऐसा चढ़ा है नषा

तेरा मेरा प्यार अब और बढ़ेगा
प्यार पे नया इक रंग चढ़ेगा
तेरे दीवाने है हम हमें रब दी कसम
तूने किया है करम हमें आ गया मजा।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भजन–78

गुरू तेरे दरबार आते ही आते,
मेरे मन का सारा भ्रम मिट गया,
मुझे चाँद तारो की चाहत नहीं है,
मुझे मेरा अनमोल धन मिल गया ।

गुरू तेरे दरबार में मेरा आत्म मंथन हुआ,
जगत में था दूढाँ जिसको हृदय में ही दर्शन हुआ,
ये तेरी ही वाणी का जादू असर है,
मुझे मेरा राधे रमण मिल गया ।

अभिमान करते हैं जो कभी सर झुकाते नहीं,
प्रभु प्रेम धारा मे वो कभी भी नहाते नहीं,
मुझे आज परवाह नहीं जग की प्यारो,
मुझे मेरा गोपी किशन मिल गया ।

गुरू तेरी नूरी नजर,
करे दिल में ऐसा असर,
जन्म कितने वृथा गा,
मिला न हमें ऐसा घर

नही है नजारो की मुझको तमन्ना,
मेरा मन ही उत्सव भवन बन गया

भजन – 79

गीता भगवन तूने बदले जीवन अब तो
होने लगा है तुमसे प्यार
तेरी करूं मैं जय जयकार
देकर कुर्बानी अपने जीवन की तूने
भव से किया है सबको पार तेरी करूं

जब न मिले थे तुम तो जीवन ये बेकार था
पा न सकी भी खुषिया कितनी छाई बहार थी
लेकिन तेरे कदमो पर जब झुका दिया है सर
एक नई जिन्दगी की तब से षुरूआत हुई

पॉचो विकारो ने तो दर दर वे भरकाया था
मन माया में रम रहा अपना स्वरूप भूलाया था
तेरी जब पड़ी नजर, वचनो का हुआ असर
मन टिका है निज स्वरूप देह से हुआ बेखबर

तेरे नैनो में तो करूणा का भंडार है
तुझसे पाया हमने देवताओ का प्यार है
पर्वतो से ऊँचा है सागर से भी गहरा है
कर सके न कोई किसे ऐसा तेरा प्यार है

तेरे उपकारो को हरगिज भूला न पाएगें
एहसां किए है इतने कर्जा चुका न पाएगें
तेरे में अनमोल वचन सबको सुनाएगें हम
सबकी बने जिन्दगी ऐसा कुछ कर पाए हम ।

भजन–80

गुरू से बढ़कर दुनिया में है ना दूजा कोई और जिया
गुरू की वाणी ही छा गयी।

क्या गुर ये गुरू ने सिखाया, इस देह से मोह छुड़ाया
आत्म ज्ञान का अमष्त पिलाया, क्या गुर गुरू ने सिखाया
देह रहते हुये–2 हम खुद से थे अनजान जिया

छोड़ो मोह माया में फंसना, ये जीवन तो है इक सपना
जिसमें गुरू ही है अपना छोड़ो मोह माया में फंसना
गुरू ने जो ज्ञान दान दिया है ना उससे बड़ा कोई दान

वचन गुरू के उठाओ, रहणी में इनको लगाओ
जीवन इन्हीं से बनाओ वचन गुरू के उठाओ
ब्रहम ज्ञान से बढ़कर है ना दूजा कोई ज्ञान जिया में।

SSSSSSS

भजन–81

गुरू प्रेम के सहारे हमें मिल गये किनारे
रहमत हुई है ऐसी जो डूब में से तारे

मेरी बंदगी नही ये सत्गुरू की ये मेहर है
मरूभूमि था ये जीवन अब प्रेम का षहर है
वष्था गये वो लम्हे, जो बिन गुरू गुजारे

सुख दुख में हंसना रोना, हमको भुला है ड़ाला
जंजीर तन ने पहनी, मन की अलग है माला
अब ना मिले ये बंधन, मिले आत्मा का धारे।

गुरू वचनों पे चली तो अंधेरे सब मिटे है
बंधन जहाँ ने बांधे, तेरे ज्ञान से कटे है
तन दूर करके देखूं चहुं ओर है सितारे

कर्मों को हमने छोड़ा मर्मों का गम न खाया
अंदर से गुरू स्थित संतोश की है छाया
सजदे सिर झुकाये, खड़े हम गुरू के द्वारे

SSSSSSS

भजन–82

गुरूदेव तेरा उपवन, पाया तो खिला मेरा मन
जलते हुए इस जग में, मिला आज मुझे वंष्दावन

गुरू जब से तुमने अपना हमें मान लिया है
कण–कण में बसे राम हमने जान लिया है
दिन रात करे मेरा दिल, गुरू तेरा ही वंदन

आसक्तियों के जाल से, हम छूट गये है
आकर तेरे प्यार मे, हम भूल गये है
नहीं पास मेरे कुछ भी करूं तुमको क्या अर्पण।

मेरा उम्र का मधुमास माया बीच बह गया
ना जाने किस घड़ी में तेरा साथ मिल गया
राधा का जो मन मोहन मेरा जन्मों का मीत है।

SSSSSSS

भजन–83

गुरू को पाया तो हमको ज्ञान आया
आत्मा तू है देह है छाया
जग में रहकर भी तूने क्या पाया
झूठ में पड़कर सच को ठुकराया।

सोये सपने से जगाया था
कोध, मद, लोभ और मोह माया
सबके नैनों पर पड़ी है छाया
गुरू ने आकर ये पर्दा खिसकाया।

एक नया रूप सामने आया
ज्ञान का दीपक उसने जलाया
मैं को भूला तो गुरू षरण आया
गुरू ने जीने का रहस्य बतलाया।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन 84

गीता भगवन तेरी याद में
मन को मिलता है चैन
मधुर तुम्हारे मिलन बिना
तरसे है दिन रैन

तूने संत रूप धरके जग में लिया अवतार
दिया तूने बहमज्ञान को जीवन मुक्त किया
आज तुम्हारी याद में भर भर आए नैन

नाव पे चढकर ज्ञान की सबका किया उद्धार
तेरा निश्काम प्यार पाकर हम तो हुए है निहाल
तेरी महिमा गा रहे सन्त बंदे पुराण ।

भजन – 85

गुरू दर्शन से नूर होता है
आत्मा का सरूर होता है

मन्जिले दूर भागती है क्यों
रास्तो का कसूर होता है,

अगूलियां बेवजह नही उठती
कोई कारण जरूर होता है,

मन ये बदले तो सब बदल जाए
आदमी बेकसूर होता है,

डूब जाते है जो दीनारो पर
नियतो में फितूर होता है,

दर्दे दुनिया को गम जमाने का
गुरू भक्ति से दूर होता है ।

भजन –86

गुरू तेरी महिमा जग से न्यारी ।

गुरू मैने देखी दुनियासारी
नहीं कहीं देखी ऐसी यारी ।

गुरू तेरे ज्ञान में आके मैने
पाये अनमोल जैसे हीरे मोती ।

गुरू तूने अपना मुझको बनाया
लुटा दी मुझपे अपनी ममता सारी ।

गुरू तूने मेहनत इतनी करके
खिला दी मेरे जीवन की फुलवारी ।

गुरू तुझे अर्पण अब करूँ क्या
अमानत अब तेरी है सारी ।

गुरू तेरा प्यार मुझे जब याद आया
आ जाती मुझमें तब ही षक्ति सारी ।

भजन – 87

गुरू के प्रेम में पल पल निकलता शुकराना
मैने उसे जाना, मैने उसे माना ।

जैसी थी मैं उसने मुझे अपनाया,
ज्ञान सुना के मुझे गले से लगाया,
उससे है मेरा नजराना ।

जीवन मिली है मुझे उसके सहारे,
चलती रहूँ मै हरदम उसके इषारे,
उससे हैमेरा अफसाना ।

प्रेम बिना है जीवन कितनी अधूरी,
जिसको मिला है सत्गुरू, उसकी है पूरी,
अमर रहेगा मैखाना ।

दिल की लगी न बुझे, लगन बढती जाए,
और कोई याद न हो, वो ही याद आए,
कर दिया जिसने दीवाना ।

भजन –88

गुरू जी कैसे करूँ अदा तुम्हारा शुक्रिया
हुई है कृपा, दिया दर्शन, मेरा तनन्मन खिल उठा ।

तेरे आने से भगवान खिला में मेरा मधुबन
पवन गुनगुनाने लगी ये दास्तान
चहुँ ओर छाया खुशी का समॉं ।

मेरे तन के प्राण तुम हो, करूणानिधान तुम हो,
किसी की नहीं है तेरे जैसी शान
कर ना सकूँ मैं महिमा बखान ।

भक्तों की ये है विनती, सुनो मेरे प्यारे सत्गुरू
तुम्हें ना भूलूँ, भूलूँ ये जहॉं
तुझको ही ध्याऊँ , सुबह और षाम

भजन –89

गुरू सुमिरन में जो मन डूबा,
उसका क्या कहना ।
जो गुरू दिन देखे नहीं दूजा ,
धन्य हैं वो नैन ।

जिन ऑखो में गुरू है समाया,
वो अखियों ना देखे पराया,हमको
गुरू ने ये समझाया
समझाया, गुरू सुमिरन में,

जो ना हदय में गुरू को बसाए,
वो मन कैसे धीरज पाए,
पग पग में वो ठोकर खाए
खाए, गुरू सुमिरन में,

अन्दर बाहर से इक हो जा,
गुरू सुमिरन में ऐसा खोजा,
जन्म जन्म की मैल को खोजा,
गुरू सुमिरन में,

हीरा जनम को हम ना हारे,
पल पल तेरा नाम चितारे

सत्गुरू को इक पल,
ना बिसारे बिसारे
गुरू सुमिरन में जो मन डूबा,
उसका क्या कहना ।

भजन–90

गुरू वचनों के सिवा दुनियां में रखा क्या है
गुरू मिले भाग्य जगे, हर मुसीबत से टले
मेरा जीना, मेरा मरना गुरू वचनों का तले।

ठोकर जहाँ हमने खायी, वचनों से संभाला मुझे
प्यार से पकड़ हाथ, माया से निकाला मुझे ।

गुरू के सिवा अब तो कुछ भी नज़र मुझको आता नहीं
लाखों परेषानी आये, अब मन पछताता नहीं ।

लाखों शुक्राने गुरू के जो ऐसा ज्ञान दिया
यूं ही मर जाते माया में, ये जीवन दान दिया ।

गुरू के प्रेम बिना दुनियां में सूनापन है ।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–91

गम ना करो इस दुनियां में कांटों हार का मिला
शुक्र हर पल हमको, गुरू का आधार मिला

ग्रह नक्षत्र सितारे बादल बनकर छाते हैं
कर्मों के बीजों पर अपना जल बरसाते हैं
सुख दुख अपने कर्मों का हमको उपहार मिला।

बिखर गया हर सपना तो तुम उसका गम ना करो
सपनों जैसी दुनियां में अपनों का गम ना करो
एक हरी है जीवन में सबको साकार मिला

आशाएं मन में रखना वो कोई दोश नहीं
लेकिन बात ना बन पाए तो खोना होष नहीं
कौन यहां ऐसा है जिसको यष हर बार मिला।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–92

गुरू जोत से जोत जगाये नर रूप में आये नारायण
सांई सब को सुख पहुँचाये नर रूप में आये नारायण

गुरू करना कल्याण ही जाने जाति वर्ण, कुल, भेद न
जाने, हर भक्त को दो अपनाये नर ।

मिठे अविद्या गुरू बचनन से, आनंद अनुभव हो दर्षन से,
हर घट में अलख जगाये ।

योग क्षेम का मार उठायें, अपना सुख और चैन, लुटाये
हर जीव को ब्रहम बनायें नर ।

साधना छोड़े हाथना छोड़े झूठी कल्पना बंधन तोड़े, साई
सम रहना सिखलाये ।

षरणागत हो कुछ नही करना गुरू वाणी में जीना मरना,
हमने लक्ष्य बनाया नर ।

जो चाहोगे होने लगेगा, ध्यान भजन में लगने लगेगा,
गुरू वर को जो अपनाये ।

अनुभव वो जो सुना और देखा,, जन्म जन्म का मिट जाये
लेखा, सांई जब से गुरू अपनाये ।

भजन–93

गीता ज्ञान सुन प्यारे तू गीता ज्ञान,
सब संतो की है शान, सुनप्यारे तू गीता ज्ञान ।

दादा के अनुभव से निकला, वेदो का ये अमष्त ज्ञान
गीता की मुरली से लिकला, हरदम कर तू प्रेम का दान,
सब संतो का है ये काम सुन प्यारे ।

हरदम हदय हिलोरे लेता, सुनकर इतना प्यारा ज्ञान,
सब भक्तों ने कर दिया इस पर अपना जीवन ही कुर्बान,
सब भक्तों का हे ये काम, हर दम रह तू आनंद धाम
जीवन का है ये विश्राम ।

ऋशि मुनियों ने कठिन बताया, गुरू ने प्रेम से इसे समझाया,
चलते रहो बस सुब हो षाय, पूरे होगे सब तेरे काम,
सुन प्यारे तू गीता ज्ञान, सत्गुरू की ये मधुरिम तान ।

आज गुरू ने हमको जगाकर कर दिया जीवन ही निशकाम
हरदम अब मुख ये ही बोले, सत्गुरू के है लख उपकार,
सुन प्यारे तू गीता ज्ञान, जीवन का है ये उपहार ।

हरदम रह तू होषियार, जीवन ना लगता अब मार,
गीता श्यामह में भक्तों के है भगवान,

निराकार लेकर अवतार बनकर आया गीता ष्याम
गीता ज्ञान ।

भजन–94

गुरू की महिमा गाले, भजन ईश्वर का होगा,
घड़ी भर ध्यान लगा ले ईश्वर का दर्शन होगा।

खुद को बड़ मागी मागो, जब गुरू सत्संग मिल जाये,
वो घड़ी नर्क की जानो, सत्संग ना मन को भाये,
संत का संग बना ले, तभी भगवत मिलेगा ।

सत षास्त्र संत और सत्गुरू तीनों की महिमा गाले,
गुरूदेव दया कर देवो घट भीतर ब्रहम को पाले,
चरण रज षीष लगाले तो सोया भाग्य जगेगा ।

गुरू कष्पा बिना नही संभव उस परमेष्वर को पाना,
गुरू षरण में आकर देखो, मत भजन करो मन माना,
तू जल्दी षरण में आजा, नहीं तो पछतावा होगा ।

जब तक सत्गुरू का अनुभव तू अपना नही बना ले,
जो गुरू मुख से सुन पाया, उसे जीवन में नालाये,
तू कितना ही ध्यान लगा ले प्रभू से दूर रहेगा ।
जो हमने बोया पहले हम उसे काटने आये,

घटना तो घट रहेगी चाहे जितना भी जोर लगा ले,
गुरू से प्रेम बढ़ा ले, तो बेड़ा पार लगेगा ।

कोई दुश्मन नहीं हमारा सृष्टि का बनाने वाला,
आनंद मंगल का दाता हर घट की जानने वाला,
तू हॉ मिलाते वो बाकी खुद कर लेगा ।

सद्गुरू की महिमा भारी साधक में शोभा पावे,
सत्गुरू के बिना कर्मो में खूशबू मीठी ना आये,
ब्रहम का ज्ञान पचा ले, गुरू को माने लगेगा ।

S S S S S S S

भजन–95

गुरू चरण प्रीत मोह लागी रे ।

सोती था मैं जन्म जन्म से, गुरू शब्द से जागी रे ।

हाथ पंसारे फिरूं मतवाली, लोक लाज सब त्यागी रे ।

सोहम सोहम पूछत रागी, सोहम करत् विरागी रे ।

ना मैं रागी ना मैं विरागी, गुरू प्रेम रस पागी रे ।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–96

गीता भगवन सभी के दिलों की है धड़कन,
सभी के दिलों में समाये हुये हैं,
उनके आदर्शों से बनी सब की जीवन,
खुषबू से उनकी महका ये गुलषन ।

प्रेम में उनके गहराईयाँ थी सुध बुध खोये
आपा गंवा दे, सुध बुध आपा गंवाये हुये है ।

षमां बन के खुद को जलाया घनां होने तब परवाना है
आया फनां होने परवाने आये हुये है ।

नैनों में उनके था नूर इलाही, हदय में जिनके थी
करूणा, समाई, हदय में करूणा समाये ।

वाणी में उनके ओज था इतना मुख मंडल पर तेज था
इतना, मुख मंडल पर तेज था ।

उनके त्याग बलिदान तपस्या से,
जीते जीम रने का सबक मिला है ।

करोड़ों जन्म लेकर भी सत्गुरू,
शुकाने तेरे गा ना सकूं मै ।

भजन–97

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पायें,
बलिहारी गुरू आप की जिन गोविन्द दियो दिखाये ।

गुरू बिन कौन बताइये परमेष्वर का ज्ञान,
जिन पायो सो गुरू ते, गुरू ही को कर ध्यान ।

गुरू की महिमा है अमित को कर सके परवान,
लख चौरासी काट कर बख्शे पद निर्वाण ।

पूरन गुरू हम पाइया पूर्व जन्म की लाग,
पूरन गुरू जिसको मिले पूरन जिसके भाग ।

निष्चय जाना डूब मन मोह माया की घाट,
गुरू चरणन का बल मिला उतरा भव जल पार ।

गुरू वचन हृदय धेरे जैसे, दाम कंगाल,
आठ पहर बिसरे नही सो षिपथ निहाल ।

मनुश्य जन्म दुर्लभ है होत ना बारम्बार,
जो जल पाका भूमि गिरे बहुरि ना लागे डार ।

नींद निषानी मौत की उठ कबीरा जाग,
काम रसायन छोड़ के नाम रयायन लाग।

भजन–98

गुरू की मिली षरण तो मेरे भाग्य खुल गये,
जीवन हुआ सफल के मेरे भाग्य खुल गये ।

हर हाल में खुषी मनायेगें हम सत्गुरू के गुण गायेगें,
चाहे कुछ भी कहे संसार जीवन तुझको लुटायेगें ।
दिल गाये ये ही गजल ।

तेरी षरण जब से आया रहकर सच्चा है पाया,
अब तो रोज ही दीवाली है, सिर पर तेरा ही साया है,
दिल का खिला कमल ।

श्रोता में श्री राम बने द्वापर में घनष्याम बने,
कोई माने ना माने कलयुग में सत्गुरू बने,
तेरी महिमा अगर ।

तीर्थ बन जाता है वहाँ, तेरे चरण पड़े जहाँ,
फूल खिलते जाते है, तुम चलते हो जहाँ,
पकर तेरे दर्ष कि ।

SSSSSSS

भजन–99

गुरू तुझको पा कर के मुरझाया मन का कमल खिला
डूबती जीवन नैया को, बीच भवँरी में किनारा मिला

टूट गए सब माया के बंधन, आज कोई जंजीर नहीं
इस दिल में तेरे सिवाय गुरू और कोई तस्वीर नहीं
प्रेम ही है अब सब के लिए, शिकवा किसी से न कोई
सत्गुरू........

ज्ञान का दीप जलाकर सत्गुरू, मन का अंधेरा दूर किया
प्रेम की पावन गंगा बहाकर आत्म नषे में चूर किया
सुध बुध न रही अब मस्त किया है प्रेम का तूने जाम दिया
सत्गुरू........

जीवन बदला मन भी बदला, मुझको आत्म ज्ञान दिया
आज मुझे अपने ही अन्दर दिखा तूने भगवन दिया
अब आत्म के इस निंश्चय से ना कोई सकेगा मुझको हिल
सत्गुरू.........

भजन–100

गुरू देता है दिल से दुआंये, माया से कोई प्यार ना करें
बड़ी महंगी पड़ेगी जुदाई, माया से कोई प्यार ना करे।

माया ने तुमको पागल बनाया और कुछ ममता ने है
सताया खूब होगी तेरी जग हंसाई, कोई ना समझे

किसी को अपना झूठा निकेलगा ये मन का, सपना बात
मानो जो गुरू ने बताई

मानुस तन मिला प्रभु के हवाले पाँच विकारों से रखना बचा
केउजली चादर में लेना विदाई

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भजन–101

गीता भगवान की सुन लो कुर्बानियाँ
सुन के ऐसी बना लो जिन्दगानियाँ।

उसने सोचा कि जी के तो मरते सभी
मरके जीने की ऋुत तो फिर आती नहीं
सोच लो उसने कैसे ये काम किया
जिसके साये में बैठे है हम सभी
उसने झुक के उठाया हमें मेहरबाँ
ऐसे सत्गुरू के आगे झुके आसमां

जिसके आगे कई रूप आये हंसी
उसने मन को कभी ना डिगने दिया
हुस्न और इष्क भी जिसके सजदे में थे
ऐसे मौसम को भी उसने ठुकरा दिया
उसने भेंटै है जवानी के पल मेहरबाँ

जिसने रूक कर के भी मुड़ के देखा\ नहीं
जग को रौषन किया बनके जलता दिया
देके अपनी बलि प्रण को पूरा किया
आत्मा के विजय ध्वज को फहरा दिया
ना बुझे सच का वो जलती षमां

भजन–102

गुरू चरणों में लागी री प्रीत रे
मेरे सत्गुरू मेरे मीत रे

गुरू दिया है हमें जीवन अनोखा
खा ना सकेगें कभी दुनिया में धोखा
मोह से छूटी, ममता से छूटी, टूटी सब जंजीर

जगत के इन्ही जोड़ों से छूटे मन का मरम
अब कोई ना लूटे
सबसे प्रेम है अब मोहे प्रीत रे लागे है विपरीत रे

गुरू वचनों ने जीवन बना दी भेदभाव
की नीति भुला दो
षुकानों से भरा गया है अब मेरा संगीत रे

भजन–103

गुरू के वचन है नैया पतवार, बैठे जो इसमें लग जायें पार

गुरू के ह्रदय में पीर पराई, नहीं देखा ऐसा दूसरा कोई
हर ले जो दूसरों का दर्द हजार

राम नाम की पहन के चादर होता नहीं कोई भव सागर पार
सच्चे राम टिक जाओ

पैदा हुये जब से माया में डूबे
सबने दिखाया माया का रास्ता
गुरू ने किया अब दूर भरम।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भजन–104

गुरू तेरे वचनों में जन्नत मिली,
क्यों जाये मथुरा काशी क्यों जायें कहीं

ये मौज में रहते हम जिसके दम से
कि श्वांस लेते है हम जिसके दम से
मेरे सत्गुरू मेरे प्यार मेरे रहबर गुरू

ये आसमां से आया जमीं पर हम,
भक्तों के उद्धार की खातिर
पल में तारे वो उबारे कर्म काटे है यही

ये जीव भाव का ब्रहम से मिलना,
ये मिलन हमने देखा यहीं पर खुदी,
गंवा खुदा हो जा तो मिले मुक्ति यही

तेरे प्रेम में सीखा है जीना ये,
प्रेम बंधन टूटे कभी ना
इसी बंधन में इसी प्रेम में बीते ज़नम।

भजन–105

गीता भगवन आर्दष तेरा सकल सर्षष्टि से न्यारा
हर्शित पुलकित आज है, मन पाकर आषीश तुम्हारा

षमां जली तेरे जीवन की हमको राह दिखाई
सूरज सा हो जीवन अपना बात ये तू ने सिखाइ
मेरी ष्वांसों में धड़कन में है आभास तुम्हारा

माया की महफिल में तो देखा इतना रीनापन
तेरी दो आंखों में ही पाया हमने अपनापन
अपनी खुषियों का अब तो आधार है प्यार तुम्हारा

निश्कामी जीवन में तेरा हमको है सिखलाता
तेरी छांव को पाकर ही मन कदम बढ़ाता जाता
बढ़ते हुये इन कदमों को बस है आषीश तुम्हारा
तेरे इषारे बढ़ते जायें बस ये संकल्प हमारा।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–106

गाए जा गाए जा–3 गुरू षुक़ाने गाए जा
पाएगा पाएगा–3 मन सोचा सुख पाएगा

गुरू के बगैर कैसे दिषाहीन चल रहे थे
किसी ने नहीं जगाया अंधकार में पड़े थे
गुरू ने जो कृपा क़ीन्ही पर ब्रह्म से मिलाया
बलिहारी उस गुरू की जिस राह ये बताया

मेरे सत्गुरू का जीवन आदर्श है हमारा
बलिदान देके अपना इस बगिया को सजाया
पंचभूत से उठाके सतचित्त आनन्द बनाया
बलिहारी उस गुरू की जिस अलख ये जगाया।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–107

गुरू बिना चैन कहाँ रे, दादा बिन चैन कहाँ रे
माया छूटी ममता छूटी, ज्ञान तो मिला सत्संग कर ले

गुरू मेरे हृदय के बीच में बसो
हृदय के बीच और नैनों में बसो
गुरू ने पिलाया ज्ञान का प्याला

सारे विशयों से मन को हटा ले,
दिन रात उसी का तू ध्यान कर लें,
दर्षन की प्यास नैनों से बुझा लें ।

समय मिला है अनमोल प्यारे,
गुरू को ले पहचान प्यारे,
मन मंदिर गुरू को बसा लें ।

भजन–108

गुरू तेरा दामन ना छोड़गें हम,
चाहें जमाना करे लाखो सितम ।

माया के जाल में फँसे हम पड़े थे ,
काम कोध लोभ मोह अहं में पड़े थे ।

मंझदार में ही हम तो डूब ही जाते,
न भव पार होते न तुझको ही पोत,
तेरी नाव का जो हम सहारा ना पावे ।

तेरे रू‍प में ही अब तो खोई रहूँगी,
तेरे नाम का ही अब तो सुमिरन करूँगी,
अब तो ये जीवन है तेरे हवाले

तेरे पाक कदमों पे मैं तो चलूंगी,
तेरे पाक वचनों को मैं तो कहूँगी,
आनन्द ही आनन्द है तेरी षरण ।

भजन–109

गुरू का साथ है इतना प्यारा,
भूल गये हम ये जग सारा,
गुरू के प्रेम में हम तो,
पार हो ही गये है सत्संग में आके ।

सारी दुनिया जल रही है मेरे आग में,
गुरू ने आकर हमे बचाया, झुठे इस संसार से,
अब तो मेरा मन यही है गाता, गुरू के है षुकाने ।

गुरू का ये निशकाम प्रेम हमें टिकाता निष्चय में,
फंसना पाए हम कभी मोह ममता के बंधन में,
लगन हमारी बढ़ती जाये, गुरू के प्रेम में हम तो ।

मिला ये हमको हीरा जन्म जीवन सफल बनाने को,
गुरू ने आत्म ज्ञान दिया,
अपने लक्ष्य को पाने को,
अब तो मेरा मन यही है गाता,
गुरू के है शुक्राने ।

भजन–110

गुरू सुमिरन में जो मन डूबा,
उसका क्या कहना,
जो गुरू बिन देखे न इजा,
धन्य है वो नयना

जो हदय में गुरू न बसाये
वो मन कैसे धीरज पाए,
पग पग पर वो ठोकर खाये ।

अन्दर बाहर से एक हो जा,
गुरू सुमिरन में ऐसा खो जा,
जन्म जन्म की मैल को धो जा ।

जिन आंखो में गुरू है समाया,
वो अखियां न देखे पराया,
हमको गुरू ने ये समझाया ।

हीरा जन्म को हम न हारे
पल पल तेरा नाम चितारे,
सत्गुरू को एक पल न विसारे ।

भजन–111

गा ले तू भी गुरू का तराना,
मन रे अगर है सुख पाना,
मैं मेरी के रस्ते ना जाना,
बन जा तू भी गुरू का दीवाना ।

था मीरा ने गाया कबीर ने गाया,
गा गा कर अपना प्रभु था रिझाया,
था वैरी जमाना, दिया सबने ताना,
लबों पे था उनके बस यहीं तराना,
दुनियां की ना बातों में आना ।

खुशी ही दिया कर गमों को ही लिया कर,
अरे जीने वाले खुशी से जिया कर,
सब्र कर शुक्र कर ना दुख हो डरा कर,
ना तू पने सुखों की फिकर कर,
सीख ले तू आज हंसना हंसना ।

ये रास रचैया ये राम रमैया है,
तू इसके इशारे तू इसके सहारे,
चला जिन्दगी की तू गाड़ी ये प्यारे,
तू इक पल भी ना इसको भुलाना ।

भजन–112

गीता भगवन तेरी कुर्बानी
कैसे भुलाये तेरी मेहरबानी,

बन के फंानूस खुद ये हवाये,
करे हिफाजत जिस षमो की,
वो शमां क्या बुझे वो तो जलती रहे,
जिसे रोषन करें तेरे जैसा ज्ञानी ।

जगमगाया शफीना जब हमारा,
तूने आकर दिया खुद सहारा,
खुद ही नैया बने खुद ही मांझी बने,
खुद ही सागर का लहराता पानी ।

कैसे भूलेंगे अहसान तेरा,
काटा आवागमन का फेरा,
लोभ मोह नहीं बुढ़ापा मौत नहीं,
अहंकार ने भी हमसे घर मानी ।

भजन–113

गीता भगवन का प्यार अंग संग है,
उनका आदर्श हमारे आगे है,
कौन कौन में गीत उनका है,
हर गली में उन्हीं की चर्चा है ।

तुमसे मिलने की आस दिल में थी,
प्रभु ने ये पुकार सुन ली थी,
तुझसे मिलके है ऐसा प्यार मिला,
तेरा शुकानों दिल ये गाता है ।

ज्ञान में तेर इतनी शक्ति है,
सबका जीवभव ये भुलाता है,
जो भी तेरी शरण में आता है,
वो तो आत्म में लीन होता है ।

आपने अपना कार्य पूरा किया,
जीव का ब्रहम से मेल कर ही दिया,
अपने सच का आधार देकर के,
निराधार निर्विकार बनाया है ।

भजन–114

गीता भगवन तेरे वचनों पे चलकर,
हम आज अपनी मंजिल पर आ गये है,
तेरे जैसा रहवर जो जीवन में आया,
जीवन मुक्ति आनन्द को पा गये है ।

है लाखों में बढ़कर वचन ये तुम्हारे,
हीरे मोतियों से लगे हमको प्यारे,
इस मन को तुम्हारे वचन भा गये है,

तुम्हारी नजर से मिली ऐसी षक्ति,
कि आठों पहर हो रही अब तो भक्ति,
बड़े भाग्य ह जो ये दर पा गये है ।

जगत की बातो ने बहुत था सताया,
मानों तपती लूं ने बदन झूलसाया,
तेरी रहमतों के बादल छा गये है ।

तेरी शुकिया किस जुबां से मैं गाऊँ,
सिवा आसूंओं के क्या भेंट चढ़ाऊँ,
शमां बन के रोशन जहां कर दिया है ।

भजन–115

गीता भगवन चलं पीछे पीछे जहां,
ये ना पूछो किधर ये ना पूछो कहां,
सजदे को सत्गुरू झुक गया आसमो,
लो षुरू हो गई प्यार की दास्तां ।

बातों ही बातों में मेरे हुजूर,
जादू चलाया है तूने जरूर,
होष उडे है जीवने जी में मरा,
गर के ही जीने का मजा मिला ।

डाली गुरू ने है जंबसे नजर,
ळमको रही है ना काई खबर,
बकरों को बनाया है षेर बब्बर,
बड़े से बड़ा है ये, मेरा जादूगर ।

आओं बने हम तुम भी अमर,
काल को भी मारे उसे देखे जिधर,
जीवन ही बन के हमको रोना पड़ा,
आत्मा परमात्मा ही हंसता रहा ।

भजन–116

गीता भगवन तूने बदले जीवन,
अब तो होने लगा है तुमसे प्यार,
तेरी करूं मै जय जयकार,
देकर कुर्बानी अपने जीवन की,
तूने भव से किया है सबको पार,
तेरी करूं मै जय जयकार ।

जब ना मिले थे तुम तो जीवन ये बेकार था,
ला ना सकी थी खुषियां कितनी छाई बहार थी,
लेकिन तेरे कदमों पर जब झुका दिया है सर,
एक नई जिंदगी की तब से षुरूआत हुई ।

पांच विकारो ने तो दर दर पे भटकाया था ,
मन माया में रम गया अपना स्वरूप भुलाया था,
तेरी जब पड़ी नजर वचनों का हुआ असर,
अब टिका है निज स्वरूप देह से हुआ बेखबर ।

तेरे नैनों में तो करूणा का भण्डार है,
तुझको पाया हमने देवताओं का सा प्यार है
पर्वत से भी ऊँचा है सागर से भी गहरा है,
कर सकेंना कोई जिसे ऐसा तेरा प्यार है ।

तेरे उपकारों को, हरगिज ना भुला पाऊँगा,
अहसान किए है इतने वाजी चुका ना पाऊँगा,
तेरे ये अनमोल वचन सबको सुनायेगे हम,
सबकी वो जिंदगी ऐसा कुछ कर पाए हम ।

भजन–117

गीता भगवन ने हम भक्तों का आके किया उद्धार,
कहीं पे बरसे गुरू की ममता कही पे बरसे प्यार,
जगत से नाता टूटे, गुरू तेरा प्यार ना छूटे ।

मात पिता तुम मेरे तुम साथी संग सहारे,
तुमसे मिला है जीवन तुम हो भगवन हमारे,
कहां मिलेगी गुरू की ममता और गुरू का प्यार ।

कोई मांगे सोना और कोई रूप्या पैसा,
कोई ना भगवान को मांगे ये सब जग है कैसा,
चलते चलते इस दुनिया से, हार गया मै हार ।

माया के चक्कर में दुनिया पागल सी डोले,
थक जाएं जब चलते चलते गुरू से ऐसा बोले,
बीच भंवर में अटके भगवन कर दो बेंड़ा पार ।

भजन–118

गीता भगवन की प्रेम कहानी,
याद तेरी है अमर निशानी,

तूने सबको गले से लगाया,
तूने सबका है जीवन बनाया,
दिल में घर तूने सबके बनाया,
तुझसे पाया है राज रूहानी ।

मेरे आगे है आदर्श तुम्हारा,
देता है हमें यह इशारा,
उसी से है जीवन हमारा,
कैसे भूलूं तेरी मेहरबानी ।

याद तेरे है हमको फंसाने,
किए लाखो को तूने दीवाने,
तुझसे पाएं है सच के खजाने,
सदा लब पे तेरी कुर्बानी ।

भजन–119

गीता भगवन के मिलने से, जीवन ही संवर गई,
राग द्वेश नहीं किसी से अब चाह नहीं कोई ।

दादा से लिया ज्ञान मानो जोत से जोत जली,
तेरे त्याग ओर कुर्बानी की चर्चा है गली गली,
तनम न धन का देकर दान किया जग का तूने कल्याण,
इक इक में जगाई तूने जो शक्ति थी सोई ।

कहते है डैडी जिन्हें हम वह श्याम सलोने है,
निशादिन लुटाते ज्ञान के भण्डार अनोखे है,
करूणामयी मातो तुलसी जो ज्ञान की मूरत है,
ऐसे सत्गुरू जो पावे बड़भागी है सोई ।

इस प्रेम दीवानी मीरा जो गिरधर के गुण गाएं,
ये मीरा जग के उद्धार को गीता भगवन के संग आये,
नारायनी भगवन संग शांत स्वरूप शांता है,
फिर क्यों मंदिर मस्जिद जाकर ढूढ़े कोई ।

ब्रहमलोक में देके शरण उपकार किया है,
छोड़ेगें दर ना ये तेरा इकरार किया है,

कैसे शुक्राने गाऊँ शब्द मिलते ही नहीं,
शुक्रानो के आसूं शब्द मिलते ही नही,
शुक्रानो के आसू आंखो तेरे चरणो में खोई ।

भजन–120

गीता भगवन सबके दिलों की धड़कन
सभी के दिलों में समाए हुए है
अके आदर्शों से बनी सबका जीवन
खुशबु से उनके महका ये गुलषन

प्रेम में अके गहराईया थी
सुध बुध खोए आपा गंवाय
सुध बुध आपा गंवाये हुए है

शमां बनके खुद को जलाना
फनाँ होने तब परवाना है आया
फनाँ होने परवाने आए हुए है

नैनों में उनके था नूर इलाही
ह्दय में जिनके थी करूणा समाई
ह्दय में करूणा समाए हुए है

वाणी में उनकी ओज था जितना
मुखमण्डल पर तेज था उतना
मुख मण्डल पर तेज था उतना

उनके त्याग बलिदान तपस्या से
जीते जी मरने का सबक मिला है
करोड़ों जन्म लेकर भी सत्गुरू
शुक्राने तेरे गा ना सकूं मैं ।

भजन–121

गीता भगवन को करते नमन
जिन्होनें बनाये करोड़ो जीवन

हो जब से मै आई इस सत्संग में भूली पिछला जन्म
जग को भुला के सच को, पाके हुई मै तो मगन
तेरे वचनों को जीवन में लगाया मिटा जन्म मरण

हो दिल से मै गाऊं तेरा शुकाना कबूल करना
हो जी हो तुम्हीं ने संवारा है मेरा जीवन
अब सम्भाल करना
अपना बनाया गले से लगाया, मिटाया अहम

हो गुरू भगवन ने शेर बनाया, सिखाया है जीना
नम्रता सिखाई आत्मा में टिकाया, सिखाया है हंसना
जीने की कला गुरू ने सिखाई
पल पल मरते थे हम।

भजन–122

गाऊंगा गीत तेरे सांझ सवेरे
गीता भगवान पदार्च हों पे तेरे
हरदम में चलूंगा

नादान था अंजान था
जीव माना खुद को ये हो गई खता
तुम जो मिले ज्ञान दीप जले
आत्मा का मुझे मिला है पता
मेरे राम गीता श्याम तुझको बार–बार
सजदे मैं करूंगा

गीत सुनाया गीता का जब
जन्म मरण दुख दूर हुआ
आवागमन का बंधन टूटा
आत्म नशे में चूर हुआ
मेरे राम गीता श्याम तुझको बार–बार
प्रणाम में करूंगा

निष्काम प्यार किया तूने सबको
करूणा की मूरत है तेरी
चीर के देखे दिल कोई तो

इस दिल में सूरत है तेरी
मेरे राम गीता श्याम तुझको बार–बार नमस्कार मै करूंगा

तुझसे रोशन चांद सितारें बागों में आती है बहार
तन वाणी की श्वांस की तारे, शुक्राने गाती है तुम्हारी
मेरे राम गीता श्याम तेरी ही जय जयकार मैं करूंगा।

भजन–123

गुरू जी म्हारो भाग जाग्यो रे
मोको लाग्यों रे लगनिया, म्हारों भाग जाग्यो रे

गली–गली हरि चर्चा होवे, जानो सत्गुरू आग्यो रे
मुक्ति का दरवाजा खुल गया कलियुग भाग्यो रे

दूर–दूर से संत पधारया वारो मेलो लाग्यो रे
मरूभूमि पर इमरत बरसे आनन्द छाग्यो रे

भूले भटके जीव जन्तु जो इस अॅवसर पर आग्यो रे
तीरथ सारा कर लीन्हा वो, गंगा नहाग्यो रे

ऐसो अवसर बार–बार अब नही मिले लो आग्यो रे
धरमराज ऊपर स्यू आकर ढ़ोल बजाग्यो रे

भजन–124

गर हो उसकी मर्जी,
जो पड़ जाए झोलो में वो,
लेकर तू मुस्काता चल ।

सोच ना कुछ भी कर ना कुछ भी,
तू वो फकत् है खिलाड़ी,
समझ ना खुद को मालिक अपना ।

तू है खिलौना अनाड़ी,
जो तू पाले उसके हुक्म को
भूल के गम तू हंसता चल ।

च

भजन–125

चंचल मन जब स्थिर बन जाये
प्रगटे सुमुन सुगन्ध, मिले,
तब जीवन में आनन्द

सबसे मैत्री का अनुभव हो
वैर विरोध नहीं सम्भव हो
कटे स्वार्थ के सम्बन्ध मिले मिले........

गुण का ग्राहक में बन जाऊँ
ईर्ष्या का विष में दूर भगाऊँ
उगे शान्ति का चन्द्र, मिले तब........

सबके सुख दुख को पहचानूँ
आत्म समान सभी को मानूं
हो न घृणा की गंध मिले.............

सुख में समता दुख में समता
हर क्षण में, हर पल में समता
दूर हटे सब द्वन्द मिले.........

संयम का जो पथ है पाया
उसमें हो मंगल की छायारि चरण आनन्द मिले...

किसी से कह न पाऊगीं
निगाहे हाले दिन उनको बता देना वो जब आये ।

भजन–126

चिन्ताएं छोड़ो सारी सपने ना देखो कल के
पूरण गुरू मिला है रहो क्यों ना हल्के–2

संसार के भंवर में अब तो नहीं है फंसना
हालात आए जैसे हरदम हमें है हंसना
सच की डगर कठिन है चलना सम्भल–2 के

डोरी प्रभु से जोड़ो नाता जगत से तोड़ो
कसके लगाम अपनी पांचों विकार छोड़ो
रख देंगे सत्गुरू जीम न को तेरे मसल के

श्रद्धा विष्वास लेकर सत्गुरू षरण में आना
ये प्यार जो किया है तो अंत तक निभाना
मंजिल को पाओगे तुम मन को रखो मसल के

दृष्टा बनो जगत के पर मुख से कुछ ना कहना
सच्चाईयों के पथ पर आगे ही बढ़ते रहना
जीवन नया मिलेगा, सतगुरू शरण में आके

निज रूप को पहचानों अज्ञान को भी जानों
देहाभिमान तजकर, भगवान खुद को जानो
आनन्द होगा तेरा, निश्चय को पक्का करके।।

भजन–127

चित्त ऐसा तृप्त हुआ है
लोक वासना का मेरा हर सपना ध्वस्त हुआ है

फंसे हुए थे इतने इस संसार की मोह माया में
शांति मिली भगवन की शीतल, चरणों की छाया में
सत्गुरू मिले तो अब मुक्ति का बन्दोबस्त हुआ है

सोते–सोते एक जन्म क्या काल अनंत बिताए
ऐसे थे अंजान बने कोई आकर हमें जगाए
सत्गुरू मिले सजगता आई चेतन चुस्त हुआ है

खोए–2 से फिरते थे संषय की गलियों में
मृगतृष्णा से प्यासे तड़फ रहे थे मरूथलियों में
सतगुरू मिले ज्ञान रस पीकर मन मदमस्त हुआ है

हर्ष शोक नहीं त्याग गहन कुछ भी अब चाह नहीं है
बैठे है भगवन के संग जग की परवाह नही है
अब चेतन्य सकल कर्मों में दिल मेरा मुक्त हुआ है।।

भजन–128

चदरिया झीनी रे झीनी
ते राम नाम रस बीनी

अश्ट कमल का चरखा बनाया
पांच तत्व की पूनी
नव दस मास बनन में लागे
मूरख मेली कीन्ही।।

जब मोरी चादर बुनकर आई
रंगरेज को दीन्ही
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने
लालोलाल कर दीन्ही।।

चादर ओढ़ शंका मत करियो
दो दिन तुमको दीन्ही
मूरख लोग भेद नही जाने
दिन–2 मेली कीन्ही।।

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी
सुखदेव ने निर्मल कीन्ही
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी,
ज्यों की त्यों घर दीन्ही।।

छ

भजन 129

छुपा लो यूँ दिल में प्यार मेरा,
कि जैसे मन्दिर में लौ दिए की,

तुम अपने चरणों में रख लो मुझको
तुम्हारे चरणों का फूल हूँ मैं,
मैं सिर झुकाए खडी हूँ प्रीतम
कि जैसे मन्दिर में लौ दिए की ।

ये सच है जीना था पाप तुम बिन
ये पाप मैने किया है अब तक
मगर है मन में छवि तुम्हारी
कि जैसे मन्दिर में लो दिए की ।

फिर आग विरह की मत लगाना
कि जल के में राख हो चुकी हूँ
ये राख माथे पे मैने रख ली
कि जैसे मन्दिर में लौ दिए की ।

भजन –130

छोड़कर सब आ गए हम ऐ प्रभु तेरे लिए
दिल दिया है, जान भी देगे सतगुरू तेरे लिए
गुरू ज्ञान प्रेम वरदान
देते दान प्रेम का दान ।

इतनी करूणा है गुरू में, इतने वो त्यागी हुए
इतना अर्पण कर चुके हैं तेरे और मेंरे लिए
दुख को लेकर सुख को देते
ऐसे मानूश तेरे लिए

जनमों से भटकेहुए थे, गुरू ने बॉहे थाम ली
थे धट में ही मेंरे, मैने अब पहचान ली
कितना आन्नद हो रहा है
ऐ गुरू तेरे लिए ।

चल दिए जिस राह पर अब लौटना संभव नहीं
एक मन प्रभु को दिया है, दूसरा अब है नहीं,
लुट जाए सर्वस्य मेरा, गम नहीं गुरू के लिए ।

भजन–131

छुआं मांग सबकी दुआ लीजिए,
छुआ से ही जीवन बना लीजिए,

अगर दिल किसी का हमसे है टूटा,
हमारी वजह से हो अगर कोई रूठा ।
तो प्रेम से उसको मना लीजिए ।

जो करते है हरपल किसी की बुराई
बदले में उसकी करके भलाई
बुराई से उनको बचा भलाई ।

देखे गर कमी तो अपने में देखे
किसी की कमी को ना सपने में देखे
गुरू की बाते दिल में बसा लीजिए ।

ज

भजन–132

जरा सोच ले क्या किया, क्या खोया क्या पाया
जग से जहाँ से आया, प्रभु को भुला दिया
लाया था साथ जो भी उसको गंवा दिया है
दुनियां में आके बंदें दिल पाप से लगाया जरा.........

माया में फंस गया तू सत्गुरू शरण ना आया
वादा किया था जो भी उसको भी ना निभाया
जब नींद से उठा तो कुछ भी ना पास पाया

पहल भी ये पाक मनुष्य जन्म मिला है
दूजी है कृपा सत्संग जो पुण्य से मिलाया
नहीं ध्यान ज्ञान पूजा विषयों में मन लगाया

मार्ग दिखाये सत्गुरू चलना बड़ा कठिन है
चलता मगर मै जब भी आता आंनद क्यों है
गया जब भी तेरे दर से तो कहीं भी चैन ना पाया जरा....

अब भी समय है बंदे गर तूने कुछ है पाना
मिलता सत्गुरू से ये ज्ञान का खजाना
वो ही है कि तेरा ये जग तो है पराया।।

भजन –133

जमी चल रही आसमॉ चल रहा है,
ये किसके इषारे जहॉ चल रहा है ।

चली जा रही जमाने की नैया,
समझ में ना आए कौन है खिवैया,
मगर रात दिन कारवॉ चल रहा है

ये हसॅना ये रोना, ये आषा निराषा
समझ में ना आए क्या है तमाषा,
न जाने ये चक्कर कहॉ चल रहा है ।

भटकते तो देखें हजारों सयाने,
मगर राज कुदरत कान माने,
तो फिर किसलिए कारवां चल रहा है

अजब है ये महफिल, अजब दास्तॉ है,
न मंजिल है कोई, न कोई निषां है
ये सब सिलसिला बेनिषॉ चल रहा है ।

भजन –134

जिन्दगी
दो दिन का जग मेला

एक डाल पर दो पक्षी थे
एक गुरू एक चेला
गुरू की करनी गुरू भरेगा
चेले की करनी चेला

जब एक तेल दिए होल
जग मग जग मग डोला
मिट गया तेल तो बुझ गई बाती
ये जग ऐसा होला

कहत कबीर सुनो भई साधो
ये जग ही तो निराला
हो इस जग का जो भेद लगाये
वही गुरू में चेला

भजन–135

जो इक पल में राय मिला दे करे ना आना कानी
व्ही है ब्रह्म ज्ञानी जिनसे मिलकर पूरी हो जाये
अपनी राम कहानी...............

ज्ञानी ढूढ़ा था राजा जनक ने, उन्हें ज्ञान हुआ था एक पल
गीत हुई अपटावक्र की हारे सब अभिमानी

जैसे अर्जुन को रण के मैदान में ज्ञान दिया था कृष्ण भगवान
ने रूप विराट दिखाकर के हर लिया मोह फानी वोही

मीरा राण की पटरानी, गुरू रैदास मिले ब्रहम ज्ञानी
देख के कण कण में अविनाषी दूर हुई हैरानी वोही

जायेगा जब जहाँ से कुछ भी ना साथ होगा,
दो गज कफन का टुकड़ा तेरा लिबास होगा,

झूठी है ये मोहमाया, झूठी है अपनी काया,
अपना जिन्हें बनाया, सुख कौन सा है पाया,
जीवन यूं ही गंवाया, एक दिन निराष होगा ।

दो दिन की है जवानी, एक दिन तो ढल जानी,
जीवन है बहता पानी रह जायेगी कहानी,
फिर क्या करेगा प्राणी जब खत्म श्वांस होगी ।

सुंदर ये देह पायी क रनाम की कमाई,
ये वक्त जा रहा है, कुछ तो विचारमाई,
जोड़े जा कुछ भलाई, उसका ना नाष होगा ।

भजन 136

जो शरण गुरू की इहलोक सुखी परलोक सुखी,
जिसने गुरू ज्ञान को पचाया सुखी परलोक सुखी,

रामायण में शिवजी कहते, भागवत् में शुकदेव जी कहते,
गुरू वाणी में नानक कहते, जपो संत राम इहलोक ।

चिन्ता और भय सब मिट जाये, दुर्गुज दोष सभी मिट जाये,
चमके भाग्य सितारा ।

सांसो हो नाम का सिमरन् मन में हो गुरूदेव का चिन्तन,
सांई जिसने ये अपनाया ।

ब्रहमज्ञानी साकार ब्रहम है उनको ना कोई बंधन है
सांई कार्य करे महान ।

कृपा तुम्हारी पा जायेगें जो सत्संग में आ जायेगे,
हो जायेगा भव जलपार ।

भजन 137

जग आत्मा में जाग दिल गुरू को सौप दे,
छोड़ दे माया मोह का जाल जाग आत्मा ।

गुरू को सुना तू दास्तां गुरू को दिखा दिल कि दाग,
सच की राह पर चल दिया, गुरू ने जला दिया चिराग,
सच में ही जीवन गुजार ।

ऐसा गुरू ने ज्ञान दिया, जीवन मेरा पलट दिया,
गुरू के ज्ञान को पाकर आकधन का पालिया,
शुक्र कर जीवन सुधार ।

अब भी यदि तू सो गया, संशय भरम में खो गया,
जीवन में कुछ ना पायेगा, व्यर्थ जीवन ये जायेगा,
स्वासों की पूंजी संभाल दिल ।

भजन–138

जिस रोज गुरू ने ज्ञान सुनाया,
ब्रहम ज्ञान सुनाया, आत्मा में टिकाया
मरमों को मिलकर सच है दिखाया,
प्यासे मन को अमृत पिलाया
करिश्मा तुमने किया है ओ जग के प्यारे
हमारे दादा हमारे दादा मेरे प्यारे

माया ने हमेषा हमको रूलाया
जगत ने हमेषा मोह में फंसाया
सत्गुरू ने आकर हमको बचाया
देह की दलदल से मुक्त कराया

दादा की ये वाणी सबको सुनाओ
ज्ञान की गंगा दिलों में बहाओ
अपने पराये में अब ना फंसेगे
प्रभु की रजा में राजी रहेंगे
करिश्मा तुमने किया है ओ जग के प्यारे हमारे दादा

भजन–139

जब से उसकी लगन लगी रे जीने का मजा आ गया
अरे नहीं जो किसी के उतारे, ऐसा वो नषां छा गया

मालिक से जब इष्क हुआ तो दुनिया से क्या लेना
जो दौलत हमने पाई है वो दौलत कहीं मिले ना
अब तो किसी से लगता नही दिल, दिल को वही भा गया रे

साहिब के अनदेखे घर का पता कौन बतलावे
पंडित पूरब बोले तो मुल्ला पश्चिम ले जावे
छोड़ दिया दर–दर का भटकना खुद में उसे पा लिया रे।।

भजन–140

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुख कैसे पावें
बोल ना जाने माया मदमाता मरणा चित्त ना आवें

मेरे राम राम तू संता दां संत तेरे, तेरे सेवक को भव
किछ–किछ नाहीं

जो तेरे रंग राते स्वामी, तिनका जन्म मरण दुख नासा
तेरी बख्ष ना भेटे कोई सत्गुरू का दिलासा

नाम ध्यायण सुख फल पावन आठ पहर आरा हो
तेरी षरण तेरे भरवा से पंच दुश्ट लै साधे

ज्ञान ध्यान किछ करम ना जाणा, सार ना जाणा तेरी
सब ते बड़ा सत्गुरू नानक जिन कल राखी मेरी।।

भजन–141

जीवन अधूरा था, मेरे सत्गुरू प्रेम बिना,
मेरे दिलबर ।

मैं भी हूँ तेरी सत्गुरू, दिल भी है तेरा,
तूने लिया अब मै और मेरा,
समझ ना आयेसत्गरू कैसे समझाऊँ मैं,
कह दे तो दिल को चीर के दिखाऊँ मै जीवन ।

तुम ही तुम हो दिल में समायें,
तेरे बिना कुछ नजर ना आये,
तेरे सहारे ऐ मेरे सत्गुरू जीवन नौका चलती जाये।

तेरा हो सो रह जाये मेरा सब जल जाये रे शल,
कोई भी अब चाह नहीं है, शाहो का अब शाह बनी मै ।

ज्ञान और प्रेम दो पर पक्षी के दोनो सिवाय कोई उड़ ना पाये,
ज्ञान बिना तू नजर ना आवे प्रेम दिना कोई पार ना
पावे जीवन ।

भजन –142

जिसकी नजरों गुरू से मिलती है,
वे बडे भाग्यषाली होते है ।

जिन्दगी क्या है, एक नाटक है,
हर घडी इन्तहान होते है ।

सच में जो एक बार आते है,
जिंदगी से वो ही प्यार करते है।

हर रजा में जो राजी रहते है,
गम को वो खुषी में ही बदलते है ।

मन की हलचल को जिसने जान लिया,
वह तो हर पल उमंग में रहते है ।

भजन –143

जबसे उसकी लगन लगी रे,
जीने का मजा आ गया, आ गया रे
उतरे नहीं जो किसी के अतारे,
ऐसा में नशा छा गया रे ।

मालिक के अनदेखे धर का
पता कौन बतलाए
पण्डित पूरब बोले तो मुल्ला
पष्चिम के जाए,
छोड दिया दर दर का भटकना

सहिब से जब इष्क हुआ तो
दुनिया से क्या लेना,
जो दौलत हमने पाई वो
दौलत कटी मिले ना
अब तो किसी ने लगता नही दिल
दिल को वही भा गया रे ।

भजन–144

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुख कैसे पावें
बोल ना जाने माया मदमाता मरणा चित्त ना आवें

मेरे राम राम तू संता दां संत तेरे, तेरे सेवक को भव
किछ–किछ नाहीं

जो तेरे रंग राते स्वामी, तिनका जन्म मरण दुख नासा
तेरी बख्ख ना भेटे कोई सत्गुरू का दिलासा

नाम ध्यायण सुख फल पावन आठ पहर आरा हो
तेरी षरण तेरे भरवा से पंच दुश्ट लै साधे

ज्ञान ध्यान किछ करम ना जाणा, सार ना जाणा तेरी
सब ते बड़ा सत्गुरू नानक जिन कल राखी मेरी।।

भजन–145

जीवन अधूरा था, मेरे सत्गुरू प्रेम बिना,
मेरे दिलबर ।

मैं भी हूँ तेरी सत्गुरू, दिल भी है तेरा,
तूने लिया अब मै और मेरा,
समझ ना आयेसत्गरू कैसे समझाऊँ मैं,
कह दे तो दिल को चीर के दिखाऊँ मै जीवन।

तुम ही तुम हो दिल में समायें,
तेरे बिना कुछ नजर ना आये,
तेरे सहारे ऐ मेरे सत्गुरू जीवन नौका चलती जाये।

तेरा हो सो रह जाये मेरा सब जल जाये रे षल,
कोई भी अब चाह नहीं है, शाहो का अब शाह बनी मै।

ज्ञान और प्रेम दो पर पक्षी के दोनो सिवाय कोई उड़ ना पाये,
ज्ञान बिना तू नजर ना आवे प्रेम दिना कोई पार ना पावे जीवन ।

भजन–146

जिसका मुझे था इंतजार जिस दिन के लिये
ये मन था बेकरार,
वो घड़ी आ गई आज मै को अपनी मिटा देना है,
पाके बस उसमें ही खो जाना है,
जाइ गुरू का मुझपे चला, गुरू प्रेम में मेरा मन खो गया।

एक अकेली बूंद मैं, डरती रही बस धूप से मैं,
किस्मत खुली दरिया से मिली दरिया से
मिलकर सागर,
को चली, अब सागर से मिल के इक हो जाना है।

भजन–147

जिस रंग में मेरा मालिक राखे उसी रंग में रहना,
जिस रंग में मेरा परमेष्वर राखे उसी रंग में रहना ।

वो चाहे तो वख्त बिठा दे वो चाहे तो भीख मांगा दे,
मुख से कुछ नहीं कहना ।

दुख आवे तो ना घबराना, सुख आये तो भूल ना जाना,
खुशी से दुख सुख सहना ।

मन को अपना मीत बना लो, हर श्वांस को अपना गीत
बना ले यही है जीवन गहना।

भजन –148

जीवन में गुरू तेरा साथ रहे,
मेरे सिर पे सदा तेरा हाथ रहे ।

निष्काम भरा गुरू प्यार तेरा,
झंकार करे हो मेरे मनुआ में,
लगी जब से लगन हुई मैं तो मगन,
बधाई बणे हो मेरे मनुआ में,

सत्संग की सदा हो जी हो सत्संग की
सदा बरसात रहें ।

जब तब सूरज चांद चमके,
गंगा यमुना में बहे पानी,
रहे तब तक प्रीत अमर अपनी,
है ये जन्म जन्म की दीवानी,

गुरू याद तेरी दिन रात रहे पे ना गैर की
बाल रहें ।

भजन–149

जिसकी नजरे गुरू से मिलती है,
गुरू जिनके करीब होते है,
वो बड़े भाग्यषाली होते है ।

जिन्दगी क्या है एक नाटक है,
हर घड़ी इम्तिहान होते है ।

सच में जो एक बार आते है,
जिन्दगी से वो प्यार करते है ।

हर रजा में जो राजी होते है,
गम को वो खुशी में ही बदलते है ।

मन की हलचल को जिसने जान लिया,
वो तो हरपल उमंग में रहते है ।

भजन–150

जग झमेलो की क्या है पड़ी,
नाम जाप ले घड़ी दो घड़ी,
बात है ये पते की बड़ी नाम

दिल नहीं हो किसी काम का,
जिसमें विश्वास गहरा नहीं,
जिसकी धड़कन सूरताल पर,
संत का कोई पहरा नहीं,
बात है ये पते की बड़ी ।

श्वांस है ये बड़े कीमती,
क्यूँ गंवाता है बेकार में,
भेंट करता ना चरणों में,
टूट जाए न इसकी लड़ी,

वासनाओं में भटका ये मन,
लाके सत्संग में जोड़ दे ,
तोड़ कर सुरति संसार से,
सत्गुरू शब्द से जोड़े,
टूट जाएगी हर हथकड़ी, नाम ।

भजन–151

जरा तो इतना बता दो भगवन,
लगी दे कैसी लगा रहे है,
मुइनीमें रहकर मुझी से अपनी ये खोज कैसी
करा रहे हो ।

हदय भी तुम हो तुम्हीं हो प्रियतम,
प्रेम भी तुम हो, तुम्हीं हो प्रेमी,
पुकराता मन तुम्हीं को क्यो फिर ।

प्राण भी तुम हो तुम्हीं हो स्पंदन,
ज्ञान भी तुम हो तुम्हीं हो ज्योति,
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूँढूँ
नयी ये लीला दिखा रहे हो ।

ज्ञान भी तुम्हीं हो, तुम्हीं हो रचना,
संगीत तुम्हीं हो, तुम्हीं हो रसना,
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ
नई ये रीति सिखा रहे हो ।

कर्म भी तुम हो तुम्हीं हो कर्ता,
धर्म भी तुम हो, तुम्हीं हो धर्ता,
निमित्त कारण मुझे बनाकर,
ये नाच कैसा करा रहे हो ।

भजन–152

जहां रब ले जाए चलता चल,
जहां रब रख ले तू रहता चल,
जो रब चाहे तू करता चल,
तू है मुसाफिर इस दूनिया में ,
जीवन तेरी है नैयया,

माया के तूफानों से तुझको,
पार लगाउ खिवैया,
लहर लहर में देख के उसको,
हंस के मौज में बढ़ता चल ।

पानी भिगाए धूप सुखाए,
मान जरा शुक्राना,
प्यास बुझाए भूख मिटाए,
रब का पानी दाना,
छोड़ दे बोझ उसी पर हर पल,
याद उसी को करना चल ।

पल ना गंवा रे तमचा में तू,
पेश ना कर तू मर्जी,
मिल जाएं तेरी हुआ के बिन हो,

भजन–153

जगत के रंग क्या देखूं
तेरा दीदार काफी है,
करूं में प्यार किस किस से
तेरा एक प्यार काफी है ।

ये झूठे रिष्तेदारों ने बिछाया जाल है झूठा,
प्रीत हो तेरे भक्तों से यहीं परिवार काफी है ।

ये झूठे साज बाजों ने किया है कानों को बहरा,
सुनु में नाद अनहद का यही झंकार काफी है ।

ये झूठी महफिले सारी तमाशे है सभी झूठे,
चली आऊँ में सत्संग में यही दरबार काफी है ।

ये फीकी रोशनाईयों से भर गई है मेरी आंखे,
ये देखु नूर इक तेरा यही चमत्कार काफी है ।

भजन–154

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी,
सो दुख कैसा पावे,
बोल ना जाने माया मद माता,
मरणा चित ना आवें ।

मेरे रामराय तू संता का संत तेरे,
तेरे सेवक को भो किछ नाहि,
यम नहीं आवे वेड़े ।

जो तेरे रंग राते स्वामी तिनका,
जन्म मरण दुख नासा,
तेरी बख्श ना मेटे कोई,
सतगुरू का दिलासा ।

नाम धियाइन सुख फल पाइन, आठ पहर आराधे, तेरी शरण तेरे भरवाणे, पंच दुष्ट ले साधे ।

गिआन धिआन किछ कर्म ना जाना,
सार ना जाणा तेरी,
सब तो वड्डा सतगुरू नानक,
जिन फल राखी मेरी ।

भजन –155

जो सुख देता है वो दुख देता है,
दोनो से दूर रहो,
आत्मा सुख में हरो, अर्चमुख हो बनो ।

मेरा रूप है सताचित आनन्द मेरी माया है झूठी
सच्चा ज्ञान सुनाया गुरू ने झूठी माया है छूठी ।

पाभी पढ़ पढ़ ज्ञान जो पाया,
वो हमको उलझाएगा,
गुरू का ज्ञान तो है अनुभव का,
वो ही मुक्त कराएगा ।

नाटक में सुख क्या दुख क्या, सुख दुख मन का धोखा
दृश्य का दृष्टा बनकर देखो दृश्य हवा

का झोके है ।
शब्द बनाए मानव ने,
फिर शब्द को फँसे सच माना,
तत्व बताया है सतगुरू ने,
शब्द को मिथा है जाना ।

भजन–156

जिसको अपना कहकर बन्दे,
क्यों इतना इतराता है,
छोड़ दे ये सब विपत्ति में,

कोई साथ न आता जाता है,
दो दिन का ये चमन खिला है,
मुरझाएगीं कली कली ।

क्यूँ करता है मेरी मेरी,
तज कर इस अभिमान को,
झूठे धन्धे छोड़ के बन्दे,

जप ले गुरू के ज्ञान को,
ऐसा समय फिर कभी न मिलेगा,
पछताए मन घड़ी घड़ी ।

भजन–157

जिस रंग में मेरा मालिक राखे
उसी रंग में रहना

उसी रंग में रहना
वो चाहे तो तख्त बिछावे, तख्त बिछाढ़े
वो चाहे तो भीख मंगा दे , भीख मंगा दे
मुख से कुछ नहीं कहना उसी रंग

दुख आए तो न घबराना ना घबराना
सुख आए तो भूल न जाना, भूल न जाना
खुशी से सुख दुख सहना, मुख से कुछ नही कहे

मन को अपना मीत बना लो, मीत बना लो,
श्वासं श्वांस को गीत बना लो गीत बना लो
यही है सच्चा गहना, यहीं गुरू का कहना

तुम हो आत्म सच ये जानो सच ये जानो
अजर अमर अपने को जानो अपने को जानो
ज्ञान में टिकना, यही गुरू

वो जाने तुम क्या जानो तुम क्या जानो
वो भला करे तुम ना मानो तुम न मानो
भाणा मीठा लागे यही गुरू

त

भजन–158

तू मेरा जीवन आसरा ओ मेरे षहंषाह,
ओ मेरे श्याम पियारे,
मै तां बस इन जी रहियां,
ते श्यामा तेरे सहारे ।

आणें पहर मै तैरीयां गावां कहानियां,
चरणां नाल लाई रखी बड़िया मेहरवानिदां,
चरणां दा लै लया आसरा, ओ मेरे ष्याम पियारे ।

आणें पहर ओ तेरा चढ़िया सरूर है,
कण कण विच ओ श्यामा तेरा ही नूर
है,जदों दा असी त्वाजू जानदा ओ रब मानदा,
ते दुख मिट गा सारे ।

फड़ियां नी बावां श्यामा देई न छोड़ तूं,
लगिया परीता श्यामा देही न तोड़ तूँ,
जदों दा असी त्वजूं जानया, हो रब मानयां,
ते दुख मिट गए सारे ।

गहरी नदिया तल्ला पुराना,
मै अनजानी, तराना ने जाणा,
करो भवसागर पार पार जी, ओ
खेवनहार जी, ओ मेरे श्याम पियारे, मै तो. ।

भजन–159

तेरी कशिष में सत्गुरू दर पे बुला लिया,
हम तो नहीं आए, मगर तूने बुला लिया ।

ऐसी लगन लगी मुझे तेरे दर की है प्रभु,
दो फूल लाके प्रेमी ने सर को झुका दिया ।

अब दर्ष दो या न दो मर्जी है आपकी,
हमने तो तेरी ज्योति को दिन में बसा लिया ।

क्यों दूर बैठो हो प्रभु आके जरा बता,
हम तो तेरे है भगवन तूने अपना बना लिया ।

तेरे मिलन की आस तन मन को है लगी,
अब तो गले लगा लो, सब कुछ भुला दिया ।

इस सर ने आज तक कभी सजदा नहीं किया,
तेरे ही प्रेम ने प्रभु सजदा सिखा दिया ।

भजन–160

तेरे अहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता
कर्म ऐसा किया तूने बताया जा नहीं सकता

अगर मुझको न तू मिलता, मेरा मुश्किल गुजारा था
जो पहुँचा है बुलंदी पर वह एक टूटा सितारा था
दिल से मेरी उल्फत को मिटाया जा नहीं सकता

मेरी हर श्वांस पर दावा अधिकार तेरा है
मिला जो मिला तुझसे मेरा क्या था जो मेरा है
तुझे दुनिया की दौलत से रिझाया जा नहीं सकता

बड़ी ऊँची तेरी रहमत, बड़ी छोटी जुबां मेरी
तुझे दाता समझ पाऊँ है हस्ती कहाँ मेरी
तेरी रहमत के शब्दों को सुनाया जा नहीं सकता

जगत जीवन ये साया है सदा तेरी इनायत है
मुझे है शौक ऐ दाता, सदा तेरी इबादत हो
बिना तेरे यह जीवन संवारा नहीं जा सकता

भजन–161

तेरा ही था इंतजार, मिले हो कितने जन्मों बाद,
ओ मेरे सतगुरू अब तेरे बिन रहा न जाए ।

जल में हम मथनी चला रहे थे,
फीकी भी आशा, राह भटक रहे थे,
तूने जो दी आवाज, टूटा सारा इंद्रजाल,
ओ मेरे सतगुरू अब तेरे बिन रहा न जाए ।

देते न साथ आप जो हमारा,
डूब ही जाते ना मिलता किनारा,
तू ही है मेरा खुद तुझसे ये जीवन मिला,
ओ मेरे सतगुरू अब तेरे बिन रहा न जाए ।

खुशियों को लेके तुम उपहार आए,
अब न कोई चिंता न कोई गम सताए,
मंजिल मेरी तू ही तू हैं मेरी सफर,
ओ मेरे सतगुरू अब तेरे बिन रहा न जाए ।

खाली थी मेरे मन की नगरिया,
जीवन था सुना व्यर्थ जाती उपरिया,
बनके तुम आए बहार बज उठी है
मन की तार औ मेरे ।

भजन – 162

तेरी कष्पा को मैने पाया,
तेरी दया को मैने पाया,
तेरे नाम का सुमिरन करके,
मेरे मन में सुख भर आया ।

दुनिया को ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा
ना पाकर अपना कोई, फिर मैने तुझे पुकारा,
हे नाथ मेरे सिर ऊपर, तूने अमृत बरसाया ।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए,
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए,
जितनी भी बार गिरा हूँ, तूने पग पग मुझे उठाया ।

भव सागर की लहरों ने, भरकाई मेरी ये नैना,
तट छूना तो मुश्किल था, नहीं दिखे कोई खिवैया,
तू लहर का रूप पहनकर, मेरी नाव किनारे लाया,

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा,
निर्लेय रमैया मेरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा,
हम षरण में तेरी दादा, तेरा तुझ ही को चढ़ाया ।

भजन–163

तू पास है तो दिल का अजब हाल सा लगे
देखूं जो कोई फूल प्रभू आप सा लगे

तू मिल गया तो चांदनी रातों को क्या करें
ये चांद तेरे सामने कुछ सांवला लगे

देखे तो कितना पास है सोचें तो कितनी दूर
वो ऐसा रहनुमा है जो हमको खुदा लगे

मेरे नहीं तो अपने ही बारे में बताकर
खामोष तू रहे तो बहुत फासला लगे।

SSSSSSS

भजन–164

तुमको जिसने दिल में बसाया उसने सब कुछ पाया
जिसके सिर पे हाथ गुरू का वो कब घबराया
रब भूले तो भूल जायें बिसर ना जाये तेरा नाम

पोथी पढ़ हार गया मै प्रेम समझ ना आया
ढ़ाई आखर प्रेम में, गुरू ने कितना राज बताया
जीवन हो लचीली बेल आये ना कमी अभिमान

अंतर मन को षुद्ध कर इतना सारी मै मिट जायें
अंहकार का नाम नहीं बरन मन मुड़ता नहीं जायें
झुककर के चला जो जग में, पाया है उसने सदा।

बुरा नही है कोई भी जग में, तुम मीठा कर बोलो
हम बदले तो सब जग बदले, अपने दिल को टटोले
नजरों को साफ करो नजर आये भगवान।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–165

तू भी राही मैं भी राही राही है जग सारा,
तेरा मेरा बैर कादां कादां भाई चारा ।

मिट्टी दा मकान बंदे इक दिन ठहणा है,
तैनू ये मकान बंदे छडणा ही पैणा है,
सिर उत्ते बजदा ए काल दा नगाड़ा ।

जब तक इस दे अंदर दिया तेरा जलदाये,
तैनू मकान बंदे बड़ा सोणा लगदा ए,
बुझ गया दिया बाँकी करंनगे पचारा ।

मिट्टी बन आया बंदे मिट्टी बन जाणा,
बांग पवाषे बंदे तैनू धुल जाणा ऐ,
नाम दे बगैर तेरा नहीं छुटकारा ।

जगत सराय विच कद तक रहणा है,
जो भी आया जग विच ओने चले जाणा है,
जाके बंदे मल ले तू गुरूदा द्वारा ।

भजन–166

तेरी महिमा गाके ऋशि मुनि भी हारे
नाते–नाते कर थक गए बेचारे
तेरे गुणों का कोई अंत नहीं
तुझसा बड़ा कोई संत नहीं
जग के पालनहारे स्वामी सिरजनहार
तेरे घर में भरे हुए है अमष्त के भण्डार ।।

ऽऽऽऽऽऽऽ

भजन–167

तूने मुरली की धुन है सुनाई सखियॉ दौड़ी आई,
मेरी सांसों में तू है बसा ओ कान्हा आजा ना, अब
तरसा ।

मेरी हर धड़कन कहती मुफेथी प्यास जिसकी,
वही भक्त वत्सल हो तुम ओ कान्हा,
मिलन की शुभ घड़ियॉ हैं आई ।

वही चितचोर हो तुम वही अवतार हो तुम,
जो हर युग में है आते ओ कान्हा,
तेरी प्रीति है सुखदायी,

मैं हूँ कैसी बड़मागी जो प्रीति तुम संग लागी,
करूं लख लख शक्राना ओ कान्हा,
अब तो तुमसे रहूँ समाई ।

भजन–168

तेरी जब से महफिल मुझे गई है,
कि मुरझाई दिल की कली खिल गई है ।

तुझे पाके मैने खजाना है पाया,
मेरी जिन्दगी में नया रंग आया,
तुम्हारी नजर से नजर मिल गई है ।

तेरे पाक कदमों में सत्गुरू जी आके,
तेरा प्रेम पावन मेरे देव पाके,
बदल मेरी तकदीर अब तो गई है ।

तूने भव बंधनों से है मुझको छुड़ाया,
परम धाम की राह पे चलना सिखाया,
तेरी मुझ पे दादा, दया हो गई है।

कहता प्रेमी मैं क्यो ना गुणमान गाऊँ,
मोहब्बत की दौलत तुम्हीं पे लुटाऊं,
तमन्ना मेरे दिल की अब तो यही है ।

भजन–169

तुम्हीं ने दिया मुझको प्रेम खजाना,
कि दिल गाएं सत्गुरू तेरा शुकाना ।

जगत में बाहर मुखी हो रहे थे,
सुख में सुखी दुख में दुखी हो रहे थे,
सिखा हर हाल में दिया मुसकुराना ।

खुदगर्ज होकर अपने लिए ही जिए थे,
अपने ही हाथों विष के प्याले पिए थे,
रहमत तेरी नां लगे अब कोई बेगाना ।

कोई न पहुॅचे इस पद पर बिना कुर्बानी,
मगर तेरी महिमा सत्गुरू अभी मैने जानी,
जले बनके षमां तभी आया परवाना ।

उपकारों की चर्चा जुबां कर ना पाएं,
अहसायो का कर्जा कैसे चुकाएं,
सिवाए आंसुओं के क्या दे नजराना ।

भजन–170

तुम्हारी शरण मिल गई सांवरे तुम्हारी कसम जिंदगी
मिल गई ,
हमे देखने वाला धोई नाथा, तुम जो मिले बंदगी
मिल गयी,

बचाते ना तुम डूब जाते कन्हैया, कैसे लगाने किनारे पे
नैया ,
गमें जिन्दगी से परेषान थे, रोते लबों को हंसी
मिल गयी,

समझ के अकेला सताती थी दुनिया सितम पे सितम हम
पे ढ़ाती थी दुनिया,
गनीमत है कि तुम मेरे साथ हो, मुझे आपकी दोस्ती
मिल गई ।

मुझे सांवरे तुम पे भरोसा बहुत है, तुमने हमें पाला
पोसा बहुत है ।
आंखो के मेरी उजाला हो तुम, अंधकार को रौशनी
मिल गयी।

भजन–171

तेरे करम से बेमियांज कौन सी षय मिली नहीं,
झोली ही मेरी तंग थी तेरे यहां कमी नहीं ।

जीने को जी रहा था मै, सत्गुरू तेरे बगैर भी,
जिन्दगी जिसको कह सकूं, ऐसी तो जिन्दगी ना थी

कब से पुकारता था दिल, सुनता मगर कोई नही,
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं ।

माना कि मैं गरीब हूँ माना कि मै फकीर हूँ,
ऐसे ना मुझसे रूठिये जैसे मेरा कोई नही ।

सजदा करूं किस को बता जब तू ही सामने नही,
बन्दगी तो हूँ काबिले बंदगी नही कायले ।

इसकी नजर मिली तो क्या, उसकी नजर फिरी तो क्या,
जिस बंदगी में होष हो, वो बंदगी बंदगी नही ।

भजन–172

तेरा जलवा जिसने देखा वो तेरा हो गया,
मैं हो गयी हूँ तेरी तू मेरा हो गया,
क्या देखा था तुझमें जो दिल तेरा हो गया,
ओ सांवरे तू दिलों का लुटेरा हो गया ।

तेरा भोला सा मुखड़ा मेरे मन को है माया,
एक तू ही है मन मे, मू ही मन में समाया,
निभाएगे संग ये वादा हो गया ।

तेरी तिरछी निगाहों में ऐसा जादू है,
जिसे देखते दिल हो जाये बेकाबू है,
तेरे आवे से महफिल में सवेरा हो गाया ।

तेरे एक नजर ने वो हालत बना दी,
कि दूढे तुझे ही दिवाना हो गया,
कि सत्गुरू प्यारे तेरा जादू चल गया ।

कि भोले से मुखड़े का दिल है दीवाना,
कि तुम्ही प्राण मेरे तुम्हीं को है पाना,
तेरी गलियों में आके दिल, तेरा हो गया ।

भजन–173

तेरी रहमत के सदके ये बंदे तेरे क्या से क्या हो गये देखते देखते,
कल जिनके मुकदर में कुछ भी ना था, बादशाह हो गये।

तेरी नजरें करम जिस पर भी पड़ी वो बशर फिर कहीं
पर भी झुकता नहीं,
तेरी शक्ति की जिसने भी तौहीं की, वो फनां हो गये
देखते देखते ।

तेरे कदमों पे रख के जो सिर रो दिया,
तूने करूणा से उसकी खता,

बख्श दी जिसके अंदर से मैं की बूना गयी ।
वो तबाह हो गये देखते देखते ।

सारी दुनिया ने जिसको था ठुकरा दिया, तूने हंसकर गले से,
लगाया प्रभु, तेरी इक ही निगाह से ऐ दाता मेरे वो
खुदा, पड़ा, बेगुनाह हो गये देखते देखते।
हो गये देखते देखते ।

हर कर्म जिसका तेरी इबादत बनी, हर जगह तूने
उसकी, हिफाजत कर, तेरे नक्षे कदम पर जो चल।

भजन–174

तेरा आणा मीठा लागे मुस्काना शुकाना दादा का कहना,
ना कुछ बनना, ना कुछ करना ना गम से घबराना,
दादा का कहना ।

ब्रहमा है ऐसा हीरे मोती जैसा,
मिलता नसीब से बिना पाई पैसा,
हो ये दादा की बाते है अवसर ना गंवाना ।

राजी रहे हम उसकी रजा में,
मिल तो ईद नहीं तो रोजा मनाएं,
इच्छा मात्रम अविद्या इच्छा दूर भगाना ।

रूप अनेक है लेकिन सबमें एक है,
भेद जो ये जानता उसकी बुद्धि नेक है,
कण कण में है नूर समाया विरले ने पहचाना ।

मौन ही सोन है मै ना तेरा गहना,
पुरूषार्थ है देव तेरा आगे बढ़ते रहना,
श्रद्धा और विश्वास हमारे जीवन से ना जाना ।

भजन–175

तुमने गुरू जीवन दिया कितने प्यार से ओ,
प्रेम में कैसे मन वश किया ऐसे दगा बाज को आं ।

निषकाम प्रेम से दिलभर दिया ओ,
अपने स्वरूप का पता दे दिया हो , अपना लिया हो,
खुशियों से झोली भर डाली दिया इस अंदाज से ओ ।

अमानत है तेरी गुरू जीवन मेरा ओ, दिलचीज क्या है,
करूं जां कुर्बा।
दिल के सोचे भाग्य जागें तेरी रहमतो से ।

पहले ख्यालो से खाली किया ओ ज्ञान की ज्योति
मन में जला
जीवन क्या से क्या कर डाला तूने साहिबा ।

सत्गुरू तुम्हारा हम पर एहसान बड़ा ओ ,
भेद भरम दूर किया ओ एहसान बड़ा ओ,
षुकानों से दिल भर दिया मन की हुई हार ओ ।

भजन–176

तू मेरा गिरधर है, तू ही मेरा जीवन हो,
तुमको पा कर के नाचे मेरे मन मंदिर का मोर।

यशोदा का तू नंद लाला बड़ा है मतवाला चुराये रोत तू माखन,
फिर भागा भागा तेरी मुरली की धुन हम को प्यारी लागे,

हर प्राणी की किस्मत के चमके आज सितारे,
जो दर पे तेरे आया तूने उसको अपनाया,
राजा हो चाहे हो चोट ।

खेल तेरा अनोखा है खिलाड़ी हम तेरे खिलाये खेल तू,
जैसा तेरा हंस के खेले प्रतिदिन तेरी वाणी ज्ञान
अमृत बरसाये,

खुश किस्मत वो प्रेमी जो सत्संग में आये,
ना मांगू सोना चांदी ना मागूं हीरे मोती,
मै मांगू तुझको चितचोर ।

भजन–177

तुम अगर बख्श देने का वादा करो,
मैं सदा आपके गीत गाता रहूँ,
तुम हमेशा नजर के रहो सामने,
मैं सदा आपके दीद पाता रहूँ ।

तुम अगर अपना प्रेमी बना लो मुझे,
तुम प्रभु जी गले से लगा लो मुझे,
भूल जाऊँ जमाने के हर एक,
गम को उम्र में सदा मुस्कराता रहूँ ।

तेरे द्वारे पे जीवन बिताऊँ,
प्रभु हर घड़ी गीत तेरे मै गाऊँ प्रभु,
खत्म हो न प्रभु ये कमी सिलसिला, तुम बुलाते रहो
और मैं आता रहूँ ।

याद सत्गुरू उजी तेरी सुबह शाम हो,
मेरे होठों पे सत्गुरू तेरा नाम हो,

फंसी जग से ना मुझको कोई काम है,
मैं सदा जोत तेरी जलावा रहूँ ।

भजन–178

तारों रे तारों मोहे तारों से सांवरिया
तरन हार आये बन बंसियां मोहे

मन मेरा तो कहता रहता हर पल ये अरदास है
मेरा तुझसे प्यार जुड़ा है, फिर क्या गम की बात है
दुश्मन हो चाहे सारी दुनियां

प्रीत के रंग में तुमने रंगा है मेरे मन का आँगन
प्यार मोहब्बत की दौलत से भर दिया मेरा दामन
खिल गई सूने दिल की सारी कलियाँ

जग की माया है चमकीली कब–कब हमें लुभाये
तेरे सिवाय है कौन गुरू जो इस दल–दल से बचायें
छूट जाये सब हथकड़ियाँ।।

जब–जब मेरी नैया डोले तू ही पार लगाना
मै भी ना बिसराऊँ तुझको
तुम भी ना बिसराना
तेरे ही दर पे पाई सारी खुशियाँ।।

भजन–179

तेरी कैंची शान है सत्गुरू मेरा भी अरमान है सत्गुरू
मुझको वो आनन्द दिला दे ऐसी मस्ती आज पिला दे

शुक्र है हमको सत्संग मिला है प्रेमी सारे झूम रहे है
हमको भी वो मेहर करा दें, ऐसी कोई नजर घुमा दे।।

ना तो सोना चांदी मांगू ना हीरा ना मोती मांगू
पल में रोषन कर दे जीवन ऐसी कोई दृष्टि मांगू

मुझमें अपनी ज्योति जला दे, अपने चरणों में जगह दे दे।

ना मुक्ति ना शक्ति मांगू ना कोई ऊँची पदवी मांगू
सुमिरन हो हर ष्वांस में तेरा, ऐसी तेरी भक्ति मांगू
तृप्ति का एहसास करा दे, ऐसी कोई युक्ति बता दे।।

भजन–180

तेरे प्रेम में तेरे प्यार में मेरा मन रहे तेरे साथ में
मेरे सतगुरू मेरे सतगुरू

तेरा साथ है मेरी हर खुशी, तेरा नाम है मेरी बंदगी
रहे मन में तेरी ही मूर्ति, और मन रहे तेरे साथ में।

हृदय में हो सद्‌भावना किसी भाव में अंहकार ना
रहूं छल कपट से दूर मै, शीतल बनूं तेरी छांव में।।

सारे विष्व में तेरी कीर्ति आनंद में तेरी मूर्ति
इस जन्म में खुद को झुका दिया, रहे फिर ना जन्म की चाहना

हर आत्मा तेरा रूप है, परमात्मा का ही रूप है
मैने तेरा दर्शन कर लिया, रहे और कोई आस ना।।

मेरा तन लगे निश्काम में तेरी राह में तेरे ज्ञान में
मेरा नाम हो तेरे नाम से, हर काम हो तेरे नाम से।।

भजन–181

तेरे चेहरे से नजर नहीं हटती, नजारे हम क्या देखें
तुझसे मिल के भी प्यास नहीं बुझती नजारे ......

पिछले ये मन मेरा प्रेम की निगाहों से
तेरा ही नाम निकले, शोलों सी आहों से
हर पल याद तेरी बढ़ती ही जाये।

सत्संग की वर्षा है, गुरू जी का साथ है
किसको पता है अब दिन है या रात है
लगे दुनिया भी आज ये सिमटती ।।

श्याम जी के रंग रंगा हरेक पल हो
तेरी ना याद आये ऐसा नहीं पल हो
तेरे जलवों की सुधना हटती।।

भजन–182

तन मन तेरा जब अर्पण होगा उस दिन प्रभु का
दर्शन होगा
सारे जग से न्यारा अपना जीवन होगा उस दिन......

जहाँ भी तू अपनी नजर को उठायेगा भोली भाली सूरत
में वो ही मुस्करायेगा जो साफ आँखों का दर्पण होगा

बोझ तेरे सर पर मान अपमान का आत्म ग्लानि औरध
ान के अभिमान का, जब इस धन से निर्धन होगा ।।

उसी की रजा तुझे जो कुछ भी मिला है
रख वो सुखों में या दुखों में क्या गिला है
अपना ना कोई साधन होगा

आत्मा से माया की परत हट जायेगी
कहे गुरू उस दिन 84 कट जायेगी
जिस दिन तेरा ये दूर बंधन होगा।।

भजन–183

तेरी मेहरबानी की मेहर हो गयी
भटके थे राहे शरण मिल गयी
हमारा तो जीवन इस काबिल ना था
करूणा भरी इक नजर मिल गयी

तुझे पाया मैने तो चमका सितारा
तुम्हीं से मिला गुरूवर हमको किनारा
लेकर कश्ती भंवर बीच आ गये।।

शरण तेरी सत्गुरू जो पाही चुके हैं, मंजिल पे आही चुके हैं
कुल जहाँ की जन्नत उसे मिल गयी

तन मन जो कुर्बान करे अपने प्रभु को
चढ़ाये जो भेंटा मै सर्वस्व तुमको नूरानी किरणे उन्हें मिल गयी

दयालु कृपालु गुरू ये मिला है गुरू रूप में नारायण मिला है
बगिया मेरी ये तुम्हीं से खिली है।।

SSSSSSS

भजन–184

तज विशयों की दलदल सुमरिन है तेरी मंजिल सत्संग में
आकर के प्राणी कर साफ हृदय दर्पण और
कर ले जीवन पावन सत्संग

सत्संग में हीरे मोती पायेगा धीरे–धीरेइस पथ पे चलता चल
और कर ले जीवन पावन सत्संग

झूठे जग से प्रीती तोड़ ले, चित्त प्रभु चरणों में जोड़ ले
पथ बेशक है मुश्किल, पर मत हो तू गाफिल

मोह लोभ द्वेश अभिमान ये, दुश्मन है तेरे पहचान ले
सब मन में करे हलचल, तब सुमिरन कर पल–पल

घबरा नहीं मन के नाग से अभ्यास और वैराग्य से
इस पर करके संयम, पाले अपना प्रियतम

कर कर्म सिले सब सब छोंड़ दे, अज्ञान का घेरा तोड़ दे
तजकर सारे दल बल, संस्कार बना निर्मल

भजन–185

तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है अंधेरों में भी
जल रही रौशनी है

हर इक मुश्किल सरल लग रही है
मुझे झोपड़ी भी महल लग रही है
ये माना कि इन आंखों में नमी ही नमी है

मगर इस नमी पर ही दुनिया धनी है।

मेरे साथ तुम मुस्करा के तो देखो
उदासी का बादल, हटा के तो देखो
कभी ये है आंसू तो कभी ये हंसी है
मेरे हम सफर यही तो जिन्दगी है ।।

टूटी है किश्ती तेज है धारा कभी न कभी तो
मिलेगा किनारा
बही जा रही है जो समय की नदी है
इसे पार करने की आशा जगी है।।

भजन–186

तेरा ही था इंतजार मिले हो कितने जन्मों के बाद
कि ओ मेरे सत्गुरू अब तेरे बिन रहा ना जाये

जल में हम मथनी चला रहे थे, घी की थी,
आशा राह भटक रहे थे
तूने जो दी आवाज टूटा सारा इन्द्रजाल

देते ना साथ आज जो हमारा,
डूब ही जाते ना मिलता किनारा
तू ही है मेरा खुदा, तुझसे ये जीवन मिला

खुशियाँ के तुम उपहार लाये अब ना कोई चिन्ता ना
कोई गम सतायें, मंजिल मेरी तू ही तू ही है सफर मेरा

खाली थी मन की नगरिया जीवन था सूना व्यर्थ जाती
उमरिया, बन के तुम आये बहार
बज उठे मन के तार ।।

भजन–187

तेरे प्यार में ऐ गुरूवर जीवन ये बितानी है,
तू ही सच्चा साथी है बाकी झूठी कहानी है ।

तू ही मेरा सहारा है, तू ही मेरा खिवैया है,
तू ही तो किनारा है, तू ही मेरी नैया है,
जीवन के मेरे मालिक ये जीवन ही देनी है ।

तेरे वचनो को गुरूवर धो कर पीना है,
तेरे बिन ओ भगवन नही मुझको जीना है,
तेरी छत्र छाया में ये उम्र बितानी है ।

निष्काम प्यार तेरा भूलूं ना कमी गुरूवर,
पकड़ा जो दामन तेरा छोडू ना कभी गुरूवर,
तेरा प्यार रहे ये अमर इससे जीवन बितानी है।

भजन–188

तू ही तू ही बोलवे ना जिन्दगी ना रोलवे,
नम जपब न्दया समां है अनमोल वे ।

समय द पंछी तेरे हत्थ नूं उड़ जावणा
तू फिर पछतावणा कि हथ नइयो आंवणा
अजी वी संभाल ले ये घड़ी अनमोल वे ।

पैर थक जावेगें तो किवे दुर जावेगा,
बोल रूक जावेगे ते किवें गुण गावेगा,
क्यां दी चल दिया तू अखियां नू खोल वे ।

सहारा जेड़ा मंगडा तू आखिर बार नूं,
ऐ प्रेमी हथ जोड़ ले तू उस निराकार नूं,
नूं संता दी गल्लां नू लै दिला विच तोलवे ।

भजन–189

तेरे जलवे नूं अखां विच बसां के,
दिल तेरे नाल रखेगे लगा के,
ये वादा साड़ा अज हो गये ।

तेरी गली दाता जन्नतां दी गली ए
ताइयो आनके, दहलीज तेरी भली ऐ,
तेरा मुखड़ा तौ साड़ा जिद जान ऐ ।

मुख तेरा जीवे चौदहवी चंद ए,
कर लेवा तैनूं अखां विच बंद वे,
तैनू तकणां खुदा नूं तक लेणा,
एइयों तेरया दीवानयां न कैहना ।

मेरी मुश्किल गुसांई तेरी दीद ए,
दीद मिलदी रवे मेरी ईद ए,
एहो रब को लो मंगदे दुआवां,
भुलां तुसी वे ते मैं तीना भुलावां ।

तू मिलया ते मिल गई खुदाई ऐ,
हथ जोड़ा कदी पावी ना जुदाई ऐ,
खैर पावे अज एहो मैनू सजणां
बस होर नही कुछ असी मंगना ।

भजन–190

तेरी कर्म कहानी तेरी आत्मा ही जाने
परमात्मा ही जाने,

कितने ही कर्मो से पाप कमाए तूने,
कितने ही पर्दो में भेद छिपाए तूने,
भले बुरे की कहानी तेरी ।

जग जिसे कहते है कर्मो की खेती है,
जैसा यहां बोए कोई वैसा फल देती है,
तूने बोया क्या था प्राणी तेरी कर्म कहानी
तेरी आत्मा ही जाने परमात्मा ही जाने,

गुरू के द्वारे तेरा आना ही बहुत है,
बोल कि ना बोल पछताना ही बहुत है

जो है श्रद्धा तुम्हारी, तेरी कर्म कहानी
तेरी आत्मा ही जाने परमात्मा ही जाने,

भजन –191

तोरा मन दर्पण कहलाए रे,
भले बुरे सारे कर्मो को देखे और दिखाए ।

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा ना कोई,
मन उजियारा जब–जब फले जग उजियारा होए,
इस उजले दर्पण पर प्राणी धूल ना जमने पाए ।

सुख की कलियां दुख के कांटे मन सबका आधार,
मन से कोई बात छिपे ना मन के नैन हजार,
जग से चाहे भाग ले प्राणी मन से भाग न पाये ।

वन की दौलत ढ़लती छाया, मन का धन अनमोल,
तन के कारण मन के धन को मिट्टी में ना रोल,
मन की कदर भूलने वाले हीरा जन्म गंवाए ।

द

भजन–192

देखने में ना सुहागिन है,
और देखने में ना कुंआरी है,
दोस्त मेरे ये वो, दौलत है,
जो आज मेरी है कल तुम्हारी है ।

जिन्दगी एक किराए का घर है इक ना दिन बदलना पड़ेगा
मौत जब भी आवाज देगी घर से बाहर निकलना पड़ेगा।

चांद बादल में छुपा था मुझे मालूम ना था ,
भूलकर मोह किया था मुझे मालूम ना था ,
मैने सोचा दुनियां में बनूगां दूल्हा ,
पर मेरा पोषाक कफन था, मुझे मालूम ना था

इक मिट्टी का हर आदमी है मौत के बाद होना यही है,
या तो उसकी कुरबत बनेगी या चिंताओं में जलना पड़ेगा
ये दुनिया एक सराय फानी देखी,

हर चीज यहां आनी जानी देखा,
जो आकर ना जाए वो बुढ़ापा देखा,
जो जाकर ना आए वो जवानी देखी ।

भजन–193

दुनिया से अंधकार मटाने,
ज्ञान की ज्योति जलाने, सत्गुरू आ गए,
तूफानों से हमे बचाने,
नैया पार लगाने, सत्गुरू आ गए ।

पाप कर्मो से बन्दे,
पाले तू अपना षरीर है,
मोह माया की तुमने,
बाँधी पक्की जंजीर है,
तुझको ज्ञान की राह दिखाने,
तुमको मुक्ति दिलाने, सत्गुरू आ गये ।

माना तेरे घर में लाखों करोड़ो का माल है,
ज्ञान के बगैर बन्दे, फिर भी तू तो कंगाल है,
ओम का सच्चा नाम जपाने, अपने रंग रंगाने,
सत्गुरू आ गये ।

दुनिया का सहारा झूठा,
झूठी है प्रीत संसार की,
सतगुरू का सहारा ले ले,
ज्ञान का गहरा रंग चढ़ाने, मालोमाल बनाने,

भजन – 194

दादा के मिलने से जीवन खिल गई,
एक मुरझाई कली सी खिल गई ।

क्या चाहेगा अब कोई संसार से,
दो जहॉ की आज खुषियॉ मिल गई ।

झूठी दुनिया अब न मुझको याद है,
जबसे नजरें सत्गुरू से मिल गई ।

माया ने हमको फॅसाया का मगर,
आत्मा में आज तृप्ति टिक गई ।

दादा का जब ज्ञान इस मन ने सुना,
प्रेम में उसके मैं ऐसे खो गई ।

दादा का इस जैसा सबसे प्यार था,
दादा से अपनी अमानत मिल गई ।

आज का दिन दादा का त्योहार है,
जिसके जीवन की सुगन्ध फैल ही गई ।

भजन –195

दादा तेरे दर आकर मिलता है आराम बड़ा,
तेरे जैसा मित पाकर किस्मत को है मांज बड़ा

एक सच्चा नाम तुम्हारी बाकी सब है सपना,
तेरे बिना मेरे दादा कोई नहीं है अपना
किसको अपना मीत कहूँ, हर चेहरे पर चेहरा है तरा।

मेरी जिंदगी संवारी चरणो में मुझे लगा के,
बैठा दिया फलक पर वचनो में मुझे लगा के,
कहाँ तक बयान मै करूं तू तो है महान बड़ा ।

भजन 196

दिलदार हमारे दिल को तुम हमसे ही छिपाये बैठे हो
सरकार नजर में रहमत का, तूफान उठाये बैठे हो ।

नही दिल को चैन मिले पलभर
जब तक ना दर्श हो मालिक का
बतलाये हम क्या आज मिला
तुम पर्दा उठाये बैठे हो ।

हम प्यासे है कितने दाता, तेरे सागर में कमी नही
इक बार तो देखो हंस करके
क्यों नजरे झुकाए बैठे हो ।

दुख दर्द के मारे आये थे
चौखट पे तुम्हारे सत्गुरू जी
मिटी इक चितवन से दुख सारे
सब दुखड़े मिटाये बैठे है ।

दिलदार जो पाया दिलवर का, कुछ और किसी को याद नही
इन दीवानों की महफिल के तुम होष उठाये बैठे हों।
हमने तो देखे दोनों जहाँ, दिलजान से हो गये तुमपे फिदा
मालिक हो दोनो जहानों के, खुद को ही छिपाये बैठे हो ।

भजन–197

दिल दीवाना है आपका दिलदार सांवरे
मुझे अपने ही रंग में रंगना दिलदार सांवरे ।

मुझे ऐसे रंग में रंग दे उतरे ना जन्म जन्म तक
नाम तू अपना कान्हा लिख दे हर धड़कन पर
तू ही है इस जीवन का दिलदार सांवरे ।

भव सागर में मोहन तुम मांझी बनकर आये,
भटकू इधर उधर तो मुरली मधुर बजाये,
मेरी जीवन नैया ले जा उस पार सांवरे ।

प्रीत लगाऊँगी ऐसी निभ जाये मरते दम तक,
उसके अलावा रबसे मांगा ना कुछ भी अब तक,
बन बारी तुम बिन जीना बेकार सांवरे ।

भजन–198

दिल दीवाना बिन सत्गुरू के मानेना
परवाह मत कर जल जाने की बढ़ता जा

वही बना कुछ इस दुनिया में,
जिसने खुद को मिटाया
हस्ती मिटायी जब मेंहदी ने सब पर रंग चढ़ाया
चरण धूल बनके तू सब की बढ़ता जा

इष्क का मतलब कुर्बानी है तनम न धन प्राणों की
कूद पड़ी थी जौहर करके ले ली मस्तानों की
बन मस्ताना प्रेम पथिक हो बढ़ता जा ।

शेख यही अब आस है मेरी
रहूँ सदा चरणों में,
ये तन हो तेरी महफिल में
और मन तेरे गुण वर्णन में
बन मस्ताना शमां का आषिक बढ़ता जा ।

भजन 199

दर तेरे दर तेरे आये है हम लेने खुशी सच्ची खुशी
दर तेरे आये दाता हे जग विधाता
जुड़ा रहे अपना सदा तुमसे ही नाता ।

तेरा दर तो जन्न से भी न्यारा है
इसीलिये तो हम सबको ये प्यारा है
श्रषियाँ सिद्धियाँ नव निधियाँ तू दे सकता
तुमको रिझाये जो वो सब ले सकता ।

सागर से भी गहरा प्याद प्यार यहाँ
अम्बर से भी ऊँचा मिलता ज्ञान यहाँ
समहफिर समझाव का यहाँ नजारा है,
समर्पण का भेद तूने यहाँ बताया है ।

तेरे दर पे भेद की कोई बात नही,
सिन्धी हिन्दी भाषा पंजाबी जात नहीं,
मिलकर बैठे देखो यहाँ पे सारे है
सब ही कहते ये तो गुरू हमारे है ।

तेरे सिमरण में हर पल हर क्षण बीते
तेरी पूजा भक्ति में ही दिन बीते
तेरी महिमा तेरे गीत ही गाये हम
आठों पहर नाम तेरा बस ध्याये हम

भजन–200

दादा तेरे दर आकर मिलता है आराम बड़ा
तेरे जैसा मीत पाकर किस्मत को है नाज बड़ा

मेरी जिन्दगी संवारी चरणों में मुझे लगा कर
बैठा दिया फलक पे मुझको जमीन से लाके
कहाँ तक बयान करूं तू तो है महान बड़ा ।

टूटे ना बंधन तेरा चिंतन तेरा ना छूटे
ये जग रूठे तो रूठे पर तू कभी न रूठे
सारा जग देख लिया तेरे जैसा मीत नही ।

मेरे दिल की यही दुआ हर रोज तू बुलाये
जिस रोज हम ना आये वो दिन कभी ना आये
दादा तेरी यारी को मैने तो खुद जाना

तेरे बिन मेरे दादा कोई नही है अपना
इक सच्चा नाम तुम्हारा बाकी सब है सपना
किसको अपना मीत कहूँ हर चेहरे पे चेहरा तेरा ।

भजन–201

दिल मे बैठा राम रमैया
तुझको नजर ना आए,
पाथर मूरत आप बनाए
उसको शीष झुकाए ।

सुख की खातिर जोड़ी माया
सुख तो हाथ ना आया,
जिस कारण सुख उपजे मन में,
सो ठाकुर बिसराया,
तुझे कैसे कोई समझाए ।

जग की वस्तु थिर नहीं कोई,
पल पल मिटती जाए,
घट घट में जलती जीवन ज्योति,
वो सब में मुसकाए,
क्यों उससे नैन चुराए ।

पाथर की तूने नाव बनाई,
कैसे पार लगेगा
अब से अपना भाग्य जगा ले
जीवन सफल बना ले
वो पल में पार लगाए ।

भजन – 202

दुनिया की दौलत की ना मुझको जरूरत,
दिल में बसी रहे तेरी प्यारी मूरत,
लिख दिया दिल पर नाम मैने आपका ।

भजन–203

दे दी हमें मुक्ति बिना खड़ग बिना ढ़ाल
मेरे कृष्ण के अवतार तुम्हें शत शत प्रणाम

मन था मेरा तृष्ण से भरा इक खिलौना
मुश्किल था हर एक तृष्ण को होनी में बदलना
फिर ज्ञान ने आकर तेरे इक ज्योति जलाई
उस ज्योंति में तृष्ण है मेरे मन की मिटाई
तृष्ण हुई है शांत तेरे ज्ञान का अंजाम

काया थी ये रिश्तों में बंधी एक पहेली
मोह बंधनों में जकड़ी थी ये बन के सहेली
कायरता थी यूं रिश्तों में मुहँ को फेरना
मुश्किल था हमसे गम ये जुदाई का झेलना
मोह खत्म किया तुमने हमे प्यार सिखाया
जुदाई के गम में भी हमें हंसना है सिखाया ।

मन है मेरा चंचल ये करे सब से लड़ाई
अच्छाई को ये भूल के बस देखे बुराई
जीवन में आके तुमने हमें प्रीत सिखाई
आकर के तुमने प्रेम की दृष्टि बनाई
बंदे है तेरे सब में तेरी शक्ति समाई
ना कोई मलाना कोई बुरा सब एक है माई

भजन 204

दुनिया करे सवाल तो हम क्या जवाब दे
उनको ना हो ये ज्ञान तो हम क्या जवाब दे

जिसने नही किया कभी प्रेम प्रभू से
वो कैसे जाने ये दिल हरि भक्तो के
जिसको हुआ है प्रेम तो फिर क्या जवाब दे

इक पल में जग ये मिथ्या कैसे हो गया
जग पूछता है हमको ये ज्ञान कैसे हो गया
मुश्किल है महिमा मान तो हम क्या जवाब दे

जग पूछता है दिल को कहाँ छोड़ आये है
परमात्मा से रिष्ता ऐसा जोड़ आये है
प्रभु ही है बेमिसाल तो हम क्या जवाब दे

भजन 205

दादा तुमसे प्यार कितना ये हम नही जानते
मगर जी नहीं सकते तुम्हारे बिना

षिवोहम् सुनाया हमें अनलहक का मतलब बताया हमे
कहें क्या खुद ही बनाया हमें षिवोहम

काल को भी मारा तूने ये क्या कर दिया
ज्ञान का पिला के अमष्त अमर कर दिया
धर्मराज हारा तुमसे करे है सलाम
काल और विकराल

मुक्ति के पीछे दुनिया पागल हुई
दादा की भी मुक्ति देखो सेवा कर रही
पूछे दादा से कुछ काम तो बता
मुक्ति की युक्ति दादा

ज्ञान के बिखरे मोती लूट मचगई
छादा की तो दुनिया में धूम मच गई
रोतो को हंसाया तूने हमें सब पता
ज्ञान और विज्ञान दाद ये हम ।

भजन 206

दादा तेरा शुकाना तेरे जैसा प्यार कहां
याद करती है दुनिया तेरा ये नजराना

मेरी जिन्दगी संवारी मुझको गले लगाकर
बैठा दिया पलक पर मुझे खाक से उठाकर
मैंने तो तुझे हरदम अपना खुदा माना

बिन मांगे तुझे सत्गुरू सब कुछ दिया है मुझको
आंचल में भर दी है तूने खुशियां जहां की
मैने तो तुझे हरदम अपना खुदा माना

चलू तेरे आदर्शो पर मेरी यही रज़ा है
तुझसा हो मेरा जीवन बस यही इल्तज़ा है
मैने तो तुझे हरदम अपना खुदा माना ।

भजन 207

दादा के मिलने से जीवन मिल गई
एक मुरझाई कली सी खिल गई

क्या चाहेगा अब कोई संसार से
जो जहां की आज खुशियां मिल गई

झूठी दुनियां अब ना मुझको याद है
जबसे नजरे सत्गुरू से मिल गई

माया ने हमको फंसाया था मगर
आत्मा में आज वृक्ति टिक गई

दादा का जब ज्ञान इस मन ने सुना
प्रेम में उसके मै ऐसे खो गई

दादा का एक जैसा सबसे प्यार था
दादा से अपनी अमानत मिल गई

आज का दिन दादा का त्यौहार है
जिसके जीवन की सुगंध फैली गई

भजन–208

दादा जी हर घड़ी मेरे अंग संग है
गिर ना पायेंगे हम जो गुरू संग है

गुरू के प्रेम में छूटता है देह अध्यास
गुरू के प्रेम में गलता है अंहकार
अमर हो जायेंगे हम ज्ञान को लगायेंगें हम

गुरू ने सिखाया है हमको तो निश्काम प्रेम
सबसे प्रेम करके हम, जीवन को बनायेंगे
प्रेम से ही मिलेगी हमको ये मंजिल

गुरू ने दिखाया है हमको तो अपना आदर्श
आदर्श को आगे रखकर हम आगे बढ़ सकते है
गुरू को हम ना भूले मन में निश्चय हो

गुरू की कृपा से है मेरे होठों पे मुस्कान
गुरू की कृपा से है मेरे होठों पे ये गीत
जीत जायेंगे हम जो गुरू का संग है।।

भजन–209

दिखाकर जलवा लुभाया तूने
दीवाना मुझको बनाया तूने

सत्गुरू तुम जादूगर हो बड़ें
सुध बुध खोई चरणों में जो पड़े
प्रेम पंतगा प्रेम पंतगा बनाया तूने

प्यास जो दिल की बुझानी चाही थी
पाके तेरा दर्शन वो और बढ़ गयी
जाने कैसा बाण चलाया तूने

ऐसा तो ना देखा कोई संसार में
नाव जो हमारी खेवे मझधार में
क्षण में ही जो प्यार लगाया तूने

मेरे सत्गुरू तेरी महिमा क्या करूं
तनम न और प्राण सदके करूं
प्रेमा का फंद छुड़ाया तूने।।

भजन–210

देखता हूँ जिधर तू ही तू है,
हर राह में है दीदार तेरा,
कैसे कह दूँ निराकार तुझको,
रूबरू जलवा साकार तेरा ।

जब राज़े हकीकत को जाना,
लुत्फ सजदे में आने लगा है,
आ गया बन्दगी का सलीका,
किया दिल ने जो एतबार तेरा ।

जिस तरफ हो गई ये निगाहें,
उस तरफ चल पड़ा ये जमाना,
बेशुमारो की है जिन्दगानी,
मुस्कुराना ये दिलदार तेरा ।

या अली या मोहम्मद कहूँ मैं,
तुझे नानक कहूँ या मैं मुझको,
कृष्ण, जैसा तू दिखता है मुझको
ये बेनूर करता है तेरा ।

मैं कैसे कहूँ किस जुबां से,
शुक्रिया तेरा बन्दा परवर,
लो बयां ये बयां से पाकर,
ये अहसान उपकार तेरा ।

भजन–211

दिन जवानी का ढला, आई जीवन की शाम
तो कर ले बावरे, हरि चरण का ध्यान,

खाने पीने खेलने खाने में जिंदगी बर्बाद की
एक पल भी बैठकर ना गुरू की बाते याद की
आज कल करते हुए बीती उम्र तमाम

जिस जवानी के नशे में भूला तू अपनी बात है
दो दिन की चाँदनी है फिर अंधेरी रात है
खो जाएगे यही सब मान, शौकत, षान

सैज फूलों की बिछाकर चैन से खुश हो रहा
डीरा जैसा जन्म पाकर विशयों मे

भजन–212

दुनिया एक सराय है,
और दो दिन की जिन्दगानी,
झूठी माया में फँसे हुए है,
सच्ची बात न जानी,

सच्ची बात दो मेरे राम जी,
सपने से जगा दो,
भव से पार लगा दो ।

ध

भजन–213

धरती अम्बर में तुम दिल के अंदर में तुम
फूल पत्थर में तुम हर समन्दर में तुम
मै जिधर देखती हूँ हर कण–कण में तुम
भक्तों के दिल की मंदिर की मूरत में तुम

अब हर जलवे में तेरी ही तस्वीर है
तुमको देखा तो दिल ने ये आवाज दी
प्रगट सत्गुरू ये नानक की ज्योति है
हर समय मेरी आंखों में समाये हो तुम
माया ही मुझसे नजर चुराने लगी।।

यू तो दुनिया में देखे है लाखों गुरू
पर तुमसा मिला कोई रहबर नही
प्रभु पाने की दिल में लगन थी बड़ी
पर सत्य किसी ने बताया नहीं
मैने जीवन में बरसों तलाशा जिसे
तुम वही मेरे दिलवर मेरे पीर हो।।

लोभी बनके मैं फंसता रहा जगत में
और आनन्द जीवन जब खो दिया
धन यौवन के जोष में मनमानी करी
और सत्य वचनों से मै विमुख रहा।।

भजन–214

धरती पे आया निराकार दादा तेरे रूप में,
हमको तो मिला भगवान दादा तेरे रूप में,

जिसने तुझको ध्याय भ्रम भेद मितया,
दर्शन तेरा जो पाया अपना आप भुलाया,
ओ हमको तो चढ़ी मस्ती तेरा दीदार करके,

ज्ञान तेरा सबसे, निराला भीतर किया उजाला,
प्रेम तेरा निष्काम वाला, खाली दिलो को भर डाला,
तेरे ही चरणो में हमने तो पायी मुक्ति है ।

रोते हुए को हँसाया, गिरते हुए को उठाया,
दर पर जो तेरे आया भव से पार लगाया,
तेरे ही भ्रम से तो चलता है सारा जहाँ।

न

भजन–215

नाचो प्रेमी बाजे रे हठीले रंग रसिया
और बजाओ चंग कि गुरूदेव आए है

षुभ दिन आया भक्तों षुभ दिन आया
झूम ये मेरा मन झूमे जमाना

खुषियों से गाए प्रेमी गाए तराना
आओं भक्तों खेले होली, डाल के हम तुम
गुरू प्रेम का रंग .... ।।

गुरू जो आए जगे भाग्य हमारे
शबरी मीरा के जैसे हमको भी तारे
तुम्हीं हो हमरे राम कान्हा हो प्यारे
राम जो पधारे तो मनाए हम दीवाली
प्रेमियों के संग.............. ।।

भजन–216

नाम तेरा मेरे सत्गुरू स्वामी सुखों का भंडार है
तेरे ज्ञान की महिमा फैली सब संसार है

संदर प्यारा नाम तुम्हारा जिस दिल में बस जाये
करके दिल में ज्ञान उजाला, नम को दूर भगाये
पाक साफ वह मनुआ रहता, होते दूर विकार
ऐसा प्यारा नाम तुम्हारा महिमा अपरम्पार।।

नाम प्रभु का ऐ प्राणी–प्राणी स्वांस में जपना
मिट जायेगी तेरे दिल की सब गम, चिंता कल्पना
जीवन में फिर पायेगा तू प्राणी सुख अपार
बाकी सबसे तोड़ के रिश्ते नाम से ही कर प्यार।।

सब संतों ने निज मुख से प्रभु नाम की महिमा
गायी है, जन्म–जन्म के मैले मन की करता
नाम सफाई है, नाम सुमिर के लाखों प्राणी हो
गये भव से पार, मिट गयी आवागमन का
चक्कर पहुँचे प्रभु दरबार।।

प्रभु नाम की दौलत दासा पल–पल में कमाना
लूट सके ना कोई इसको ऐसा अखुट खजाना
इससे बढ़कर और ना कोई दुनिया में धन सार
नाम ही लोक परलोक का साथी बाकी है सब छार

भजन–217

नित पाऊँ मैं दर्शन तेरा सत्गुरू पाऊँ मै तेरा

झूठी जग की माया सत्गुरू तुमसे प्रेम लगाया
सुना के अपनी वाणी तूने दुख अज्ञान मिटाया है
ज्ञान देता ये मन में हरदम पहरा ।।

ज्ञानी ध्यानी सब ही तेरे द्वारे शीष झुकाते
सत्संग में तेरे चरणों में आ सब ही प्रीत लगाते
तेरी वाणी में डूबी मै गाऊँ गीत तेरा ।।

तूने ऐसा ज्ञान सुनाया, जीवन आके मेरा बनाया
इच्छा चाह रही ना कोई, रंक से राजा बनाया

ऐसी पिलाई प्रेम की मस्ती झूमे मन मेरा ।।

दर पर तेरे आकर सत्गुरू बदल गयी तकदीर
ज्ञान खजाना तुमसे पाया दिल में बसी तस्वीर
सत्गुरू तूने मिटा दिया है जीव भाव ये मेरा ।।

भजन–218

निस्वार्थ प्रेम का कैसा है ये बन्धन अनजाना,
मैंने उसे जाना हाँ उसे पहचाना ।

गुरू डोर खींचे हम दौड़े चल आये,
मन की डोरी से बन्धे चले आए,
जैसे शंमा मं मखाना,
मैने उसे जाना हाँ उसे पहचाना ।

इस मन की बातों ने जब भी रूलाया,
सब राह भटकी तो गुरू ने संभाला,
गुरू ही है मेरा जीवन सहारा
मैने उसे जाना हाँ उसे पहचाना ।

सत्गुरू प्रेम में इतना भिगोये,
कि माया की आग हमे छू भी न पाये,
अब तो गुरू में ही है समाना,
मैने उसे जाना हाँ उसे पहचाना ।

भजन–219

नजर से प्यार छलकाओ सभी गम भूल जायेंगें
जुंबा से रागिनी गाओ सभी गम भूल जायेंगे ।

जगत के झूठे नाते है सभी कुछ ख्वाब होता है
जिसे तू मान कर बैठा सहारे छूट जायेंगे ।

तेरी ये जिंदगी मालिक की है ये क्यों भूलता है
ये दिन और रात दोहराओ सभी गम भूल जायेंगे ।

मिले जो ज्ञान की दौलत इसे धड़कन में रखना
जो पहले से लुटा तुझ पर जगत क्या लूट पायेंगे ।

खुदा ये तेरी रहमत को भला मैं नाम क्या दूं
अगर अब साथ छोड़ा तो प्रभु हम रूठ जायेंगें ।।

भजन–220

ना मिले संसार तेरा प्यार तो हमारा है
एक तेरा साथ हमको दो जहाँ से प्यारा है

दिल एक मंदिर है तू उसकी मूरत है
तुम्हीं से प्यार हुआ है
तू जो आता है दिल झूमने लगता
और आंखें झुक जाती हैं
तेरा मेरा प्यार युग–युग को पुराना है ।

देखा या तुमको एक बार जो मैने
उस दिन से होष नहीं है
ये प्रेम की डोरी जो तुमने जोड़ी है
उसे मैं तोड़ ना पाऊँ
एक दिन भी तू ना मिले
सौ साल सा वो लगता है ।।

भजन–221

नारायण जिसके हृदय में
सो कुछ कर्म करें ना करें

सूरज को जब प्रकाष होवत
फिर दीपक ज्योति जले ना जले

नाव मिली जिसको जल माहि
सो बाहों से नीर तरे ना तरे

पारस्स माठी जिसके घर माहि
सो धन संचय करे ना करे

ब्रह्मानन्द को जिन जान्यो
सो काषी में जाए मरे ना मरें ।।

भजन–222

नींद से अब जाग बंदे
राम में अब मन लगा
निर्गुणा से लाग बंदे
है वही परमात्मा

हो गई है भोर कब से
ज्ञान का सूरज उगा
जा रही हर ष्वांस वृथा
साई सुमिरन में लगा

फिर ना पाएगा तू अवसर
कर ले अपना तू भला
स्वप्न के बंधन है झूठे
मोह से मन को छुड़ा

धार ले सतनाम साखी
बंदगी कर ले जरा
नयन जो उल्टे कबीरा
साई तो सन्मुख खड़ा ।।

प

भजन–223

पीयो रे राम रस है कोई प्यासा
पीयो रे पीयो राम रस पीयो

जिस दिल में प्रभु प्रेम नही है
वो दिल तो सूनी सूनी है
प्रेम बिना दिल रहे उदासा

सत्गुरू है मेरा प्रेम का सागर
बूंद से भर लो खाली गागर
तुम भी कर लो पूरी आशा

जन्मों से दे प्यास सभी को
फिर भी है अभिमान सभी को
प्रेम बिना अभिमान ना जाता

प्रेम तो खुद ही है परमात्मा
हर एक दिल में है जो आत्म
प्रेम से भूल देह अध्यासा

भजन–224

पूरी मुरादे है सभी मेरे दिल की,
हुआ जीवन सफल मेरा,
मिटी हलचल मन की, षुकाने तेरे है जो रहमत,
तेरी हो गई इक तुझमें ही खो जाऊँ ,
तुम ही मेरे नंद किषोर ।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

भजन–225

पी लेना गुरू नाम का प्याला,
सारे रोग मिट जाएगे,
गुरूदेव, गुरूदेव, गुरूदेव, गुरूदेव, हरि ओम्।

अमृतवाणी दी है गुरू ने, सफल किया जीवन मेरा,
ऐसे गुरू को दण्डवत कीजै सारे रोग मिट जाऐगे।

गुरू ही शक्ति, गुरू ही भक्ति गुरू ही श्रदा विश्वास है,
ऐसे गुरू को मन से बसा लो, सारे रोग मिट जाएगे

ऐसी मस्तीं दीन्ही गुरू ने खुद को मैं तो भूल गई,
तन मन धन सब अर्पण कीजै सारे रोग मिट जाएगें।

भजन–226

पवन है ये गुरू हमारा
इसकी जय जयकार करें
निर्बल का वो बल है यारा
इसकी जय जयकार करें

गुरू हमारा बड़ा महान
बुद्धियों को देता ज्ञान
पतियो के वो बचाता प्राण
इसकी जय जयकार करें

दीन दुखियों का वो दाता
भटके हुओं को राह दिखाता
सीधे मार्ग पर हमे चलाता

इसकी महिमा अपरम्पार
मानों इसे अपना आधार
देता सबको प्यार ही प्यार

भजन–227

पीनी है तो हरि नाम वाली पी
कौन तुझे रोकता है सुबह शाम पी

मीरा ने पी ये कमाल हो गया,
प्याले विच ष्याम जी का दीदार हो गया

द्रौपदी ने पी ये कमाल हो गया,
साड़ी विच श्याम जी का दीदार हो गया

भीलनी ने पी ये कमाल हो गया,
बेश विच श्याम जी का दीदार हो गया

केवट ने पी ये कमाल हो गया,
नाव विच श्याम जी का दीदार हो गया

हनुमन ने पी ये कमाल हो गया,
हृदय विच श्याम जी का दीदार हो गया

सत्संग में ये कमाल हो गया,
सामने ही गुरां का जी का दीदार हो गया

भजन–228

प्यारे गीता भगवान ने हमको समझाया है
जग के हर प्राणी में उसका नूर समाया है

हम ढूंढते थे प्रभु को मंदिर गुरूद्वारे में
मथुरा की गलियों में काशी के चौबारे नें
घट–घट वासी प्रभु का घट में दर्श कराया है

देह में आसक्ति थी आत्मा को ना जाना था
करने कटती चौरासी मुक्ति को ना जाना था
पर तेरी कृपा से भगवन, आवागमन मिटाया है

ओम की जब बंशी सुनी मन मयूर नाच उठा
तेरे वचनों को सुनकर सोया मनवा जाग उठा
शुक्रानों में भगवन, इस सर को झुकाया है

गुणगान करें तो रसना को ना शक्ति है
तन तेरी अमानत है मन में तेरी भक्ति है
नैनों छवि तेरी सिर पर तेरा साया है।

भजन–229

पता नहीं कैसे लग जाती है खबर
श्याम चले आते हैं प्रेमियों के घर

प्रेमियों का घर ष्याम छोड़ते नहीं
प्रेमियों का दिल श्याम तोड़ते नहीं
प्रेमियों को ढूंढ़ती है उनकी नजर

दुनिया में ऐसा नही यार दिलदार
प्यार करो बदले में देता है प्यार
संवरे पे होता देखो प्यार का असर

ढूंढ़ लिया खोज लिया सारा जहाँ
प्रेमियों के घर मिले कदमों का निशां
प्रेमियों ना भटको इधर उधर ....

कष्ष्ण नाम जप लो तुम करो फरियाद
देते हैं तब प्रभु अपना दीदार
करूणा से भरी हुई उनकी नजर ।।

भजन–230

पल पल बीत रहा है जीवन
काहे करे अभिमान रे
राम जपो हरिनाम जपो
तू दो दिन का मेहमान रे

तू आया जग हंसता
आते ही अंसुवन बोए
अब जाना है ऐसे जा
तू जाए और जग रोए
ज्ञान की राह पे चलती चल
तू जीवन है महान रे

खाली हाथ ही आया था
खाली हाथ ही जाना है
उसका सफल होगा जीवन
जिसने उसे पहचाना है
सांझ सवेरे निषादिन कर
तू उसी का ध्यान रे

भजन–231

पूरी मुरादे है सभी मेरे दिल की हुआ जीवन सफल मेरा,
मिटी हलचल मन की, चुकाने तेरे है जो रहमत,
तेरी हो गई इक तुझमें ही खो जाऊँ
तुम ही मेरे नंद किषोर ।

ऽऽऽऽऽऽऽ

प्र

भजन–232

प्रभु को नहीं देखा हमने कभी पर इसकी जरूरत क्या होगी
ए गुरू तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी

क्यों धूप सताये दुखों की, क्यों गम की घटा बरसे
ये हाथ है ज्ञान वाले, रहते है सदा सिर पे ओ
तू है तो अंधेरे पथ में नहीं, सूरज की जरूरत क्या होगी

इंसान तो क्या देवता भी चरणों में झुके तेरे
है स्वर्ग इसी दुनिया में, कदमों के तले तेरे
हर कोई लुटाये तुझपे नयन
ऐसी कोई मूरत कोई होगी।।

कहते हैं तेरी षान में तो काई ऊँचा बोल नहीं
भगवान के पास भी गुरूवर तेरे प्यार का मोल नहीं
हम तो यही जाने तुझसे बड़ी
संसार की दौलत क्या होगी ।।

भजन–233

प्रभु तूने ये कैसी कनात बांधी
हर सुबह के साथ एक रात,
बांधी साथ साथ बांधी

वो जो थकते नही है तेरे घेटे,
जो तूने सूरज के साथ है जोड़े
चांद दूल्हा बना व्याह रचाने चला,
साथ तारो की सुंदर बरात भी चली

जीव जन्तु जो तूने बनाये,
सबके सुंदर ही रूप सजाये
राम ओर रागिनी नाग और नागिनी,
हर जाति के साथ एक जात बांधी

कैसे खूबी को बांधे है मौसम
हेम वर्शा शिषिर और ग्रीष्म
कमी हवाये भी है कमी फिजायें भी है
हर ऋतु के साथ एक ऋतु बांधी

है ईश्वर अजब तेरी माया
तेरा मंद किसी ने ना पाया
तू जग में हाजिर भी है जग से बाहर भी है
कण कण में कैसी बरसात बांधी

भजन–234

प्रभु की लगन में दिन रात बीत जायें
ऐसी लगन लगे जो, फिर होश ही ना आयें

हमको ये जीवन मिली है, प्रभु पाने के लिये ही
उसने प्रभु को पाया, जिसने खुदी मिटाई

प्रभु पाने के लिए तो पहले प्रेम है जरूरी
या तो प्रभु का बन जा, या प्रभु को अपना बना ले

जिस जीवन को चाह नहीं है झूठे पदार्थों की
उसका तो मन प्रभु के रूप में ही खो गया है।।

भजन–235

प्रभु विश्वास जो इंसान किया करते हैं
उसकी रक्षा सदा भगवान किया करते हैं
प्रेम से जो प्रभु का नाम लिया करते हैं
उसका तोक हर काम भगवान करते हैं

प्रभु तो दूर नहीं हर घर में ही समाया है,
मगर ना प्रेम बिना कोई
उसे पाया है, सभी के मन की वह,
पहचान किया करते हैं

गीता में अर्जुन से भगवान यही कहते हैं
अनन्य भाव से जो चिंतन किया करते हैं
सदा निष्काम भाव से जो मुझे भजते हैं
उसका सब योग क्षेम हम तो ग्रहण करते हैं
वही निश्चिन्त हो जीवन में दिया करते हैं

वही मल्लाह है मझधार है पतवार वही
वही है सच्चा सहारा, सही आकार वही
बन के अर्जुन तू कन्हैया का सहारा ले
उसी के हाथों में जीवन तू ये सारा दे दे
वही तो सबको भव पार किया करते हैं

भजन–236

प्रभु मिलन की मस्तियो में झूमता दिल गा रहा
पाना था सो पा लिया अब और क्या बाली रहा

हो गया जब प्रभु ही अपना तो ना कोई गैर है
सारी दुनियां अपनी है, अपना ना किसी से बैर है
प्राण सागर मन की गागर में सझाता जा रहा

मस्ती मौलाई में हैं दौलत मिली प्रभू प्रेम की
अब रही किस काम की, ये सल्तनत संसार की
ज़िन्दगी जीने का हमको है मजा अब आ रहा

ऐसा साथी जिसका होगा रह सका जो साथ में
भव से पार लगा दे नैया स्वर्ग दे सौगात मे
एक समुन्दर प्यार का है आखों में लहरा रहा

भजन–237

प्रेम की अगन हो भक्ति सघन हो
मन में लगन हो तो प्रभु मिल जायेगे

हृदय में भाव हो अनुपम की छांव हो
आराधन का दांव हो तो मन खिल जायेगे

श्रद्धा की जोत हो मन में ना खोट हो
करूणा का स्रोत हो तो प्रभु श्री आऐगे

चरणो की चाह हो भक्ति प्रवाह हो
पूजा की राह हो तो प्रभु हर्शऐगे

भजनों के बोल हो, भाव अनमोल हो
अर्चन के मोल हो तो प्रभु मुस्काऐगे

नारायण धन हो छवि में मगन हो
अर्चन वंदन हो तो प्रभु दरसायेगे

भजन–238

प्रेमी के दिल में कोई तमन्ना नही,
मुझको पानी जहॉं से मोहब्बत नही,

आज वरदान इतना दो सत्गुरू,
बनकर सेवक सदा जग में आता रहूँ।

भजन–239

प्रेम में खिचकर द्वार पे तेरे,
मैं आया मेरे राम जी,
अब तो दरस दिखा दो, मेरे राम जी,
ओ, मुझको मिला दो, मेरे राम जी ।

मिटष्टी में मिल जाएगी,
काया का क्या मोल,
देख अमर है आत्मा तेरी,
मन की आँखे खोल,
मन की आँख खुला दो, मेरे राम जी,
सपने से जगा दो, मेरे राम जी ।

रूप के माया जाल में उलझा,
ये सारा संसार,
लेकिन किसी ने दे न जाना,
सच्चा रूप है तन के पार,
मुझको मिला दो, मेरे राम जी ।

भजन–240

प्रियतम मेरे रहबर मेरे आए है आज
बहारे लेकर नजारे लेकर
रहबर अपना प्यारा अंखियों का तारा
मस्ती में हम झूमें आज झूमें जमाना ।

तुमने हमको चाहा हमको ज्ञान दिया
सब कुछ अपना तुमने हम पर वार दिया
होकर तेरी तुझसे प्रीत का भंग लिया
तुझे सोचा तुझे समझा तुझको रब माना
प्रभुवर मेरा प्यारा तू ही सहारा

मन मन्दिर को सूरत तेरी भाई है
तेरे प्यार में जीवन जोत जलाई है
तुझको पाकर किस्मत अपनी चमकी है
सत्गुरू तुमको पाकर मिली खुदाई है
रहवर अपना प्यारा तू ही सहारा

भजन–241

प्रभु अपने दीवानों पर कुछ कर्म कर्मा होना
जिस दिन में तुझे भूलूं दुनिया से उठा लेना

संतान हूँ मैं तेरी चौखट पे खड़ा हूँ मैं
कभी नजरें पड़े तेरी चरणों से लगा लेना

भूले से कभी तुझको अभिमान की बू आये
तुझे कसम फकीरे की मेरा कंठ दबा देना

चाहता हूँ मैं तुझको चाहत ही तो ऐसी है
कुछ दिल में दर्द देना कुछ दर्दे दबा देना

मैं दास हूँ तेरा जी मुझे दास ही रहना है
तू अपने गुलामों में मेरा नाम लिखा देना ।।

भजन–242

प्रेमी रे तू बुकाने गा पूरण गुरू के
सत्गुरू से मिल के हुआ जन्म सफल रे

मेरे सत्गुरू ने दिया देखो आत्म निष्चय रे
इसमें रह के देखो प्रेमी झूमे मेरा जिया रे
सुख ना मासे दुख ना मासे आनंद में रहे

मेरे सत्गुरू ने दिया देखो प्रेम प्याला रे
जिसे पी के देखो मन हुआ मतवाला रे
प्रेम करे ज्ञान सुने आनंद में रहे ।।

मेरे सत्गुरू की देखो कैसा निश्कामी रे
बिना भेदभाव के दे सबका ज्ञान रे
प्रेम करे ध्यान रखे जीवन बदल रे ।।

भजन–243

प्रम ही ईष है पावे जो दे षीष है,
सर्व से प्रेम होवे ना खोना ये द्वेश में,
प्रेम खजाना जो दिल पावे जग उसका,
दीवाना ।

भजन–244

प्रभु का ये जग सुन्दर मगर
मन को पावन कर लो जीवन सफल कर लो

ये जग नहीं सच है एक सपना, सपने की नगरी को
कहना ना अपना, संसार में रहते हुये प्रभु का
भजन कर लो

मै सतचित्त मेरी माया है झूठी
कुछ भी पता नहीं श्रद्धा थी रूठी
ये जन्म है प्रभु के लिए, गुरू का वचन ले लो

गुरू ज्ञान ही अब जीवन है अपना
बिन ज्ञान के अब जीना है मरना
ब्रह्म ज्ञान है जीवन मेरा ऐसी कसम ले लो

जो सत्गुरू ने पिलाया है अमृत
जिसने पिया उसकी बन गयी किस्मत
आत्म रस को पीते हुये गुरू को नमन कर लो ।।

भजन–245

प्रभु चिंतन करो प्रभु प्यारे,
दो घड़ी मन प्रभु में लगा लो
श्वांस की हर लड़ी कीमती है,
व्यर्थ जाने से इसको बचा लो

हर तरफ से मन को हटाकर देखो,
परमात्मा में लगाकर मन में खुशियों भर जायेगा
आचरण में जरा देखो लाकर,
ज्ञान मंथन कराओ दुलारे
ज्ञान का दीप मन में जला लो।

अपनी अंदर की ज्योति जलाकर,
प्रभु शांति की किरणें फैलाओ
ये जन्म अब सफल हो हमारा,
अपने जीवन को सुखमय बनाओ

आत्म चिंतन करो ओ दुलारे
प्यास जन्मों की अपनी बुझा लो ।।

भजन–246

प्रभु मेरे जीवन को कुंदन बना दे
कोई खोट इसमें रहने ना पाये

करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला, हर श्वांस हो तेरे चिंतन की माला
मेरे दिल की दुनिया को इतना बदल दो जो दुनिया तेरी मुझको गले लगा ले......

लताओं के रून झुन पवन के तराने
बारिश की रिमझिम और वृक्षों के गाने
नजर जिस तरफ जायें, भगवान मेरी
अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कराये

जगत को मैं तेरा परिवार समझूं
परिवार को तेरा उपकार समझूं
कुसंग लोभ अभिमान द्वेश और आलस्य
कोई इनमें मुझको सताने ना पाये ।।

भजन–247

प्रेम जब गुरू से हो गया, समझ खेल शुरू हो गया
ऐसा मुझ जब से हो गया, समझ खेल शुरू हो गया

संसार फीका लागे, हरिनाम मीठा लागे ऐसा मुझे जब..

आत्म ज्ञान आने लगा नाम रूप जाने लगा ऐसा मुझे.....

आंखों से आंसू बहे वाणी से कुछ ना कहे ऐसा मुझे.....

मुख में तू सोया नहीं दुख में तू रोया नही ऐसा मुझे.....

तू समझदार होने लगा रोते–रोते हंसने लगा ऐसा मुझे.....

काम क्रोध त्यागे नहीं राग द्वेश मासे नहीं ऐसा मुझे.......

भजन–248

प्रेम रस बरसयो री आज मोरे अंगना में 3

जागे गये सब सोये सपने, सभी पराये हो गये अपने
लगे प्रेम की माला जपने, अंग–अंग हंसयो री.....

धरती नाचे अम्बर नाचा, आज देवता भी है नाचा
मैं नाची जग सारा नाचा, अंग–अंग हर्शयो री......

आज सखी पिया घर को आये, कहाँ बिठाऊँ मोहे समझना
आये, अंग–अंग ....

ठुमक–ठुमक मोरी पायल बाजे अगल बगल मोरे राम विराजे
प्रेमी को तो प्रेम ही साजे, बहुत दिन बरसयो री........

रूक गयी रात ठहर गया चन्दा साधो मंगल मौज आनंदा
तू निर्दोश अरे क्यों मंदा, बहुत दिन बरसयो..........

भजन–249

प्रेमी के दिल में कोई तमन्ना नही,
मुझको पानी जहॉ से मोहब्बत नही,

आज वरदान इतना दो सत्गुरू,
बनकर सेवक सदा जग में आता रहूँ।

भजन–250

प्रीत की बांधी तुम संग डोर, मन ना करे अब कोई शोर
सकल द्वार बंद करके देखा, दिल में बैठा है चित्त चोर
तोड़ दिये सारे बंधन को, अब ना चले इस मन का जोर
अज्ञान अंधेरा दूर किया जीवन में हुई नई मोर.....

कहूँ मैं क्या इस मुख से, जुंबा को ना ताकत है
तेरी महिमा में सत्गुरू जी, सिर झुक जाता है
लोक लाज का घूंघट सत्गुरू तुमने ही खोला
मैं मेरे का घेरा सत्गुरू तुमने ही तोड़ा ओर.....

तेरे जैसा कामिल मुर्शिद नही कोई दुनिया में
जो अपने प्रेम के रंगों से जीवन रंगता है....2
मैत्री करूणा मुदिता जीवन में है लाई
श्रद्धा, प्रेम, भक्ति से जीवन है सजाई
तेरा पावन प्रेम पाकर तेरे प्यार में ऐसे
जुड़ गये जैसे जुड़े पतंग संग डोर
इरादा महक में रखकर जो तेरे दर आते हैं
लगन प्रेम और भक्ति से तुम्हें पा जाते हैं

खुदी को गंवाकर जो सत्य की राहों पर चला
पीछे मुड़कर ना देखे आगे ही आगे बढ़ा
सत्गुरू को आगे रखकर ले हाथ में ज्ञान ज्योति
वो पहुँचे मंजिल की ओर ....

फ

भजन–251

फूल बिखरावा तेरे सदके जावां
नचा गावां नाले षगन मनावां
हो तेरा दर्षन पाके सत्गुरू
मैं ता तर गईया, आईया रौनका
हुण आईया रौनका

दौडी दौड़ी आवा, सारी दुनियां छोड़ के
होर ना किदरे जावां तेरा दर देख के

बाग दिया सब कलिया
वैनू देख के खिलिया
दिल नू खोच के ले गई
तेरी प्रेम मुरलिया

सपना तेरे मिलन दा अण हो गया पूरा
होर ना मेरे दिल विच कोई ख्वाब अधूरा

ब

भजन–252

बार बार ये जन्म ना आता जोड़ले प्यारे राम से नाता
जो करना है आज ही कर ले, देख समय ये बीता जाता

कभी ना सोचा है, कभी ना जाना है
कहाँ है मंजिल तो कहाँ ठिकाना है
मोह माया में ऐसा भटका भूला सृजनहार
देख तुझे सत्गुरू है जगाता जोड़

मिली ये श्वांसे जो लगा ले सुमिरन में
चदरियां जीवन की रंगा ले भक्ति में
राम नाम बिन और ना कोई जीवन का आधार
अंत समय कुछ साथ ना जाना जोड़

अदालत रब की है सभी को जाना है
हिसाब अपना अपना सभी को चुकाना है
सोच समय ले कुछ तो प्राणी कर ले कुछ विचार
हरि सुमिरन से कट जाये खाता जोड़

भजन–253

बाजे मन में मेरे शहनाई
सत्गुरू आज घर आयो रे आ रा रा रा रा

लगी प्रेम लगन ऐसी कि जल गयो तनम न मेरो रे

मिला हमें राम कलियुग में कि भाग्यों रावण मन मेरी

आओ झूमे नाचे हम गुरू हमे आज मिल गयो रे

खुशी जिसे पानी है जग में गुरू चरणो मे आ जाओ।

भजन–254

बरसा दादा सुख बरसा आंगन सुख बरसा
चुन कांटे नफरत के, प्यार अमन के फूल खिला

कोई तन से है मन से है दुखी
है प्रभु दया करो, कुल जहान हो सुखी

रागद्वेश को मिटा तू सकल संसार से
इस जहान में रहे, मिल के सारे प्यार से
मानव से मानव ना हो जुदा

झोलियाँ सुखों से तू चाहे दादा मर भी दे
पर गीता भगवन हमें सब्र और षुक दे
हर पल मांगे ये ही दुआ आंगन

भजन–255

बाजी रे मुरलियां हौले हौले
श्याम की मुरली में म्हारो मन डोले

जब जब थारी मुरली बाजे
सुध बुध में बिसराऊ
भूल जाऊँ मैं सारे गम को दौड़ी दौड़ी आऊँ
मीठी मीठी मुरली की धुन रस घोले

वंशी तेरी सबको प्यारी
गुण इसके है विरले
तेरी वंशी सुनकर आए दौड़ के सब मतवाले
कान्हा रास रचाये मेरो मन डोले

तेरी मुरली सुन सुन के तो राधा हुई मतवारी
धरती झूमे, अम्बर झूमे, सब दर चढ़ी सुमारी
झूमें ब्रहमा विष्णु और बम भोले

मैने मन का मीत है पाया
वंशी यही सुनाये
कान्हा के संग इत उत डोले
मन नही मन इतराये
मै भी बन जाती मुरली मन बोले

भ

भजन–256

भर दे रे श्याम झोली भर दे ना बहला बातो से

मैं नादान हूँ अंजान हूँ श्याम तू ही तो मेरा भगवान है
मै वो चाहूँ तुझे पाऊँ मेरे दिल का यही अरमान है
पढ़ ले रे श्याम अब तो पढ़ ले दिल का हाल आखो से

मेरी नैया ओ कन्हैया पार कर दे तू बन के खिवैया
ओ हर जाई ओ वंशी बजैया
ले ले रे श्याम अब तो ले ले मेरा हाथ हाथो में

मै हूँ तेरी तू है मेरा मैने डाला है तेर दर पे डेरा
मुझे आस है विश्वास है, श्याम भर देगा दामन तू मेरा
झूमे रे श्याम अब तो झूमे मेरा मन चरणो मे

भजन–257

भगवान की हर चीज है जायेगी एक दिन
है उसकी अमानत तो वो मांगेगा एक दिन
देते हुये तेरी आंखो में तेरे अश्क क्यों आये
दुनिया में जो आये तो वो एक दिन तो है जाये
सृष्टि का दस्तूर तो सब को है निभाना
अनमोल है हर पल तू ना व्यर्थ गंवाना

आधार क्यो तू खोजता है और किसी का
क्यों ढूढता है तू सहारा और
आधार की ज्योति तो तेरे खुद में ही छाई
उस शक्ति को महसूस कर जो तुझमें समाई
उस शक्ति का तू साथ लेकर चलता चल
तेरा मेरा पीछे घूटा राही बढ़ता चला चल ।

भजन –258

भूल जा सारी दुनिया को मस्ताना होता जा,
हर खुशी से हर गम से बेगाना होता जा ।

रहो तुम जगत में लेकिन बचो कर्म से,
लोभ मोह ममता मिटा के अपने मन से,
फिर गुरू का शुक्राना तू करता जा ।

जगत तुमसे कहे माया में आ जा,
डूब जा रसो में अरे मजा ले मजा,
तो नहीं सुनता जिसको गुरू पाना होता है,
हर खुशी से हर गम से बेगाना होता जा ।

सुनो मेरे दादा ने ये कहा बहुत खूब,
भूल जा जगत को लेकिन हरि को न भूल,
भव पार ले जाऊँगा तुझे ले जाना ही होगा,
हर खुशी से हर गम से बेगाना होता जा ।

भजन–259

भक्ति की शक्ति को दुनियां ना समझ पाती
भक्ति मे वो शक्ति है, प्रभु को ही बुला ला तो

शबरी अहिल्या ने कितना इंतजार किया
अवतार लिया प्रभु ने उनका उद्धार किया
आते है वहां भगवन जहां भक्ति प्रगट होती

ध्रुव मीरा प्रहलाद ने जितन ही कष्ट सहे
लेकिन ना तजी भक्ति चाहे जितने जुल्म सहे
भक्ति की ऐसी मिसाल, हमको यही बतलाती

तुलसी सूर सभी पद छन्द मे गान करे
तुलसी सूर सभी प्रभु का यशगान करे
भक्ति की अमर रचना सारी दुनिया है गावो

जिसने भी बुलाया उसे वो दौड़ के आया है
अपने भक्तो का मान, प्रभु ने ही बढ़ाया है
है भक्त उसे प्यारे भक्ति ही उसे भाति

भजन–260

भूला मन काहे को डेरा जमाये
घड़ी दा भरोसा नइयो की वण जायें

देह रूपी मंदिर बंदे कंच दा गिलास है
जित्ते उते रख बैठा, बरसों की आस है
पता नहीं केदे वेले ठोकर खाये

वधियाँ तो वधियाँ तेरे सूट ते साडियाँ
रहन लई बनाइयाँ बंदे महल ते माणियाँ
पता नहीं केदे बेले काल आ जाये

बड्डे–बड्डे जांदे देखो राजा तो रानियाँ
जिन्हा दिया मुक गइयाँ नाम ते निषानियाँ
लखा इस धरती ने खाक मिलाये

छड़ दे कुसंग मन सत्संग कर ले
मिठियाँ फलां दके नाल झोलियाँ तू भर ले
अंत दे बेले तेरे एहो काम आये ।।

म

भजन–261

मन रे तू काहे न धीर–धरे
ओ निर्मोही मोह न जाने
जिनका मोह करे......मन रे.......

इस जीवन की चटती ढलती
धूप को किसने बाँधा
रंग पे किसने पहरे डाले
रूप को किसने बाँधा
काहे जतन करे ।

उतना ही उपकरा समझ कोई
जितना साथ निभा दे
जन्म मरण का खेल है जीवन
ये सपना विसरा दे
कोई न संग मरे
मन रे तू काहे न धीर धरे

भजन–262

मिली तुम्हें ये जिन्दगी, कर खुदा की बन्दगी,
जो ये भी काम न किया, जिया किसके लिया जिया।

जरा तो सोच तू विचार, मिलती नहीं ये बार–बार,
लाखों जन्म गंवाओगे, मिलेगी तब ये एक बार।

धर्म दान सब किया, जुबां से नाम भी लिया,
जो ये भी काम न किया, जिया तो किसके लिया जिया।

तुम करके वायदे आये थे, क्या एक भी निभाये हो,
अनमोल बना के आये थे, अब खाक बन के ज़ाओगे।

ईश्वर का साथ जो किया जीवन का न बुझा दिया।
जो ये भी काम न किया, जिया तो किसके लिया जिया।

भजन–263

मेरे हालात सुधरे है तेरे दरबार में आकर
मेरे दिन रात सुधरे है तेरे दरबार में आकर

ना ही हम प्यार करते थे, ना ही सत्कार करते थे
सिर्फ तकरार करते थे हाँ सौ–सौ बार करते थे

तुम्हारा ये जहाँ हमको कभी ना रास आया
खुशी का कोई भी मंजर हमारे पास ना आया
कि अब जजबात सुधरे हैं, तेरे दरबार

इलाही दान पाकर हम तो अब खुश हाल रहते हैं
सभी से प्यार मिलता है यूं मालोमाल रहते हैं
मिली सौगात सुधरे हैं तेरे दरबार......

भजन–264

मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से
आदमी बनता है इंसान बड़ी मुश्किल से

धर्म की राहों पे चलना कोई आसान नहीं
सत्य की होती है पहचान बड़ी मुश्किल से

प्रेम का जाम पिया जाता है सिर को देकर
तब कहीं मिलते हैं भगवान बड़ी मुश्किल से

मैं की मस्ती से बढ़कर है खुदा की मस्ती
होश में आता है इंसान बड़ी मुश्किल से

छोड़ना सरल है घर का धन का और जन का
छूट सकता है मगर मान बड़ी मुश्किल से

ढूंढ़ने वाले को मिल जाते हैं सत्गुरू लेकिन
आंखें कर सकती हैं पहचान बड़ी मुश्किल से

गुरू गुण गाले बंदे जिन्दगी बरबाद ना कर
मानव चोला मिलता है इक बार बड़ी मुश्किल से

भजन–265

मुझको जमीं आसमां मिल गए
गुरू क्या मिल भगवान मिल गए

कितना बेरूखा था जीवन कितनी बेबसी
रूठ ही गई थी मुझसे कब की हर खुशी
रहम हो गया मेहरबान मिल गए ।

हर जन्म में ज्ञान अधूरा छोड़ आए थे
पन्ने जैसे ज्ञान के मोड़ आए थे
गुरू में ही गीता और कुरान मिल गए ।

भर दिया है प्यार दिल में सबके लिए
छोड़ा हर नजारा रब के लिए
इस जन्म में हमें है कितने दान मिल गए ।

भजन–266

मेरे दिल की पतंग कट गयी कि श्याम मेरा
लूट ले गया

सांवरे कन्हैया से जो पेंच लड़ाया था
पेंच लड़ा के मै तो बहुत पछताया था
मेरी डोर जाने कहाँ फंस गयी ।।

काट दी पतंग मेरी प्रेम की डोरी से
डोर में फंसाई डोर कान्हा ने चोरी से
इस छलिये की चाल चल गई

अच्छा हुआ लूट के जो ले गया कन्हैया
वरना बनवारी इसे लूट लेती दुनिया
इसे श्याम की शरण मिल गई ।।

भजन 267

मत कर तू अभिमान रे बन्दे
झूठी तेरी शान रे

तेरे जैसे लाखों आए
लाखो इस माटी ने खाएं
रहा ना नाम निशान रे

झूठी माया झूठी काया
जो तेरा सो हरि गुण गाया
वचन गुरू का मान

तेरे पास है हीरे मोती
मेरे मन मंदिर में ज्योति
कौन हुआ धनवान

माया का अंधकार निराला
बाहर उजला भीतर काला
उसको तू पहचान

भजन –268

मन तू ज्योति स्वरूप है,
मन तू शान्त स्वरूप है,
अपना मूल पहचान रे, हर जो तेरे नाल है,
गुरू मति रंग मान, मन तू गुरू मति रंग मान ।

मूल पछाणो तौहे षव जाणो,
तांह मरण जीवन को सॉझी होई,
गुरू प्रसादी एको जाणे, दूजा भाव न हो ऐ ।

मन शान्ति आई बजी बधाई, तांह हुआ परवान,
कहे नानक मन तू ज्योति स्वरूप है अपना मूल पहचान ।

मित्रा धनेरेकर थकी, मेरा दुख न काहे कोए,
मिल प्रीतम दुख काटिया, शब्द मिलावा होए ।

हो दूढण दो सज्जणां, सजन मेरे नाल,
नानक अलखन लखिया, गुरू मुख लेह लखाए।

सजण मिले न बिछड़यो जो अनादिन मिले रहेन,
इस जग में विरले जाणियो नानक सच लहन ।

भजन–269

मेरी अखां विचां श्याम मेरा आन वस्था,
नैन खोलां किंवे,

नैन खोलदी ते लोंकी मैनू पुछ दे,
कैंदे कियो लवा ला सानू की भेद दे,
ऐदा सुन के मैं अंखियों नू होर कसदा ।

सखी पूछों न, गल इस लाल दी,
पहली, करो दलाल दी,
सत्गुरू है दलाल जिन भेद दसया,
नैन खोलां किवे ।

रातो सपने विच सत्गुरू आ गए,
मेरी मांग विच सुआ रंग पा गए,
मैं तां सुहागन अंग अंग विच नचदा ।

मैंनू सत्गुरू ने साड़ी दोतो ज्ञान दी,
मैं तां ला लई किनारी उत्ते ज्ञान दी,
सखी जग तल मन हुआ नहीं रसदा

भजन–270

मन बेचे सत्गुरू के पास
लिए सेवक के कारण रास जो कारण रास

अपनी किरण जिस आप करें
नानक सौ सेवक गुरू की भाव लेवे

गुरू के गृह सेवक जो रहें
गुरू की आज्ञा मन में सहें

आपन को जो वाछू ना जनावे
हरि हरि नाम रिदे सद ध्यावे

सेवा करत होए नेह कामी
तिसको होत परापत स्वामी

भजन – 271

मया ने तुम्हारा अमन लूटकर
ये दिल तेरा बेताब क्यूँ कर दिया,
मिला था जन्म ये अमोलक मगर,
इसे तूने बेकार क्यूँ कर दिया ।

मै समझा नही धीर मनूशा मेरे,
तू अटका जगत में मगर किसलिए,
बुलाता गुरू तुमको हर पल धडी,
मगर तूने इंकार क्यूँ कर दिया ।

जो वादा किया था गर्भ में प्रभु,
निकालो नरक से न भूलूँ तुझे
गिरा जग में ऐसे कि इक बार फिर,
जनम तूने तैयार क्यूँ कर लिया ।

उठो जाग जाओ। अभी नीद से,
गया वक्त आता नहीं हाथ में,
चलाना ही था मन का कहना अगर,
गुरु से भला प्यार क्यूँ कर लिया ।

भजन – 272

मन के गहरे अँधियारे में,
आत्म ज्ञान दिये जैसा
जिसने सच्चा गुरू है पाया,
उसने जीवन का सुख पाया,
श्वांसो के बहते धारे में,
ओम नाम दिए जैसा ।

क्या मेरा क्या मेरा अपना,
सारा जग है झूठा सपना,
जग माया के चौवारे में,
गुरू का ज्ञान दिए जैसा ।

कोई न जिसका इस दुनिया में,
सत्गुरू उसकी बाँहे थामे,
बिन चन्दा के पखवारे में,
प्रेम निष्काम दिए जैसा ।

भजन 273

मिटा दे अपनी हस्ती को, तभी मस्तो में आएगा,
खुदी जब टूट जाएगी, खुद बस्ती में आएगा,

ये तन उसने दिया, तुझको ये मन उसकी अमानत है,
उसी का उसको अर्पण कर तभी,

नहीं अपने पराए के लिए बर्बाद होना तुम,
गुरू के रंग में रंग जा तभी,

दिलों में पल रहे हैं नाग नफरत के मिटा दो तुम,सभी
से प्यार कर बंदे तभी ।

गुरू के रूप में हरि ही तुम्हारे पास आए है,
षरण में तू गुरू कि आ तभी ।

भजन – 274

मुझे नां चरणों से अपने कभी जुदा करना,
स्दा हजूरी में रखना यही दुआ करना,

रहूँ मैं पास में हरदम यही तमन्ना है,
किदूरी र हके भी जीना तो मरना है,
मेहरबानी को हम पर सदा नजर रखना ।

जो भूल जाऊँ मैं तुमको जो हूँ मैं भूलनहार
ना देखना गस्ती को जो तुम हो बख्शनहार,
बस अपनी रहमतों को याद का लिया करना ।

करोडो जनम तक रहूँ मैं तेरा खादिम,
ये मेहरबानी का साया तेरा रहे कायम,
ना अपनी कैद से भगवन कभी रिहा करना ।

ये दासन दासी की उल्फत पे दर्द का मारा,
तेरी मोहब्बत का मरीज ये बेचारा,
प्यार से मेंरे इस दर्द की दवा करना ।

भजन–275

मना लगा है भोगो में, पार कैसे जाओगे,
खाली हाथ आए हो, खाली हाथ जाओगे ।

जग की मोह तृष्णा में, खुद को फंसा बैठे हो,
मैं मेरे की ममता से, कैसे छूट पाओगे ।

हीरा सा जन्म तुझको क्यों मिला ये सोचा क्या,
विषयों में लगाकर के, वक्त तुम गंवाओगे ।

झूठे जग की माया में पाया चैन किसने,
माया के शक्रानों में खुद को भूल जाओगे ।

अभी वक्त है प्रेमी, खुद को बचा सकते हो,
ज्ञान लेके सतगुरू का, परम पद को पाओगे ।

भजन–276

मांग दरबार से बन्दगी,
उठ जगा अपनी तकदीर को,
लेके शमषीर सद्ज्ञान की,
तोड़ दे अपनी जंजीर को,
बन जाए तेरी जिन्दगी, नाम जप ।

भजन 277

मंदिर जान वाले बता क्या तूने जीवन बदला है,
फेर फेर माला के मनके, अपना मन भी बदला है।

क्या तूने समझा कि तेरा राग प्रेम में बदला है,
तुझे औरो का सुख दुख अपना सुख दुख लगता है,
कब दीनो का मित्रा बना दीनों का लधुपन बदला है।

निर्धन या धनवान है, मालिक या मंजूर है,
किस्मत है कदमों पर तेरे या तू खुद मजबूर है,
क्या तूने संसार के धन से राम रतन धन बदला है ।

क्या प्रभु के प्रेम के रस से मन मंदिर उजियारा किया,
क्या, तूने जीवन की डोरो प्रभु चरणों में सौपी है,
क्या तूने अपनी खुश्बू से जग का ऑगन बदला है ।

अहंकार गया क्या तेरा, राग द्वेश भी छूटा है,
प्यार किया सच्चे साहिब से बाकी झगडा झूठा है,
बना फिर निर्दोष कि तूने, करम का साधन बदला है ।

भजन – 278

मानुष देही मिली अमोलक करो हरि को याद
स्वांस तुम्हारे है गिनती के मत करना बर्बाद

चले जो इस रास्तं पर दसका काम हरि निपटाए
आँधी तूफां लाख चले पर आँच कोई न आए
धन्य–धन्य के प्राणी जग में, करे न कुछ फरियाद।

पार हुआ भव से, जिसने भी नाम की ज्योतिजलाई
शबरी और अहिल्या तारी, तोर सधन कसाई
मीरा रंग गई श्याम कि रंग में, धन्य हुआ प्रहलाद।

धन बल और सम्मान पे कितने लोग बड़े इतराते
वापस ले जब हरि अमानत सिर धुनधुन पहनाते
सुत दारा धन मान जगत मे, सब है प्रभू प्रसाद।

भजन–279

मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरा जन्म मरण दुख दूर किया
मेरे प्रीतम प्यारे ने मेरा जन्म मरण दुख दूर किया

तीन गुण माया से उपजे माया का विस्तारा
तू क्यों इसमें उलझ रहा तेरा रूप अपारा
बांह पकड़ उबार लिया मेरा भ्रम सारा मिटा दिया

श्रवण मनन से जागा मनवा शब्द सूरत में समाया
प्रेम सहित निध्यासन करते परम धाम को पाया
अमी रस का पान किया मेरा आना जाना मिटा दिया

मन वाणी, बुद्धि नही जानत, वेद कहत सकुचाए
राम रमया परम पुरुष है घट माहि दर्शाया
ज्ञान अंजन डाल दिया मेरा भेद भरम सारा मिटा दिया ।।

भजन–280

मेरा सत्गुरू प्यारा मीत है, मीतों से प्यारा मीत है

सत्गुरू शब्द उचारते पिय अमृत वर्षा हो रही
जन्म–जन्म की बिछुड़ी में तो रंक से राजा हो गये
मेरा सत्गुरू परम पुनीत है

मोह माया के जाल में मैने अपना आप गंवाया सी
पूरे गुरा ने किरणा कर बांह पकड़ के पार लगाया से
ये तो महापुरूशों की रीत हैं......

आपे खेले खिलाड़ी मोहन, आपे जाल बिछावंदा
महापुरूषों के वाक्य द्वारा भेद सारा खुल जांवदा
वो तो छिप–छिप करता प्रीत है

मैं प्रीतम की प्रीतम मेरा दोनों ही एक स्वरूप है
जल थल व्यापक पूरण सारे सोहम ब्रह्मम स्वरूप है
मेरा वेद भी गाते गीत है ।।

भजन – 281

मुझे रास आ गया है तेरे दर पे सर झुकाना,
दुनिया है इस असाना ।

मुझे गम नहीं है कोई,
ये जहां जो रूठ जाए,
हमको तो गम यही है,
कहीं तुम न रूठ जाना ।

दुनिया की ठोकरों से कहीं,
और गिर ना जाऊँ,
तुम आओ श्याम आओ,
आकर मुझे बचाना ।

तेरी सॉवरी सी सूरत,
मेरे मन में बस गई है,
मन में समा तो जाओ,
करके कोई बहाना ।
मेरी आरजू यही है,
चरणों में स्वांस निकले
अभी स्वांस चल रही हैं,
कही हम चले ना जाए

भजन – 282

मेरे सतगुरू ने मुझे ये सिखाया,
एक हरि है सबमे समाया ।

नहीं कोई ऊँचा जग में, नहीं कोई नीचा,
एक प्रभु ने सबको है सींचा,
आत्मा का एक रूप गुरू ने,
तलाया, यही समझाया ।

जैसे इस कुम्हार धडे मारी के खिलौने रंग दे,
वो लाल पीले सॉवले सलेने,
माटी तो है माटी, भाई,
तेरी मेरी काया नही समझाया ।

धट धट वासी होके तनम न मे,
वही व्राहमण में वही हरिजन में,
भेदभाव मेरे सतगुरू ने सभी,
का मिटाया यही समझाया।

भजन – 283

मेरे हठीले श्याम,
मैं भी हठ पे अड़ा हूँ,
ठोकर लगा कि मैं तेरे रास्ते पे पडा हूँ ।

ओ मागंने वाले, तुझे रूकना ही पडेगा,
मुझको उठाने के लिए, तुझे झुकना ही पड़ेगा,
जख्मी हूँ कि तेरे तीर के नोको से अड़ा हूँ ।

मुझको उजाड़ा, तुझको भी बसने नही दूँगा,
जब तक ना हँसू मैं तुझे हँसने नही दूँगा,
तू सबसे बड़ा और मै तुझसे भी बड़ा हूँ

माना कि तेरा ओर मेरा साथ नहीं है,
पर याद भुलाना भी तेरे हाथ नहीं है,
ऐ दरिया दिल तू देख मै लहरों पे खड़ा हूँ

भजन 284

मेहरबां आ गया है मेहरबानी लुटाने
आओ लूटो दीवानों रहमतों के खजाने ।

तेरे आने से पहले हर तरफ थे अंधेरे,
आया लेकर उजाले, कर दिये है सवेरे,
तेरी खुषबु से दादा आज महके वीराने ।

तेरे कदमों से निकली प्यार की ऐसी धारा,
धरती लहरा उठी है, झूमे आकाष सारा,
गुनगुनाने लगे है हर दिषाएँ तराने ।

फिर ना वापस गया, वो जो यहाँ आ गया है,
खुषियाँ दे दी जहां को इस दर पे आ गया है,
प्रीत की सतगुरू ऐसी आया नगरी बसाने

भजन–285

मिली तुम्हें ये जिन्दगी करो खुदा की बंदगी
जो ये भी ना किया जिया तो किसलिए जिया

जरा तो सोच तू विचार, मिलती नहीं ये बार–बार
लाखों जन्म गंवाओगे, मिलेगी तब ये एक बार
धर्म दान सब किया, जुबां से भी नाम भी लिया जोगी.......

तुम करके वादा आये थे, क्या एक भी निभाये हो,
अनमोल बन के आये थे, अब खाक बनके जाओगे
ईश्वर का साथ जो किया, जीवन का ना बुझे दिया जोये

भजन–286

माया का दीवाना राजी, होता जोड़–जोड़ के
जायेगा तू हाथ खाली सब कुछ यहीं छोड़ के

वक्त पर ये मेहनत की, ज्ञान की कमाई हाथ आयेगी
दुनिया में तेरे ये भलाई काम आयेगी
सोच के चल तू तेरे ये सच्चाई साथ जायेगी

मौत का पैगाम लेके अंत समय आयेगा
जाना है जरूर कोई बचा नहीं पायेगा
कोई भी युक्ति ना दवाई काम आयेगी

दुनिया है फानी ये तो झूठा खेल है
ना तेरा ना मेरा कोई जीते जी का मेल है
सोच के तू चाल चल सच्चाई काम आयेगी ।।

भजन–287

मैं क्या जानूं तेरी रघुराई तू जाने मेरी किसमें भलाई
सहारा तेरा रे ओ सांई..........

सारे जग को देने वाले मैं क्या तुझको भेंट चढाऊँ
जिसकी श्वांसों से आये खुशबू मै क्या उसको
फूल चढ़ाऊँ अपरम्पार है महिमा तेरी
कोई ना जानत हार सहारा

तू ही दाता तू ही सुखदाता, तुझ बिन कोई
नजर ना आता
झुका जो अब सिर तेरे आगे और कहीं ना
पड़े अब झुकना इस दुनिया की भीड़ भाड़ में
छूटे ना तेरा हाथ सहारा.....

तू ही पारस जिसको छूकर लोहा भी सोना बन जायें
तेरी शरण में जो भी आये, वो पापी पावन बन जायें
इस माया की चका चौंध में
तेरा ही आधार है...... ।।

भजन–288

मेरी झोली छोटी पड़ गयी रे तूने इतना दिया मेरे दाता

तूने ज्ञान की जोत जलाई अज्ञान को मार भगाया
मेरे सिंर पर है तेरी छाया तूने इतना दिया मेरे दाता।।

जन्मों से आस लगायी तब ऐसे गुरू जी पायें
मुझे दुख सुख कुछ ना सताये तूने इतना दिया मेरे दाता ।।

मैने रोये–रोये नीर बहायें तब ऐसा सत्संग पाया
पग–पग पर राह दिखाये तूने इतना दिया मेरे दाता ।।

कर्मों की कहानी जटिल है पर भक्त तेरा ये अटल है
तूने सोहम् शब्द सुनाया तूने इतना दिया मेरे दाता ।।

मैं ज्ञान ध्यान ना जानूं मन से अवतार मानूं
तूने प्रेम से गले लगाया तूने इतना दिया मेरे दाता ।।

भजन–289

मन के मंदिर में तेरा दीदार करते हैं
ऐ प्रभु हम तो सिर्फ तुमसे ही प्यार करते हैं

मन मेरा तो भटकता रहता है, सुख दुख में उलझा
रहता है भव से तुम पार उतारोगे आस करते हैं ।।

रिश्ते दुनिया के सारे झूठे हैं, सच्चा तुमसे
प्रभु जी का रिश्ता है, ना जुदा करना तुमसे
ये पुकार करते हैं.......... ।।

तेरा द्वारा बहुत ही प्यारा है
तुमने लाखों को प्रभु तारा है–2
तेरे द्वारे पे हम तो जान निसार करते ह ।।

मेरी नादानियों को बक्श प्रभु
हाथ कृपा का सिर पे रख दो प्रभु
मांग ये तुमसे प्रभु बार–बार करते हैं ।।

अपने भक्तों की लाज रखना प्रभु
सदा चरणों के पास रखना प्रभु
नैन हरदम ही तेरा इंतजार करते हैं ।।

भजन–290

मेरी श्वांसों में तू है समाया
मेरे जीवन तो है तेरा साया
तेरी पूजा करूँ मै तो हरदम
है तेरे पास हम करो नजरे करम

सुबह शाम चरणों में हम शीष झुकायें
देखें जहाँ भी देखें तुझको ही पायें
इन लबों पे तेरा बस तेरा नाम हो
प्यार दिलों से ना हो कम

ये जो मेरा मन है मंदिर है तेरा,
इसमें सदा ही रहे तेरा बसेरा,
रहमतों से तेरी ये महकता रहे,
आये जाये भले कोई मौसम।

हमेशा तेरे ही मैं गीत गाऊँ,
आंखों से हर पल दर्श तेरा पाऊँ,
मेरा मन ही तेरा मेरा तन ही तेरा,
मेरा सब कुछ तुझे ही अर्पण।

हर एक जन्म में हो साथ तेरा,
तू ही मेरा स्वामी तू ही नाथ मेरा,
तेरी रहमत सदा मेरे अंग संग रहे
तेरी कृपा रहे हम पे हरदम।

भजन–291

मन अंधा मन गंदला और मन ही है ज्योति स्वरूप
मन में ही लखे निज रूप

ये तो जग की बातों में अटकायें चौरासी में ले जायें
इसकी बातों में जागी आये वो जन्म–जन्म दुख पाये
मृग तृष्णा के जल सा लगे, पर ये है कड़कती धूप मन

इसे गुरू ली शरण जो ले आये, जीते जी मुक्ति पाये
गुरू प्रेम से इस समझाये, निज आत्म में टिकायें
दर–दर के भिखारी को गुरू देव बनाते है धूप

गुरू मन से ही मन को मनाये, इसे अपना रूप दिखायें
आत्मा से ही तू जन्मा, आत्मा में शांति पाये
निज घर का पता पाकर
बंद हो जाती सब दौड़ धूप
मन में ही लखे निज रूप........

गुरू वचनों में इतनी शक्ति मिल जाती जीवन मुक्ति
गुरू देते हैं ऐसी युक्ति होवें आठों पहर भक्ति
मन ब्रह्मा, मन विष्णु और मन ही बने शिव रूप
मन में ही लखे निज रूप......

भजन–292

मन के अंदर मंदिर बनाया गीता भगवान तेरे लिये
इस मंदिर में तुझको बिठाया ज्ञान के जले दिये

सूरज भी देखे चांद भी देखे नील गगन के तारे भी देखे
महिमा तेरी सबसे निराली सुर नर मुनि गुण तेरे गाये
देवो देव भी शीष झुकाये, पीरों के पीर बलियों के
बली जोगी आये दर पर तुम्हारे प्रेम के
जाम भर–भर के दिये......

तन भी नही मैं मन भी नहीं मैं, बुद्धि और इन्द्रिय नहीं मैं
मैं तो हूँ इन सबसे परे, सुबह नहीं मेरी शाम नहीं
मेरी जन्म नहीं मेरा मरण नहीं मेरा मैं वो अमर हूँ
ये देह मरे चिद् जड़ ग्रन्थि खोली है तुमने
देह और आत्मा अलग दिये......

ओम भी मैं हूँ शिवोहम भी मैं हूँ
अनादि मै हूँ अनन्त में ही तो खुद
परमात्मा हूँ जग के कण–कण में बसी है
तुमने मुझको निश्चय कराया
मैं तो खुद वो आत्मा........

भजन–293

मेरी खुशियों का रहा ना ठिकाना कि मेरे घर श्याम आ गये
मेरे जैसा कोई ना दीवाना कि मेरे घर श्याम आ गये

आस लगी थी मुझे तेरे दीदार की
आज मुझे खुशी मिले सारे संसार की
सारी दुनिया को चाहूँ बताना......

तेरे जैसा कोई नहीं इस संसार में
बड़ा ही आनंद आया सांवरे के प्यार में
मै तो झूम–झूम गाऊँ तराना......

बड़ी ही तमन्ना मेरी पूरी हुई आज है
मेरी खुशियों का बस एक यही राज है
मैंने सब कुछ इसको है माना........

भजन–294

मन का मंदिर साफ सुथरा जिस समय हो जायेगा
देर फिर कुछ ना लगेगी कपट सब मिट जायेगा ।

मन के हारे हार है और मन के जीते जीत है
जीत ना मन का कठिन है, जीत ले तर जायेगा।

मन अगर हो साफ सुथरा मन में गंगा जान ले
मन अगर हो गंदा तो जा के भी क्या पायेगा।

निंदा चुगली बेइमानी में लगा हरदम रहा
सोच ले मन पाप से आनंद कैसे पायेगा।

बीज बोकर जहर के तुझे ज्ञान अमृत क्यों मिले
साफ कर दिल की बुराई फिर सदा सुख पायेगा।

भजन–295

मेहरबाँ आ गया है मेहरबानी लुटाने
आओ लूटो दीवाने रहमतों के खजाने

तेरे आने से पहले हर तरफ थे अंधेरे
आया लेकर उजाले कर दिये हैं सवेरे
तेरी खुशबू से दादा आज महकेगी वीराने।

तेरे कदमों से निकली प्यार की ऐसी धारा
धरती लहरा उठी है झूमें आकाश सारा
गुनगुनाने लगी है हर दिशा ये तराने।

फिर ना वापिस गया वो जो यहाँ आ गया है
खुशियाँ दो जहान की इस दर से पा गया है
प्रीत की सत्गुरू ऐसी आया नगरी बसाने।

भजन–296

मिट गये सारे गम मिल गया मेहरबाँ
झूमती है जमीं झूमता है आसमां

तेरी रहमत खुदाई में मशहूर है
कण–कण है छाया तेरा नूर है
तेरी रहमत से रौषन है सारा जहाँ

शहंशाह ऐसा जग तो देखा नहीं,
ये हकीकत है कोई भी धोखा नहीं,
खुदा ही कहीं तेरा जलवा जहाँ।

तुमने कृपा करी सबकी झोली भरी,
महिमा तेरी को कैसे मैं गाऊँ,
खिल गया सबके मन का चमन।

भजन–297

मिल गया सत्गुरू सहारा आपका
खुशनसीबी इससे बढ़कर क्या होगी

सच्ची दौलत बख्शी तूने नाम की
और की बख्शीष आनंद धाम की
जग की हसरत से किनारा पा लिया ।

माया की झिलमिल कतारें खा चुकी
संत चरणों में ठिकाना पा चुकी
दिल तेरे रहने के काबिल हो गया।

काल की ताकत कहाँ जा छू सके
जाना दिल से आप के जो हो चुकी
तूने मंजिल दी इशारों से दिखा।

जिसकी तलाश में चौदह भुवन
मालिक कुल की मिली हमको शरण
उस खुदा का जलवा मैने पा लिया।

भजन–298

मुखे ज्ञान जी वर्न मिली आ,
जेहं में मौज ही मौज पई आ

पर्स साण आ तकहिड़ी करण आ,
जिते वगां उतेमुहिंजो
सांई साण आ, मुखे धीरज,जो चेक मिलयो आ

वचन बुधन आं पर्दो खुलो थे,अंदर जो आंनद हिते
मिलयो थे मुखे सत्संग जी बैंक मिली आ

प्यार करण सो ब्याज मिले थो
सांई उज्ज कहे जों कीन ना रखे थो
हिते नूरानी नजर मिली आ

सत्गुरू मुहिजो बैंक मैनेजर खोतो खोल थो
समनी जी हिते मुखे नम्रता जी दौलत मिली आ

हर कहखे हिते लोन मिले थो मन जो डिप्रेशन दूर
थिये थो
हिते सत्संग जी मिलकियत मिले थो

हिते किस्मत समिन जी खुली आ
गुरू मुहिंजो ब्रहमज्ञानी, जेह ठाहीं मुहिंजी जिन्दगानी
हिते दिव्य दृष्टि मिली आ

तूं भी प्यारा ऊच हिन दर ते, खातो,
खोले डिस हिन दर ते

भजन--299

मानव जन्म अनमोल रे, इस माटी में ना रोल रे
टब तो मिला है फिर ना मिलेगा कभी नहीं

सत्संग में तू जाया कर,गीत खुशी के गाया कर
सांझ सवेरे बैठ के बंदे प्रभु का ध्यान बनाया कर
लगता कुछ ना मोल रे इसे

तू है बुलबुला पानी का ना कर मान जवानी था
नेक कमाई कर कुछ बंदे पता नहीं जिन्दगानी का
सबसे मीठा बोल रे इसे

मतलब का संसार है क्या इसका एतबार है
संभल संभल कर पग तू धर ले, फूल नही अंगार है
मन की आंखे खोल रे

गुरू जी सर्वाधार हैं, ज्ञान के भंड़ार है
जो कोई उनकी शरण में आये उसका बेड़ा पार है
ज्ञान यह अनमोल रे

भजन–300

मेरे भगवन तुम्हें भक्तों को तड़फाने की आदत है
तेरे भक्तों को भी हर जुल्म सह जाने की आदत है

चाहे सौ बार आजमा लो, चाहे लो इम्तहां मेरा
जला दो शौक से भगवन, चाहे ये आशियां मेरा
दीवानी हूँ तेरे चरणों में बस जाने की आदत है

बड़ी मुश्किल से दामन हाथ आया,
अब ना छोडूँगी मैं
कि दामन से लिपट जाना दीवानों की आदत है

बांधकर प्रेम डोरी से तुम्हें मैं खींच लाऊँगी
सुना है मुरली वाले तुमको तो बंध जाने की आदत है

भजन–301

मनन ऐसा करो मन में कि मन का मैल धुल जाये
करोड़ो जन्म की निद्रा भरी आंखे भी खुल जाये

सुनो दो शब्द संतो से जो बैठे है सत्संग में,
सरल ृदय करो अपना
अगर मन भागता देखो किसी इन्द्रिय के द्वार से तो
झटपट बंद कर लेना कहीं मन मान ना पाये

अगर मन भाग जाये तो हरि का नाम जप लेना,
कि सच से छूटा हुआ
यह मन कि सच में ही जुड़ जाये

नषा ऐसा है दिलबर का जहाँ देखूं दिखे सतुगुरू
करोडों
जन्म के संचित कर्म पल में ही जल जाये

भजन–302

मै तेरे नाम के गीत गाती रहूँ, मेरा भाग्य तू ,ऐसा जगादो गुरू
प्रेंम गंगा में निशादिन नहाती रहूँ मुझे शक्ति, का अमृत पिला दो गुरू

जब कमी मुझे दुनिया से ठोकर मिले, तो उन्हीं ठोकरो के मै पद चूम लूं
जो दिया तुमने फूलो को वरदान है, तुम वही पुश्प मुझको बना दो गुरू

जब मिले धूल में मेरी ये देह तो, ये संसार मुझको भुला ना सके
मै बुझाती रहूँ प्यास धरती की यूं, तुम मुझे मेघ सावन बना दो गुरू

ये निराशा की लहरों की गहराइया", ना भटकायें मुझे डुबो ना सके
तेरे पक्को की छांव में पलती रहूँ, अपनी आंखो का तारा बना दो गुरू

भजन–303

मेरे सत्गुरू मेरे भगवन मेरे अनमोल रतन
तेरे बदले में जमान की कोई चीज नहीं

तू है ज्ञानी, अन्र्तयामी, तुझं मै पूजू सदा
तेरे ही ज्ञान से हो गया मेरा जीवन सफल
मेरे सत्गुरू है किया तुझपे अपना सब्र अर्पण
तेरे बदले में जमान की कोई ची नहीं

तूने हम सब को किया दूर अज्ञानता हो
तूने हम सब को किया भरपूर अपनी कृपा से
हम सब थे अज्ञानी तूने हमको किया ज्ञान से मगन

तू दयालु है कृष्ण हमको तूने सब है दिया
तेरे ही कृष्ण देखकर तुझे हम ने नमन है किया
मैने माना मैने जाना तेरा है ये मेरा जीवन
तेरे बदले

भजन–304

मोहन रे मोहन रे थारे बिना लागे नाहीं ,
म्हारा जयारे नैनो ने थारे कैसा जादू किया रे

थारे बिना मेहे चैन ना आवे,
पल पल म्हारा, जिया घबराये
बोले बांसुरियाँ सुन ले सांवरियाँ,
थारे बिना मोहे कछु ना आवे

भाव की कलियां कब की रखियाँ,
राह तक मै, तो थकियाँ
सांझ सवेरे देखन लागी थारी,
सुरतिया म्हारी अखियाँ

प्रेम की बतिया कोई ना जाने,
अपने ही मोहे लागे बेगाने
मन की लगी ये कैसी लगी है,
जिस मन लागे वो, ही तन जाने रे

भजन–305

मिल हमको भगवन सीखा उनसे है मुस्कराना

उनकी भक्ति में बीते जीवन सारी संगत दुआ करना
बरसो से सूने इस मन मं ये आज बहारे आई है
अंधेरे दूर हुये मन के ऐसी सच की ज्योति जगायी है
जलती रहे जोत हरदम सारी जगत , जोत से जोत
जलाते जाये हम

कलियुग की काली रात गई, सत्युग का सबेरा आया है
ठोकर क्यों खायेगे अब हम, ऐसा सच का सूरज पाया है
भटके ना ये कदम सारी

वीराने थे दीवाने हुए, खाली खाली से भरपूर किया
प्रेम की बरखा बनकर बरसे पतझड़ को सावन कर ही दिया
ये हरियाली रहे हरदम

ऐसा साथ हमने तेरा पाया, सारे जग को मिले तेरा साया
सदियो से पुकारा अब पाया बन को किया
उपवन महकाया, यूँ ही महक ये सारा चमन

भजन–306

मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है
ईश्वर जो भी करता है अच्छा ही करता है

जब से दुनियां बनी है तब से रोज बदलती है
जो शह आस यहां है कल वो आगे चलती है
देख के अदला बदली तू क्यों आहे भरता है

सुख दुख आते जाते रहते सबके जीवन में
पतझड़ ओर बहारे दोनो जैसे गुलशन में
चढ़ता है तूफान वही तो कभी उतरता है

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा
जल में क़मल खिलेगा फिर से वो मुस्कराएगा
देता है जो कष्ट कहीं कष्टो को हरता है

वो ही दाना फलता है जो खाक में मिल जाएं
सहें राह के काटे जो वो मंजिल अपनी पाए
भट्टी में पड़कर सोने का रंग बिखरता है

भजन–307

मेरे सत्गुरू है मेरे साथ, फिर जो हो भले सो हो
दुनिया का भले ना हो साथ, जिसे साथ गुरू का हो

लगता नहीं है डर उसे जिसे साथ गुरू का है
लगता नहीं है दुख उसे जिसने मन गुरू को बेंचा है
तन मन का मालिक गुरू बना फिर फिक्र हमें क्या है

जीवन की डोरी सौंप दिया जैसा भी रखो मंजूर
तेरी रजा मेरी रजा उल्फत का यही दस्तूर
तेरे वचनों पे मिटती रहूं अब यही इल्तज़ा है

निष्काम प्यार से दादा ने मेरी झोली भर दी है
जन्मों के अधियारे मन में तूने रोशनी कर दी है
जीवन मेरा पलट दिया अहसान ये बड़ा है

सच के सौदाई ने हमें जीना सिखाया है
जीते जी मरकर अमर बनो ऐसा पाठ पढ़ाया है
प्रेम ही है परमात्मा क्यों न प्रेम हम सबसे करे

य

भजन–308

ये मौके प्यारे प्यारे मौके
कोई पाता है खुद को खोके

नसीबो वाला दर्श करे कि
भागो वाला दर्श करे

ये दर्शन प्यारा प्यारा दर्शन
पाओ प्रेमियों करो ये धन्य जीवन, नसीबो

घड़ी आई है खुशियों वाली
तेरी शान गुरू जी निराली

सत्गुरू के भरे भण्डारे
और सुंन्दर यहां के न जोर

करो सेवा गुरू की सेवा
मिले प्यार भरा रस मेवा

प्रेमी सत्गुरू को रिझा लो
और जीवन् सफल बना लो

भजन–309

या तो मिट जाइये या मिल दीजिये
कीजिये जो भी सौदा खरा कीजिये

अब वफा कीजिये या जफा कीजिये रोज
मिलते रहे ये दुआ कीजिये।

अपने चेहरे से जुल्फें हटा दीजिये
और फिर चांद का सामना कीजिये।

हर तरफ फूल ही फूल खिल जायेंगे
आप ऐसे ही हंसते रहा कीजिये।

आपकी ये हंसी जैसे घुंघरू बजे
आप ऐसे ही हंसते रहा कीजिये।

भजन–310

ये दर मिल गया, सारी जन्नत मिली,
गुरू मिल गया, सारी दौलत मिली,
फिर कैसा खजाना, तुझे चाहिये ।

ये दर तो है जैसे शंहशाह का,
कहीं भी न देखा ऐसा बादशाह,
चांद सूरज से बढ़कर उसकी शान है,
हिमालय से ऊँचीं उसकी शान है,
फिर कैसा नजारा तुझे चाहिए ।

अब चिंता न करना किसी बात की,
अब चाहत भी न हो, बड़े नाम की,
जब नजरे इनायत गुरू की मिली,
फिर किसका इशारा तुझे चाहिए ।

अब विश्वास करके डोरी सौप दो,
तुझे तूफान काभी नहीं कौफ हो,
निकालेगा भंवर से दयालु बड़ा ,
फिर कैसा खेवनहार तुझे चाहिए ।

खिलाई है बगिया उसी न तेरी,
करो उसके चरणों में तुम बन्दगी,
उसी की कृपा से यह ज्योति जली,
फिर कैसा उजाला तुझे चाहिए ।

भजन–311

यहाँ करने उद्धार भगवान आए है,
हमें तारने को करूणानिधान आए हैं।

सच्चा सौदा बेचते है, लेने ताला कौन है,
साथ अपने ये ज्ञान की खदान लाएहैं,

हमें ताराने को करूणानिधान आए है ।
है व्यापार दे निराला,
भरपूर प्रेम प्यार का सामान लाए है ।

बदले में किसी से भी कुछ नहीं मांगते,
सदा बाँटते हैं ज्ञान की ये खान लाएहै।

कैसे रहना खाना पीना जग में रहना चाहिये,
सदा जागते रहो ये फरमान लाए है ।

यहाँ दुखों का गमों का नाम ही नहीं,
ऐसी होठों पे मधुर मुस्कान लाए है।

तन मन, सर्वस्य जो लुटागें यहाँ,
वो ही पूरा भगवान पहचान पाए है ।

भजन–312

ये भी क्या अहसान कम है देखिये ना आपका
हो रहा है हर तरफ, चर्चा हमारा आपका

चांद में भी दाग है पर आपमें वो भी नहीं
चौदहवीं के चांद से बढ़कर है चहेरा आपका।

इश्क में भी हम डूबे हुए है आपके
अपने चहेरे में सदा होता है धोखा आपका ।

चांद सूरज धूप सुबह कहकशां तारे समां
हर उजाले ने चुराया है उजाला आपका ।

भजन–313

ये दुनिया बनाना, बनाके फिर चलाना,
बस उसी का काम है ।
बड़ा जोरदार जबरदस्त उसका इंतजाम है,

रात को ही रात, प्रभात को प्रभात,
शाम ही को शाम है, बड़ा जोरदार ।

जल पे है थल और थल पे आसमान है,
फिर भी एक दूजे के न बोझ के समान है,

गज़ब का ये जहान है बिन खम्बे का मकान है,
यहाँ का एक एक क्षण उसका गुलाम है ।

सूर्य चन्द्र तारे अपने अहम् स न टल सके,
इंसान की मज़ाल क्या जो इनका क्रम बदल सके,

इक फूल भी न खिल सके,
इक पत्ता भी न हिल सके,

सारे जहाँ की उसके हाथ में लगाम है,
बड़ा जोरदार जबरदस्त उसका इंतजाम है,

भजन–314

युग युग से गुरू ज्ञान की महिमा
गाते रहे हैं गाते रहेंगें हम तुम

हम सब प्रेम से सत्गुरू सत्संग में आते रहें हैं
आते रहेंगे हम तुम...... ।

जब–जब इस मन ने उलझाया है,
सत्गुरू तूने ही संभाला है।
माया की दलदल से तूने,
प्यार से आकर निकाला है ।।

ईश्वर ने हमको जन्म दिया,
गुरू तुमने जीवन दान दिया।
मंजिल का पता बताकर
बहुत बड़ा उपकार किया ।।

हम भूल गये थे स्वरूप अपना,
सत्गुरू ने याद दिलाया है।
सत् चित्त आनंद का मान करा के,
हम सबको मुक्त कराया है ।।

तुम छिपे नहीं भक्तों से,
चहुँ ओर तुम्हीं तो समाये हो।
हर रूप तुम्हीं ने धारा है,
इस धरा पे आये हो।।

र

भजन–315

रात के बाद होगा सवेरा देखना हो अबर दिन सुनहरा पांव फूलों पे रखने से पहले, तुझको कांटो पे चलना पड़ेगा ।

राह में एक सितारा भी बहुत होता है,
आंख वाले को एक इशारा भी बहुत होता है
बीच मझदार जाने की क्या जरूरत है
डूबना हो तो किनारा भी बहुत होता है ।

डससे मिलना अगर चाहता है उसकी चौखट पे धूनी श्रमा दू वरना एक दिन तो मजबूर होकर तुझको बाहर निकलना पड़ेगा ।

भजन–316

रंग बरसे भीगे संगत सारी रंग बरसे,
गुरू अमृत बरसाया, हर योगी ने है पाया,
ब्रहम का रंग चढ़ाया, जीव भाव मिलया ।

जंग के रंग सब फीके,
कभी उतरते कमी है चढ़ते,
अपने रंग में रंगाया , मेरे दाग मिलया ।

द्वेत की होली खूब जलाई,
समता को पिचकारी, भर भर है मारी,
प्रेम का रंग बरसाया और प्रेम सिखाया ।

अचरज होली गुरू तूने दिखायी,
बाहर से रंग दिखाई न दे भाई,
लालो लाल कर डाला, जीवन मस्त कराया ।

भजन–317

रब ढूंढने वाले मानुश्य मन कब तूने इसे पहचाना है
नजरे तो झुका के देख जरा तेरे दिल में प्रभु दीवाना है

जब मंदिर में तू जाता था इसकी उसकी कर आता था
अब गुरू का वचन सुन तूने तो अपना स्वरूप पहचाना है

जब जगत के कर्मो में जाकर तूने माया का सुख
ढूढा था दुनिया के सगे संबंधियों ने तुझे माया में भटकाया

जब गुरू का ज्ञान मिला मन को तो आत्म
ज्ञान का बोध हुआ माया के सब जंजाबो
से दादा ने मुक्त कराया है

भजन–318

रंग लो रंग लो श्याम रंग रंग लो आये हो
झूम लो झूम लो आज सब झूम लो गुरू ने प्रेम

लेकर अवतान प्रेमी श्याम सलोने आये
जन्नत का नूर लेकर सब पे बरसाने आये
चांद सितारे लेकर आये दिन ये सुहाना झूम लो
लाली मेरे श्याम की बिखरी चारो ओर है रंग

खिल खिल के लाल हुये मुरझाये हुये थे जो चेहरे
प्रेम की सौगात से था तुमने नवाजा हमें
हो खिल खिल प्रेम का तेरे रंग है सच्चा
बाकी सारे झूठे इस जीवन में तेरी प्रीत का रंग ना छूटे

करूणा निधान है ये इनकी मिसाल नही
प्रेम में बंध जाते है सबने ये बात कही
हम सब बच्चे है इनके क्यों ना इतराये प्रेमी
आओ मिल के नाचे गाये धूम मचाये प्रेमियो

भजन–319

रंग बिरंगे प्रेम के रेग में कान्हा मुझको रंगना
मोहे भाये कोई रंगना

मैने सब कुछ तो तुझसे पाया
ज्ञान का प्याला है तुमने पिलाया
तेरे होकर के ही तुझको है जाना
अपना सब कुछ ही तुम पर है वारा
अपना सब कुछ ही तुम पर है वारा
ऐसी मस्ती में मस्त हो जाऊँ
छूटे कहीं रंगना अब हे फागुन है मेरे सजना

सब विकारों को तूने मगाया हर बात से ऊपर उठाया
सच का रंग तूने है हमको लगाया प्रीत की डोरी में
हम सब को बांधा राग द्वेष को दूर भगाकर
मै आ गई तेरे अंगना, बाजे मोरा कंगना

तेरा शुक्राना है दिल से गाऊँ अपने जीवन को
उपवन बनाऊँ, सच के फूलों से इसको सजाऊँ
मुस्कराहट का इत लगाऊँ, तन मन धन तुझ पर
वारू अब माये कोई रंग ना मोहे माये

भजन–320

राम नाम अति मीठा है कोई गा के देख ले
आ जाते है राम कोई बुला के गा के देख ले

मन भगवान का मंदिर है यहाँ मैल ना आने देना
हीरा जन्म अनमोल मिला इसे व्यर्थ गंवा ना देना
शीष दिये हरि मिलते है लुटा के देख ले

जिस मन में अभिमान मरा भगवान कहाँ से आये
घर में हो अंधकार मरा मेंहमान कहाँ से आये
राम नाम की ज्योति ज॑ा के देख ले

गिद्ध अजामिल गज गायिका ने ऐसी करी कमाई
नीच कर्म को करने वाला तर गया सदन कसाई
पत्थर से हरि प्रगटे है प्रगटा के देख ले

आहो नाम पे आ जाते है कोई बुला ने वाला
बिक जाते है राम कोई है मोल चुकाने वाला
कोई जौहरी आके मोल लगा के देख ले

भजन–321

रमता राम रमो मोरे जिया
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया

चतुष्ट साधन पंलग बिछाया
ब्रहमज्ञान का तकिया लगाया
शांति का बिस्तर बिछा दिया

जाग्रत स्वप्न सुशोप्ति उपाधि
हम तो अद्वैत अखण्ड अनादि
इस निश्चय को मैने पा लिया

ऐसी गहरी निंदर आई
जगत महल ना रह यो दिखाई
अद्वैत राम पति वर लिया

ना कोई वैरी मित्र हमारो
जित वल देखा उत वल प्यारो
इस निश्चय को मैने अजमा लिया

भजन–322

राम भजन रखियाई बेडा वेला मनवां
गुरू मिलन दा रखियाई बेडा वेला मनवां

पहली अवस्था खेड़ा विच गईया मनवा
खेड़न वेले तू मंगदा ए खुल्ला वेड़ा मनवा

दूजी अवस्था तैनू चढ़ी जवानिया मनवा
चढ़ गई मस्ती ना तकयो सांझ सवेरा मनवा

तीजी अवस्था तेरे बच्चयां ने घेरा पाया मनवा
काम नहीं मुकदे तू कदी ना होया वेला मनवा

चौथी अवस्था तेरे अंग अंग ने ना हिलना मनवा
धीया पुतर तेरे कोई ना आवे नेडे मनवा

हंस दीया तू जीती हुई बाजी हारीयां मनवा
झुक गए धंधे तेरा झुक गया जगत झमेला मनवा

अणे वी वेला सत्गुरू दी शरणी आ जा मनवा
बिन सत्गुरू दे कोई ना बणसी तेरा मनवा

भजन–323

राम कहूँ तुझको या वंशी वाला श्याम कहूँ
ए गीता भ तुम्हे शत शत प्रणाम करूं

तूने लाखो जीवन संवारे जो थे इस जिन्दगी से हारे
आहुति देकर अपने प्राण की
पार की नैय्या श्रद्धावान की
बने तेरी जैसी जीवन, कुछ ऐसा काम करूं

प्यार और करूणा के सागर
हम थे जैसे खाली गागर
अपना आप समझकर तूने
भरे प्रेम से ह्रदय जो सूने
निश्काम प्रेम से मै भी सबके खाली जाम भरूं

भला बुरा खरा खोटा ना कोई
अपना पराया बड़ा छोटा ना कोई
सब मे उसका नूर समाया
सबमे बैठा प्रभु बताया
तेरे इन वचनों का मै तो निशदिन ध्यान करूं

ल

भजन–324

लिखा कौन मिटाये रे बंदे
ऊँची हवा में उड़ने वाला कब नीचे आ जाये रे बंदे

सत्गुरू एक निराला माली उसका बाग अजूबा
देख कही पे निकला सूरज और कही पे डूबा
किस पल कौन कली खिल उठे कौन कली मुरझाये

मुश्किल और निराशा में भी वो देवे मुस्काने
सत्गुरू के अहसानों को अब लोग जरा पहचाने
इतना कुछ समझाया उसने तू ही समझ ना पाये

धरती ने सागर की तर में कितने पत्थर डाले
सागर मन पे पत्थर रख के, कब बोझ संभाले
अब ये सागर इस धरती पर घूंना आग लगाये ।

भजन–325

लाखों महफिल जहाँ में है यू तो,
तेरी महफिल सी, महफिल नही है

स्वर्ग सम्राट हो या हो चाकर,
तेरे दर पे दर्जा बराबर
तेरी हस्ती को जिसने है जाना,
कोई आलम है, काफिर नही

तुम जो कहते हो तुम हो हमारे,
जोड़ मुझ से ही नाते तू सारे
जानकर भी जो नाता ना जोड़े,
उसके आनिंद जाहिल नहीं है

उनकी निष्काम से वा कर्म है
उनकी इच्छा में इच्छा धर्म है
सौंप दे उनके हाथों मे डोरी
वो कृपालु है संग दिल नही है

ठोकरे दर बदर की जो खाकर
आ गया तेरे द्वारे जो थक कर
तूने आंखो से वो रस पिलाया
जो बताने के काबिल नही है

भजन–326

लाये है मेरे सत्गुरू सत प्रेम का खजाना
छेड़ा है दिल ने मेरे खुशियों का ये तराना तराना

जन्मो का अपना नाता तुझको तभी तो पाया
पहले का कोई सपना साकार होके आया
छाई है दिल में मस्ती सजी है दिल की बस्ती
पल पल दिल से तेरा करते है शुकाना

नजरों में तुम बसे हो धड़कन में भी समाये
किस्मत को मेहरबानी जीवन में तुम जो आये
खुशिया तुम्हीं से आई मन में बहार छाई
सीखा तुम्हीं से हमने गमों में मुसकराना

दुनिया की दौलत भी मन को नही भ्राती
दीपक हो तुम हमारे हम है तुम्हारी बाती
तेरे बिना ना जीना नजरो से तेरी पीना
साथी हो तुम हमारे भर दो मेरा पैमाना

व

भजन–327

व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो, व्यर्थ डर कर रो रहे हो।
अजन्मा है अमर आत्मा, भव में जीवन खो रहे हो।

जो हुआ अच्छा हुआ जो हो रहा अच्छा ही है
होगा जो अच्छा ही होगा, ये नियम सच्चा ही है
डर भुला दो, बोझ कल का, आज तुम क्यों ढो रहे हो।

उन भूलों का फिर आज पश्चाताप क्यों
कल क्या होगा अनिश्चित है आज फिर संताप क्यों
जुट पड़ो कर्तव्य में तुम, बाट किसकी जो रहे हो।

क्या गया जो रो पड़े तुम लाए क्या थे जो खो दिया
है किया क्या नष्ट तुमने, ऐसा क्या था जो खो दिया
व्यर्थ ग्लानि से भरा मन, आंसुओं से धो रहे हो।

लेके खाली हाथ आए, जो लिया यहीं से लिया
जो लिया न कीमत उसकी, जो दिया यहीं पर दिया
जा नकर दस्तूर जंग का, क्यों परेशां हो रहे हो।

जो तुम्हारा आज है कल, वो ही था किसी और का

भजन–328

वंशी बजाने वाले पहले क्यो प्रीत लगाई
अब तो बोलो ना कृष्ण कन्हाई, अपनी काहे को वंशी बजाई

दिलवर हमारा तुमसे नाता चुराना
नाता पुराना लेकिन तुमने ना जाना
अच्छा नहीं है मोहन आंखे चुराना
छोड़ो बहाने मोहन दिल ने दी तुमको दुहाई
अब तो बोलो ना

कैसे निकालेगे मोहन दीनो के दिल से
दिल ने बसाया बड़ी मुश्किल से
माना तुम्हे आज फुर्सत नही है
लेकिन इस दिल में उलफत नही है
मालूम था मोहन निकालोगे हरजाई

कितना सुंदर था मोहन धोखा तुम्हारा
बंशी बजाकर लूटा दिल ये हमारा
घायल बनाया तूने अपनी अदा से
दीवानी ये प्यारी तेरी सदा से
तुम ही बताओ मोहन कैसे सहेंगे जुदाई
बोलो ना कृष्ण कन्हाई

श

भजन–329

शमां जलती है परवाने हटाये ही नहीं जाते,
ये दीपक प्रेम के ऐसे बुझाये ही नहीं जाते।

लगा ले जोर ये दुनिया, सता ले व्यर्थ ही इनको,
गिर जो गुरू के चरणों में, उठाए ही नहीं जाते।

प्रभु को प्राप्त करने की लगी जिसको लगन भारी,
सत्य के है जो दीवाने वो बहकाए नहीं जाते।

कटे गर्दन या निकले दम नहीं परवाह इन्हें कोई,
पर जो भागे बढ़ जाते वो लौटाए नहीं जाते।

तेरी मस्ती के मस्ताने तेरी सूरत के दीवाने,
वो हंस–हंस फांसी चढ़ते है वो लटकाये नहीं जाते।

नशे में चूर बैठे है तेरी मंजिल के दीवाने,
जो खुद भर–भर के पीते हैं पिलाए नहीं जाते।

भजन–330

श्वांसों के तार–तार में प्रभु प्यार को पिरो लो
शुभ कर्म करके पुण्य का जीवन में बीज लो

जीवन का एक–एक पल अनमोल है खजाना
इनमें से एक पल भी नहीं लौट के है आना
आनंद रस से अपना अन्तःकरण भिगोना।

ज्ञानी की ये निशानी मीठी सी उनकी वाणी
मीठे से बोल में है प्रभु की झलक सुहानी
बोलो तो ये मीठे बोल में ही अमृत हृदय में घोलो।

बीती की बात मत कर लो मिट गया अंधेरा
खुलती जहाँ ये आंखें होता वहाँ सवेरा
तेरे द्वार प्रभु पधारे, अंतर के नैन खोलो।

भजन–331

शुकाना गाए दिल घड़ी घड़ी आपका
आपने दिया है मुझे प्यार दो जहान का

अंखियों में मेरी तेरे प्यार के ही साए है
अश्कों के मोती तेरी याद में बहाए है
गुण क्यों ना गाऊँ मैं ऐसे मेहरबान का

दुनियां की प्रीत से दिल को हटा के
खुश हूँ मै दिल सत्गुरू से लगा के
लिख दिया दिल पर नाम मैने आपका

सत्गुरू मेरा प्यार मेरा ईमान है
उसके सहारे चलते मेरे प्राण है
रिश्ता हमारा जैसे शमां परवान का

करता था मन तंग शाम सवेरे
अब मै नहीं वो बस मे है मेरे
कर दिया खात्मा इस बेईमान का

दुनिया की दौलत की ना मुझको जरूरत
दिल में बसी रहें तेरी प्यारी सूरत
लब पर नाम रहे मेरे दिलदार था ।

भजन –332

श्वांस सिमरो गोविन्द,
मन अन्तर की उतरे चित ।

पूरे गुरू का सुन उपदेष,
पार ब्रहमा निकट कर पेख ।

आस अनन्त निभागहू तिरंग,
सन्त जना की घूल मन बन्दे ।

आपे छोड़े विनती करो,
साथ संगत अगन साधन करे ।

हरिजन के भर दियो भडांर,
नानक गुरू पूरे नमस्कार ।

भजन –333

शमां जलती है, परवाने हटाए ही नहीं जाते,
ये दीपक प्रेम के ऐसे है, बुझाए ही नहीं जाते ।

लगा ले जोर ये दुनिया, सता ले व्यर्थ ही इनको,
गिरे जो गुरू के चरणों में हटाए ही नहीं जाते ।

प्रभु को प्राप्त करने की लगी जिसको लगन भाई,
सत्य के है जो दीवाने वो बहकाए नहीं जाते ।

कटे गर्दन या निकले दम, नहीं परवाह उन्हें कोई,
पैर जब आगे बढ़ जाते वो लौटाए ही नहीं जाते ।

तेरी मस्ती के मस्ताने, तेरी सूरत के दीवाने,
वो हँस हँस कर फाँसी चढ़ते है, वो लटकाए नहीं जाते।

नशे में चूर बैठे हैं, तेरी महफिल के दीवाने,
जो खुद भर भर के पीते हैं, पिलाए ही नहीं जाते ।

भजन–334

शुक्रिया ऐ प्यार तेरा शुक्रिया शुक्रिया ,

आँख को आसूँ दिए जो मोतियों से कम नहीं,
दिल को इतने गम दिए कि अब कोई भी गम नहीं,
मेहरवां जो कुछ दिया, अच्छा किया शुक्रिया ।

जिन्दगी को सब विकारों से तूने छुड़ा दिया,
इस जीवन में ज्ञान के उनमूल खजाने दे दिए,
मेहरवां जो कुछ दिया, अच्छा किया शुक्रिया ।

इस प्रेम में सारी दुनिया को मैंने भुला दिया,
इस नशे में माया के सब नशे गला दिये,
मेहरवां जो कुछ दिया, अच्छा किया शुक्रिया ।

प्रेम के आँसूओं ने दिल के दाग धो दिए,
प्रेम के जरिए से मैंने प्रभु को पा लिया,
मेहरवां जो कुछ दिया, अच्छा किया शुक्रिया ।

भजन–335

शुक्रराना गए दिल घड़ी घड़ी आपका,
आपने दिया है मुझे प्यार दो जहान का ।

अखियों में मेरी तेरे प्यार के ही साए है,
अश्कों के मोती तेरी याद में बहार है,
गुण ना क्यों गाऊँ मैं, ऐसे मेहरबान का ।

दुनिया की प्रीत से मैं दिल को हटा के,
खुश हूँ मैं दिल सतगुरू से लगा के,
दिया मुझे आपने पता भगवान का ।

करता था मन तंग शाम सवेरे,
अब मैं नहीं हूँ वो बस में है मेरे,
कर दिया खात्मा इस बेईमान का ।

सतगुरू मेरा प्यार मेरा ईमान है,
इसके सहारे मेरे चलते ये प्राण है,
रिश्ता हमारा जैसे शमां परवान का ।

दुनिया की दौलत की ना मुझको जरूरत,
दिल में बसी रहे तेरी प्यारी मूरत,
लिख दिया दिल पर नाम मैंने आपका ।

भजन –336

शुक्रराना शुक्रराना शुक्रराना ओ तेरा लखं लख शुक्रराना,

जो कोई सतगुरू दर पे आए,
ले जाए खुशियाँ झोली भरके,
दे जाना, दे जाना विकारो की गठरी दे जाना ।

गुरू की नजर में जो आ जाए,
रहम खजाना वा पा जाए,
नजराना नजराना माँगे गुरू अहम का नजराना ।

मौन और शांति गुरू संग आएँ,
आत्म सुख का गुरू भेद बताएँ,
खुश रहना खुश रहना ओ सच्चा गुरू पाके
सदा खुश रहना ।

प्रभु ने सुन ली अर्ज हमारी,
सच्चे गुरू की हुई मेहरबानी,
ठुकराना ठुकराना शरणागत को ना ठुकराना ।

भजन–337

शब्द संभाले बोलिए, शब्द के हाथ ना पांव रे
एक शब्द औशध करे एक करे है घाव रे।

मुख से निकला शब्र तो वापस फिर ना जाएगा
दिल किसी का तोड़कर चैन फिर ना पाएगा
इसलिए कहते गुरू जी शब्द का रखना ध्यान रे।

सच कड़वा भाता ना किसी को, सच मीठा कर बोलिये
गुरू की अमृत वाणी सुनकर दिल में अमृत घोलिए
इसलिए कहते गुरू जी मीठा सत्य महान रे।

मख की मौन देवता बनाती मन की मौन भय रे
मौन से ही तुम अपने, शब्दों में भर लो जान रे
इसीलिए कहते गुरू जी मौन ही भगवान रे।

ज्ञानी तो हर वक्त ही मौन में रहता है
मुख से कुछ ना कहते हुए भी सब कुछ वो कहता है
इसीलिए कहते गुरू जी मौन ही विद्वान रे।।

भजन–338

शुकानों के गीत हम आए, गाते जीवन में
ये वाह वाह की आदत ऐसी डाले, शिकवे ना हो जीवन में

दुख से तेरा क्या है नाता, जब सत्गुरू हमें है समझाता
कि दुनिया सपनों का है एक मेला
बड़ी मुश्किल से है कोई जानवा
कि सपनों से जाग हम जाएं तब है हमने जाना

हालत आए चाहे जैसी लुट ना पाएं ये मन की मस्ती
रात कितनी भी हो चाहे लम्बी फिर आखिर सुबह तो होगी
कि मन में से अंधेरा भाग जाए, रोशनी आए जीवन में

जीवन नैया बड़ी कमजोर है पर साहिब मेरा बड़ा जोर है
रूकना कैसा डरना कैसा जब सत्गुरू मेरा सिरमोर है
कि हर पल वो साथ मेरे आए, मंजिल पाए जीवन में

स

भजन–339

सूरज कब दूर गगन से चंदा कब दूर किरन से
खुशबू कब दूर पवन से कब दूर गुरू हम सबसे
ये सत्संग तो प्यार का मंदिर है जीवन का दर्शन है।

तुम तो मेरे जीवन हो तुम्हें देख–देख जी लूंगी
अमृत वचनों की खातिर दुनिया का जहर पी लूंगी

तेरे पावन चरणों में ये शीष झुका देगें हम
मेरी राहों में जो भी आये, उसे रंग लगा देंगें हम।

इस ज्ञान के मंदिर की हो तुम सबसे प्यारी सूरत
भगवान नजर आता है जब देखूं तेरी सूरत

अब ना जीवन में आहें, जीवन मुक्ति को पायें
जीवन को सफल बनायें, दुनिया को स्वर्ग बनायें।

भजन–340

सत्गुरू ओ मेरे सत्गुरू
हो हो हो इस जीवन की जितनी भी श्वांसे रहे
तेरी महिमा का गुणगान गाते रहे

चाँद तारो के रौशन जहाँ में
इक सूरज का तेज है गहरा
चाहे ये घट रहे चाहे वो घट रहे
हर घट में तेरा ही प्रकाश रहे

प्यार तूने दिया हमको इतना
सागर में समाये न जितना
तेरी रहमत तले हम तो पलते रहे
वचनो पे ही जीवन चलाते रहे

तूने कितनो का जीवन संवारा
मेरे जीवन का तू ही सहारा
न कोई उलझन रहे न अज्ञान रहे
इस मन में गुरू तेरा वास रहे

हम तो काबिल न थे इस ज्ञान के
तून अपनाया अपना ज्ञान के
मेरा मन तो है अब सिर्फ तेरे लिए
इस तन पे भी अधिकार रहे

भजन–341

सच्ची बात बताता है ये गुरू
आत्मा का राज बताता है गुरू
दिलों में प्यार ज़गाता है गुरू,
हंसता है ये ही जीना सिखाता है गुरू
ये सत्गुरू प्यारा है......।।

इनकी शरण में जो आते हैं, आत्म आनंद पाते हैं
मंजिल तो पाही जाते है, शुक्राने दिल से गाते हैं।

सूरत आंखों में बसायेंगे, ज्ञान से जीवन सजायेगें
अब तो कुछ भी ना सोचेगें, तू जो कहेगा वो मानेगें।

गुरू के वचन हम जो माने और ना किसी को जाने
भगवान है तू जान गये हम चाहे कोई ना जाने।

माया की झूठी कहानियाँ मिटा दी तूने परेशानियाँ
अनंत है तेरी मेहरबानियाँ, दी तूने प्रेम की निशानियाँ।।

भजन–342

सब धनवान गरीब है, पहुँच मौत के पास,
तो नर हो धनवान है जो है हरि के दास,

लंकेष्वर क्या ले गए, क्या कपीष गए छोड़,
सदा विराजे साथ में, ऐसे धन को जोड़ ।

माया को जग भजे, हरि को भजें न कोटा,
मनवा जो हरि को भजे तो माया चेरी होय ।

बूँद बूँद में दया हरि की, बरसे अम्बर से,
तू क्यों जाकर छिप गया है भीजन के डर से रे पागल।

वृदा जल रहा वन वन में पूछत दर दर से,
मन मन्दिर में राम बसे है क्यों न चरण पर से ।

तेरो तेरे पास है अपने माहि में टटोल,
राई घटे न तिल बढ़े, हरि बोलो हरि बोल ।

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट,
अंत समय पछताएगा, प्राण जाएगे छूट,
रे मानवा, राम नाम की लूट है ।

भजन–343

सारे जहाँ के मालिक तेरी ही आसरा है
राजी है हम उसी में जिसमें तेरी रजा है

हम क्या बतायें तुझको सब कुछ तो खबर है
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नजर है
किस्मत है हमारी जो तेरा फैसला है

हाथों को हम दुआ की खातिर फैलाये कैसे
सजदे में आके सिर को झुकाये कैसे
मजबूरियाँ हमारी सब तू ही जानता है।।

रोकर कहें या हंस के कटती है जिन्दगानी
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी
तेरी खुशी समझ कर सब गम भुला दिया है।।

दुनिया बना के मालिक तू उसमें जा छिपा है
आती नहीं नजर में हर रूप में तू ही तू है
भेजा है जो जहाँ में है तेरा ही शुक्रिया है।।

भजन–344

सहारों का सहारा है सहारा है हमारा
प्यारा सत्गुरू मेरा सत्गुरू

दुनिया के इन तूफानों में ये ही इक सहारा है
क्यों ना करें हम पूजा इनकी दूजा कौन हमारा है
इससे हमारा जीवन संवारा........।

इसका सहारा सच्चा है, इस जग का सहारा है झूठा
क्यों बनना है इसको जिसमें ये सारा जग
उसने हमारा जीवन संवारा..........।

रूप बदल कर आया है ये दुनिया वालों कदर करो
तोड़ के अपने दस्तूरों को कदमों में ये शीष धरो
जिसने हमारा जीवन संवारा.........।

भजन--345

सत्गुरू तू बेमिसाल है तेरी क्या मिसाल दूं
तेरी ख्याल दिल से कैसे निकाल दूं।

तेरी नजर ने कर दिया दीवाना इस कदद हो
जी चाहता है खुद को, कदमों में डाल दूं।

तेरा जलाल देखकर, आता है ये ख्याल
हर राह को तेरे नूर के साँचे में ढ़ाल दूं।

तेरे बिना जहान में आता ना कुछ नजर
तू बता दे में तेरी किससे मिसाल दूं।

तेरे जमाल से होती है रहमते अदा
आ जाये अगर मौत भी हंसकर के टाल दूं।

भजन–346

सत्गुरू का ये कहना, मेरे गुरू का ये कहना,
ये तो ब्रहमज्ञान नहीं, छोटी बातो में खुश होना,
छोटी खुशियाँ या गम सहना, जीवन का लक्ष्य नहीं,
सत्गुरू का ये कहना ।

क्यों अपने को छलते हो,
झूठी तसल्लियों में जीवन जहन से भरते हो।

क्या प्रभु के नजारे हैं,
जिसे तू जगत समझे तेरे बन्धन सारे हैं ।

कहते हैं हमने सम पाया,
इक पल भी नहीं आया, अपना भूल नहीं पाया ।

तुम खोजो तो अपने में,
सो प्रभु दूर नहीं सच की राह में चलने में,
सत्गुरू का ये कहना,
सच्चा सुख तो और ही है,
अपने में लीन होना, आत्म अनुभव और ही है ।

भजन–347

सदा पाऊँ तेरा द्वारा, चाह ये दिल हमारा
ऊँची तेरी शान पर कुर्बां सर्वस्व हमारा

सेवा पूजा बंदगी तेरी सच्चा ये सरमाया है
झोली भर दे तूने उसकी जिसने आंचल फैलाया है
मालों माल हुआ इस दर से ये एहसान तुम्हारा है।

दुनिया के सब झंझट थे झूठे मिला श्री चरणों का हाथ
जन्म–जन्म के बंधन टूटे हम पर रहम कमाया
तेरी रहमत तेरी बख्शीश का खेल निराला......।

मन की कैद से मेरी रूह को तूने प्रभु आजाद किया
शब्द की डोर सुरति को तूने दिल को भी आबाद
मन मत छोड़ के गुरू संग से जीवन बना हमारा....।

परमारथ के खातिर तूने दुनिया में अवतार लिया
खुश किस्मत है जमाने भर में जिसे चरणों में प्यार मिला
भटको रूहों को प्यारे गुरू ने आकर के संभाला.....।

भजन–348

सतगुरू के हैं जो रे उन्हें दर्द ना लगे कोय
बाहर से खामोश रहें पर अंदर अमृत बरसे ।

सह ना सके वो गुरू की जुदाई
उनके हृदय की यही है कहानी रे
हर पल गुरू को मन में बसाये,
असुवन नीर बहाये..... ।

चुपके–चुपके प्यार वो करता देखता
गुरू के हर घट में वो रे
उसने मन को यही समझाया–3
जाना कोयी होय रे...।

गुरू को जिसने मन में बसाया
उसका बेड़ा पार हो जाये रे
गुरू के आगे चले ना किसी की
काल की क्या है मजाल रे........।

भजन–349

सत्गुरू तेरे वचनों में बड़ा प्यार समाया है
मेरी सूनी बगिया में अमष्त बरसाया है।

मेरी जीवन बगिया में कोई फूल खिला ना सका
तेरे जैसा सत्गुरू जी कोई माली आ ना सका।
मेरे उजड़े गुलषन को गुलजार बनाया है।।

कर्मों की खेती में जाने क्या–क्या बोया था
अज्ञान की निद्रा में जी भर के सोया था
सूरज बन कर तुमने दिन रात जगाया था।।

दुनिया में तेरे जैसा कोई सच्चा मीत नहीं
तेरे जैसा प्यार नहीं तेरे जैसी प्रीत नहीं
दर्षन पाकर तेरा मेरा मन भव हर्शाया है।।

भटकों को तारने को तूने अवतार लिया
जो आया षरण तेरी बेड़ा उसका पार किया
चौरासी से बचकर निर्गुण में समाया है।।

भजन–350

सच्चे ह्रदय से होकर समर्पित,
अपने ठाकुर को जो पूजता है
ढूंढ़ता है उसे खुद कन्हैया,
अपने कान्हा को जो ढूंढ़ता है

जिसकी नैया सम्हाले कन्हैया
उसे कोई भी डर नामंवर का
एक उसकी मंजिल सही है जो
पथिक है प्रभु की डगर का
गम की हस्ती उसे क्या
सताये अपनी मस्ती में झूमती है......

जिसका रिश्ता है माया पति से
जग की माया उसे क्या लुभायें,
उसकी नजरों में सब है बराबर
कोई अपना ना कोई परायें,
उसकी नजरों में है श्याम सुंदर
हर कहीं श्याम की ढूंढता है............।

प्रेम की डोर में बंधे के भगवन
भक्त के द्वार पे चल के आयें
रंग लाती है चाहत तभी तो
आके गागर में सागर समायें
जाने बाद भी ये जमाना
उसकी चरणों की राज ढूंढता है।।

भजन–351

सत्गुरू प्यारे मेरा नाथ तू है,
नहीं मै अकेली मेरे साथ तू है।

चली जा रही हूँ मैं राह में तुम्हारी
राह में जो आये तूफान भारी
थामे हुये जो–जो मेरा हाथ तू है नही....।।

मेरा इश्ट तू है मै तेरी पुजारी
तेरा खेल हूँ मैं तू मेरा खिलाड़ी
मेरी जिन्दगी की हर बात तू है.........।।

तेरी भक्त हूँ मैं तेरे गीत गाऊँ
तुझे चाह कर भी ना कभी भूल पाऊँ
तू ही प्रभु मेरा–मेरा सत्गुरू तू है...........।

भजन–352

सदा मुस्कराना गुरू का वचन
गुजर जायेगा हर खुशी और गम

सफर सुहाना बनाना है हमको
गुरू वचनों रख तन मन को
नहीं दूजा नहीं पूजा जो कोई जरूरत पड़े.......।

गुरू के मुख से जो निकली है वाणी
जो वचन वो शब्द है रूहानी
नहीं जप से नहीं तप से गुरू की कृपा मिले........।

गुरू के वचन है ज्ञान की ज्योति
बड़े अनमोल हैं ये हीरे मोती
नहीं कोई मोल नहीं कोई तोल ये हीरे है अनमोल....।

गुरू वचन है ये जीवन अमानत
बसाओ ये दिल में रहे सलामत
नहीं छूटे नहीं खूटे ये तो अंग संग है चले......।

भजन–353

साधो मन का मान त्यागो
काम क्रोध संगत दुर्जन की ताते ऐ निस मागो साधू

सुख दुख दोनो समकर जानो और मान अपमाना
हरश शोक से रहे अतीता बिन गुरू तत्व पछाना

साधो मन का मान त्यागा
स्तुति निंदा दोऊँ त्यागे खोजे पद निर्वाणा

जन नानक ये खेल कठिन है
किन्हु गुरूमुख जाना साधो

भजन–354

सतगुरू का संग है प्यार की जिसमें होती है पूजा
प्यार के जिसके कोई ना सीमा नही मेरा दिल रंज है

तेरे प्यार में खो जाये हम, वचन को माने मोती पाये
जितना तू दे उतना पाये सागर का मन है सतगुरू

और न मुझे घर बार ना सूझे अब हमें कोई द्वार न सूझे
फिर आये तेरे दर पे सच्चा जीवन है

सच्चा सुख तुमसे मिल जाये, तुम खुश हो तो दिल खिल जाये
ब्रहम मिले परब्रहम मिले तेरे वचनों को संग है

हमको सच में जीना नही आया, हमने सारा जीवन गंवाया
वक्त है अब भी जो हम चेते, कुपा तो साधन है

भजन–355

सब कुछ तज के द्वार पे तेरे मै आया मेरे राम जी
अब तो दर्श दिखा दो मेरे राम जी
मुझको मुझसे मिला दो मेरे राम जी

मिट्टी में मिल जायेगी काया का क्या मोल
देख अमर है आत्मा मन की आंखे खोल
रूप के माया जाल में उलझा ये सारा संसार
लेकिन किसने जाना सच्चा रूप है तन के पार पार
सच्चा रूप दिखा दो मेरे

अंधियारे में भटक रहे मन सब मूरख इंसान
ऊर्ज है मेरी दे.दो इसको उजियारे का दान
मन में ज्योति जला दो मेरे राम जी

भजन–356

साई तेरी याद महा सुखदायी,
एक तू ही रखवाला जग में
तू ही सदा सहाई

तुझको भूला जग दुखियारा,
सुमिरन बिन मन में अंधियारा
तूने कृपा बरसाई

मन ही है ये तेरा द्वारा बैठ,
यहीं से तुझको पुकारा
प्रेम की जोत जगाई

सांची प्रीत तुम्हारी दाता,
इस जग का सब
झूठा नाता तू चरणन सुखदाई

भजन–357

संसार सराय है यहां कुछ नहीं अपना है
जो करना है कर ले हम चलते मुसाफिर है

होता है वही कुछ जो मंजूरे खुदा होता
संसार के उसके बिना पता भी नहीं हिलता
ये रचना उसी की है जो पर्दे के पीछे है

जब रात को हम सोते हर ख्वाब सच्चा लगता
आंख खुलते ही जाना जो देखा वो सपना
जीवन भी एक सपना है यहां कुछ नही अपना है

जो आज नही खुश है वो कल भी नही होगा
जब अंत समय होगा अरमान बहुत होगा
दिन आज ये अपना है कल परसो पराए है
जो करना है कर ले हम चलते मुसाफिर है

भजन–358

सारी खुशियाँ आती है जब सत्गुरू आते है
हर एक वचन लेकर जो ॅदय में बसाते है

सत्गुरू के आने से शुभ मंगल होता है
गंगा की तरह पावन मन निर्मल होता है
वो अपने प्रेमियों को सब कुछ दे जाते है

तन मन धन के सारे दुख दूर करे सत्गुरू
तुम विनती प्रेमियों की मंजूर करे सत्गुरू
विश्वास जो करते है वो ही सब कुछ पाते है

मेरा सूना सारा संसार खुशियों से झूम उठा
तेरा दर्शन पाके ये मन चहक उठा
तेरा दर्शन पाकर के फूले ना समाते है

भजन–359

साथ ले लो गुरू आगे बढ़ जाऊँगा
वरना सम्भव है मै भी फिसल जाऊँगा

राह जितनी भी कठिन और पथरीली हो
कांटो झाड़ी भरी और जहरीली हो
दो सहारा गुरू मै भी बच जाऊँगा

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर
मुझको उलझा डुबाने चली हर पहर
दे दो पतवार तो मैं भी बच जाऊँगा

दुनिया कहती है आ जा इधर मौज ले
पर उधर धर्म कहता है मुख मोड़ ले
तुम कहोगे जैसा वैसा मै कर जाऊँगा

सत्य कहता हूँ भूला जब भी तुम्हें
पापी दुनिया मगर एक ना पाया तुम्हें
बिन तुम्हारे गुरू मै किधर जाऊँगा

भजन–360

सब कुछ दिया है तुमने इतना और सत्गुरू दे दो
ये हटा के प्यार सबका अपना ही प्यार दे दो

मैं ढूंढ जंगलों में बस्ती में तुमको ढूंढू
गर दे सको तो ऐसा दिल में करार दे दो

खोलूं मैं जब ये आंखे तो सामने तुम्ही हो
झपकू पलक अगर तो अपना दीदार दे दो

ऐसी पिला दे मुझको खुद तक तो भूल जाऊँ
अपनी मस्ती भरी हई ये चितवन का खुमार दे दो

गर हो गये भेहरवाँ हम सब पे सत्गुरू जी
रहमत की कर नजर तो अपना वो द्वार दे दो

भजन–361

सजण दिसण में अचे ना चाहे
जिते भी आहे करीब आहे
हिता हुता बयो मेहर बसाए
जिते भी आहे करीब आहे ।

हि आसमां सिज चन्द्र है तारा
हि सुहणा दिलकश अजब नजारा
तू ही त हाजिर हर राय में आहे।

रजा में राजी सदा ही रह तू
गिला शिकायत कडे न कर तू
हूँ तोखे हर पल प्यो आजमाए।

हुकम सदाई कबूल कर तू
जे दर्द देत कबूल कर तू
करे जो जेकी सुणे सो आहे ।

अगया पुश्या चौ तरफ हू आहे
करे ना सगन्दे तू कुछ ठिकाये
नजर सदा इनज जी तो त आहे।

भजन–362

सच में गुजरेगी जिन्दगी अपनी
अब तो मौज रहते हैं मौज में अपनी

जब से मिला है मुझको सच का सहारा
तब से हुआ है मेरा जीवन सुहाना
कैसे दिखाऊँ क़िसी को बेखुदी अपनी ।।

भाए ना मुझको अब ये झूठा जमाना
रहता है हर पल ये दिल गुरू का दीवाना
दुनियां क्या जाने दिल्लगी अपनी ।।

सत्संग ही है अब तो जीवन का हमारा
इससे मिला है मुझको जीने का सहारा
रहूँ बिना कैसे बेखुदी अपनी ।।

भजन–363

सुर नर मुनि जन सब गाए तेरे ही तराने गीता
ओ गीता गीता गुरूदेव हमारे गीता
मन जीवा, जग जीता, दादा की दुलारी गीता

दादा की जोत से प्रगटी दादा से सीखी गीता
गीता का रूप हुई तो फिर नाम मिला तुझे गीता
दुख दूर किए है सारे भारत की रोती सीता
जब तक है चांद सितारे तेरा नाम रहेगा गीता

सत्युग में प्रहलाद को तारा, कलयुग में ये जग सारा
कलयुग में किया है सत्गुरू ये काम है सिर्फ तुम्हारा
दादा का ज्ञान पहुचांया घर घर में तूने गीता
वैकुण्ड किया नरको को सारा जग जीता

जेता में पापी तारे कलयुग में पास संधारे
नीचों से नीच को तूने अब राम किए है सारे
तू ही राम बने तू ही सीता, गुरूदेव हमारे गीता
अपनी वाणी के जादू से है सब जग तूने जीता

द्वापर में श्याम बन आये गीता अर्जुन को सुनाई
कलियुग में बनकर गीता, गीता सबको समझाई
तू ही श्याम बने तू ही गीता, गुरूदेव हमारे गीता
जब तक है चांद सितारे तेरा नाम रहेगा गीता

तेरा नाम अमर तू अमर है बैठे हो सबके दिल में
तेरी ही वाणी गूंजे दुनिया के हर सत्संग में
सब रूप तेरे और मुख से तू ही तो बोले गीता
दादा की फूलवारी को तूने अपने खून से सीचा

भजन–364

संसार के जीवों पर आशा न किया करना
जब कोई ना हो अपना हरिओम् जपा करना।।

जीवन के समुन्दर में तूफान भी आते हैं
जो प्रभु के सहारे है प्रभु आके बचाते हैं
भगवान भी कहते है हमें याद किया करना।।

छावा ना जमा लेना ये देश है बेगाना
इस घर से तुझे प्राणी, वापस नहीं है आना
भगवान भी कहते हैं हमें याद किया करना।।

ए भक्त ना दुख से रो तुझसे प्रभु दूर नहीं
भक्तों का दुखी होना, प्रभु को मंजूर नहीं
प्रभु खुद ही आयेंगे तुम याद किया करना।।

भजन–365

सब सौंप दो प्यारे प्रभु को
सब सरल हो जायेगा
खुषियाँ की सुन्दर झील में
जीवन कमल मुस्काएगा

है जो भी तेरा पास सब उसकी अमानत है
अपनी समझ लेना अमानत में ख्यानत है
सब कुछ तेरा ये मान ले, सब कुछ तेरा हो जाएगा
चिंता सभी मिट जाएगी औ मन विमल हो जाएगा

आकाष से ऊँची तुम्हारी भावनाएँ हो
दिल हो बडा सबके लिए षुभकामनाएँ हो
कल्याण करता चल तेरा, खुद ही भला हो जाएगा
आजाद हो पिंजरे से पंछी, फिर निकल उड जायेगा

भजन–366

सुख में समता, दुख में समता,
हर क्षण में, हर पल में समता,
दूर हटे सब द्वन्द, मिल,
मिले तब जीवन में आनन्द ।

संयम का जो पथ है पाया,
उसमें ही मंगल की छाया,
हरि चरण आनन्द,
मिले तब जीवन में आनन्द ।

ह

भजन–367

हजारे शुक्राने है गुरू के
जिसने जीना सिखा दिया है
मिलन गुरू का जबसे हुआ है
ये दिल गुरू का ही हो चुका है।

नजर गुरू की जिसपें हो जाए
बंदे से वो तो खुदा हो जाएं
ये सर हमेशा झुका रहेगा
गुरू से सब कुछ ही मिल चुका है।

गुरू की जीवन को आगे रखकर
हम अपनी जीवन सफल बनाए
खुद अपनी जीवन को देखकर के
गुरू के ज्ञान पे यकीं हुआ है।

माया को जब कोई माया ही समझे
उसी का जीवन सफल हो जाएं
हर श्वाँस अपनी ये सच में जाएं
अब तो दिल की यहीं रज़ा है।

भजन–368

है मानुष्य जन्म सोना, इसको न यूं खोना
सत्संग है इक दर्पण सब दाग इसी में धोना

है चोला बड़ा अनमोल, मिलता बड़ी मुश्किल से
और इससे भी मुश्किल है सतगुरू का मिलना
हमको तो दोनों मिले, ये अवसर नहीं खोना

जन्मों से गिरे मन को विषयों से हटाना है
और हाते का हरदम गुरू वचना से रखना है
जब आन पड़े मुश्किल, हरिओम जपा करना

शमा की तरह जीवन हर एक बना डाले
जो खुद जलकर देखे वो रौशनी फैलाता है
ऐसे जीवन की भेट हर एक को करनी है

• •• •• •• ••

भजन–369

हर उलझन सुलझा दी गुरू ने
हर बिगड़ी बना दी गुरू ने

जन्म–जन्म से भटक रहे थे
मोह माया में फंसे पड़े थे
सच की राह दिखा दी गुरू ने

जीवन में अंधकार भरा था
शुद्ध प्रेम का पता नहीं था
प्रेम लगन लगा दी गुरू ने

तू मेरे जीवन का दाता
जन्मों से है अपना नाता
आत्म ज्योति जला दी गुरू ने

जो भी तेरे द्वारे आया
तूने सोया भाग्य जगाया
नैया पार लगा दी गुरू ने

भजन–370

होगा परसों जाने किसका, यह नियम सरकार का
नग्न हो अपना समझना दुखों को संजो रहे हो।

जिसको तुम मृत्यू समझते हो वही जीवन तुम्हारा
है नियम जग का बदलना, क्या पराया क्या तुम्हाराएक
क्षण में कंगाल हो, क्षण भर में धन से मोह रहे हो ।

मेरा तेरा बड़ा या छोटा, भेद ये मन से हटा दो सब
तुम्हारे तुम सभी के, ये फासले मन से मिटा दो
कितने जन्मों तक करोगे, पाप कर्म जो कर रहे हो

उठो अपने आपको, भगवान को अर्पित करो
अपनी चिंता शोक और भय सब उसे अर्पित करो है
वही उत्तम सहारा, क्यों सहारा खो रहे हो

है किराए का मकान न, तुम हो इसके न तुम्हारा
पंच तत्वों का बना घर, देह कुछ दिन का सहारा
इस मकान में हो मुसाफिर, किस कदर यूँ सो रहे हो।

जब करो जो भी करो, अर्पण करो भगवान को
सदा कर दो तुम सर्मपण, त्याग कर अभिमान को
मुक्ति का आनन्द अनुभव, सर्वदा क्यों खो रहे हो ।

भजन–371

हर सुबह बचपन, दोपहर जवानी,
शाम को आया बुढ़ापा,
रात को खत्म कहानी ।

बचपन में तू भोला भाला,
गम की दुनिया से तू दूर था,
पल में हंसा पल में रोया,
पल में ही मगरूर था,
ये कैसी तेरी जिन्दगानी ।

आई जवानी, नयन नशीले,
सुन्दर तेरी काया,
विषयों में तू फंसकर पगल,
हीरा जनम गंवाया,
ये कैसी तेरी मनमानी,
रात को खत्म कहानी ।

नैया डगमग डोले,
जिनके साथ लगाए तूने,
वो न तुम संग बोले,
ये कैसी हैरानी, रात को खत्म कहानी ।

भजन–372

हरि नाम के हीरे मोती,
मैं बिखराऊँ गली गली,
ले लो रे कोई राम प्यारा,
आवाज लगाऊँ गली गली ।

दौलत के दीवानों सुन लो,
इक दिन ऐसा आएगा,
धन दौलत और रूप खजाना,
यहीं पड़ा रह जाएगा,
सुन्दर काया माटी होगी
चर्चा होगी गली गली ।

मित्रा प्यारे सगे सम्बन्धी,
इक दिन तुझको रूलाएगें,
कल तक जो अपना कहते थे,
अर्थी पे तुझे सुलाएगे,
जगत पराया दो दिन का है,
आखिर होगी चला चली, ले लो रे ।

भजन–373

हम प्यार में तेरे सत्गुरू जी, दुनिया की मोहब्बत छोड़ चुके,
दिल के मालिक दिल तुझको दिया, औरों से दिल को तोड़ चुके,

दुनिया से दिल लगा देखा, हर बार मगर धोखा खाया,
जब देखा परखा और समझा, दुनिया फकत छलावा था,
कुछ भी न मिला दुनिया से बहुत दुनिया के पीछे दौड़ चुके ।

तूने जो दी हमें सच्ची खुशी दौलत नहीं कोई इससे बड़ी,
क्या देके बदला चुकाए तेरा, देने को पास नहीं कुछ भी,
पाकर तेरा प्रेम, तेरी भक्ति, हर चाहत से मुख को मोड़ चुके

है नाम तेरा मंगलकारी, जिससे मिटती सब चिंता,
मिट जाते है ताप और पाप सकल दूर होती है कल्पनाएँ,
अब जपते है नाम तेरा, भय भरम का भाड़ा फोड़ चुके ।

तेरे चरणों में तीरथ हैं सब, मन को गीता दिया हमने,
जन्मों का मैला मन क्षण में उज्जवल होता देखा हमने,
सब तजकर दास तेरे चरणों से नाता हम तो तोड़ चुके ।

भजन–374

है प्रीत जहाँ की रीत सदा मैं गीत वहाँ के गाता हूँ
ये दादा की फुलवारी है मैं सबको शीष झुकाता हूँ

सबसे पहले दादा को नमन, जिसने ये बाग लगाया है
खुद महके जग महकाया, गुलशन देखो लहराया है
हम पर जीवन कुर्बान किया, मैं लख–लख शीष झुकाता हूँ।

अब ध्यान करो इस देवी का, जो गीता भगवन कहलाती है
इतना ऊँचा आदर्श बना, गर्दन खुद ही झुक जाती है
ऐसे गुरूओं का दास हूँ मैं, ये सोच के मैं इतराता हूँ।

माँ तुलसी के आशीष से ये महकी सारी फुलवारी है
भगवान श्याम ह्रदय में बसे, अब उनके भरों से गाड़ी है
सत्गुरू के चरणों में मैं नित–नित शीष झुकाता हूँ।

भजन–375

हम आज से हम आप के आनंद में रहें
कल क्या हुआ कल क्या होगा
इसकी चिन्ता ना करें........।

गुरू प्रेम में गुरू ज्ञान में, गुरू ध्यान मे रहें
हरिओम कहें..............।

सत्कर्मों से तुम जकड़ोगे सोने की जंजीरों से
बदकर्म तुमको बांधेगे लोहे की जंजीरों से।

गुजरे हुए कर्मों से तेरी प्राब्ध है बनी
कर्मों से सृष्टि को जानो अब खाता बंद करो।

भगवान से हम आये हैं भगवन में रहें
उसकी सृष्टि बड़ी श्रेष्ठ है, उसका आनंद लें।

भजन–376

है मनुष्य जन्म सोना, इसको क्या नाम दूं
सत्संग है इक दर्पण, सब दाग में

है चोला बड़ा अनमोल, मिलता बड़ी मुश्किल से
और उससे भी मुश्किल है सत्गुरू का मिलना
हमको तो दोनों मिले ये अवसर नहीं खोना

जन्मों से गिरे मन को विषयों से हटाना है
और वृति को हरदम गुरू वचनों में रखना है
जब आन पड़े मुश्किल, हरिओम् जपा करना।

शमां की तरह जीवन हर एक बना डाले
जो खुद जलकर देखें वो रोशनी फैलाता
ऐसे जीवन की भेंट हर एक को करनी है
सत्संग है इक दर्पण, सब दाम में।

भजन–377

हर उलझन सुलझा दी गुरू ने हर
बिगड़ी बात बना दी गुरू ने बिगड़ी.....।

जन्म–जन्म से भटक रहे थे
मोह माया में फंसे पड़े थे
सच की राह दिखा दी गुरू ने......।

जीवन में अंधकरा भरा था
शुद्ध प्रेम का पता नहीं था
प्रेम लगन लगा दी गुरू ने......।

तू मेरे जीवन का दाता
जन्मों से है अपना नाता
आत्म ज्योति जला दी गुरू ने......।

जो भी तेरे द्वारे आये
तूने सोया भाग्य जगाया
नैया पार लगा दी गुरू ने.......।

भजन–378

है तमन्ना मेरी प्यारे सत्गुरू यही
मैं जन्म भर तेरे गीत गाती रहूं
और देख प्रभु तेरी बांकी छवि
तेरे चरणों में शीष नवाती रहूं।

यूं तो कितने है दाता इस जग में मगर
कोई तुझसा दयालु और दानी नहीं
भेद माया का तेरे ना पाया कोई
आज तक़ सुर असुर संत ज्ञानी नहीं
बस दया मुझपे ऐ सत्गुरू प्यारे तू कर
मैं कठिन दुख में भी मुस्कुराती रहूं।

जिसको मैंने बसाया ह्रदय में सदा
तुम वही बंसी वाले भगवान हो
कष्ट भक्तों का हरने वाले प्रभु दीनों के
बंधु दाता दयावान हो
तुम सदा मुझको अपना समझते रहो
फूल मैं मुस्कराहट के चढ़ाता रहूं।

है भरोसा बड़ा सत्गुरू दादा तेरा
सिवा आपके अब कोई सहारा नहीं
हाथ सेवक का है नाथ मत छोड़ना
कोई तेरे सिवा अब हमारा नहीं
अपने चरणों की छाया में रखना मुझे
मैं सदा तेरी सेवा बजाती रहूं।

भजन–379

हर बार तेरे दर पे नवगीत सुनायेंगे
गीता भगवन सुन ले तेरी महिमा गायेंगे

कोई हमको मिलने से रोकेगा भला कैसे
कदमों से लिपट जाये वृक्षों से लता जैसे
सपनों में मिल गुरू को हम सामने पायेंगे।

होगी तृष्णा पूरी प्यासी इन अखियन की
माथे से लगा तेरे धूलि तेरे चरणनन की
ज्ञानामृत लेकर गुरू हम भव तर जायेंगे।

सदियों से सदा हमने तेरी आस लगाई है
पगल मनवा कहता गुरू मुझसे समाये हैं
पाकर के तेरे दर्शन मन को समझायेंगे।

चुनकर वन उपवन से पुष्पों की मधुर लडियां
एक हार बनाया था बीती है कई घड़ियाँ
ये पुष्प भजन माला तुझे भेंट चढ़ायेंगे।

भजन–380

हम तेरे प्यार में सारा आलम खो बैठे–2
मन कहता है कि ऐसे प्यार में खो जाये–2

प्राणी से छुड़ाकर उसका घर
तुम ब्रह्म नगर में ले आये
तेरा ज्ञान हमें यूं मन भाया
हम जो भर के मुस्काये
जब प्यार हुआ इस ज्ञान से
मन आनन्द–आनन्द रहने लगा
हम कैसे भुलाये प्यार तेरा
मन अन्दर में अब तो रहने लगा
हम तो तुम्हारे हो बैठे।

इक तेरे वचन के बोल पे हम
अपना जीवन अर्पण कर दे
तब ही तो दीवाने कहलाये
दुनियां की नजर में प्यार बने
तुम प्यार की सुंदर मूरत हो
और प्यार हमारी पूजा है
अब इन चरणों में दम निकले
बस इतनी और तमन्ना है
इस ज्ञान के सागर में हम तो
अपनी जीवन नाव डूबों बैठे।

भजन–381

है मदमस्त मस्ती गुरू ज्ञान में
रखा क्या है दुनिया के ज़ंजाल में
मिटा दो गंवा दो खुदी
खुदी ने खुदा से जुदा है किया।

बहुत अपनी मनमानी कर ली यहां
मगर कुछ नतीजा न निकला यहां
कई सतकर्म अपने हाथों किये
मगर ज्ञान का तो जला न दिया
ये जलता नहीं बिन गुरू की शरण
बस इस बात से ही तो अन्जान थे।

कई ग्रन्थ पढ़कर समझने लगे
कि हम शेर है हम ही बलवान है
मगर कोई हालत जो आ ही गई
अन्दर बाहर हलचल मचा ही गई
ये तोते का ज्ञान है किस काम का
जो वक्त पड़े तो सम्भाले नहीं।

मिला है मुझे बस ये पूरण गुरू
वो संयम को क्यों न दूर करूं
मलिन जिन्दगी को मै साफ करूं
फूल सा इसको खिलाऊँ इसे
यही शौक अब मेरा आखिरी
गुरू ज्ञान से में जुड़ी ही रहूं।

भजन–382

होगे किसी के लाखों मेरा सहारा तुम हो,
तुम बिन गुजर है मुश्किल मेरा गुजारा तुम हो ।

मझधार में थी नैया, तूने उसको संवारा,
तुमने ही हाथ पकड़ तूफां से मुझे निकाला,
माझी तुम्हीं हो मेरे, मेरा किनारा तुम हो ।

महसूस यूँ हुआ है दिल के कमल खिले,
मुश्किल हुई है आसान, खुशियों के सिलसिले,
मेरी नजर भी तुम हो मेरा नजारा तुम हो ।

भटकूँ न अब जगत में दादा इधर भी देखो,
सब्र और षुकर भी दे दो, अपना सहारा दे दो,
रहे तेरी याद में हरदम, सब कुछ हमारा तुम हो ।

भजन–383

हरेक राही को सत्संग की जरूरत है
वचनों को मानते ही जीवन ही बदलती है

जो तुझको करना है वो आज ही तू कर ले
क्यों कल पर रखता है कल किसने देखा है
हर एक पल खुद को सावधान रहना है।

जिस आनन्द के लिए हर कोई भटकता है
अपने इस आनन्द का, गुरू से ही पता मिलता
सत्संग की महिमा को कोई गा नहीं सकता।

इस सच को पाने से नई जिन्दगी मिलती है
जीने और मरने से मुक्ति ही मिलती है
अपने इस मकसद को इस जीवन में पाना है।

भजन–384

हरि ओम् हरि–हरि ओम् मधुर–2 नाम हरि–हरि ओम
प्यारा–प्यारा नाम प्रभु हरि–हरि ओम
प्यारे मुख से तू बोल हरि–हरि ओम्

प्रभु कृपा की बरसाते, होती हर दिन हर रातें
दिल में बैठा प्रभु प्यारा, शीष झुका के कर लो बाते

फूलों में है महक उसकी, पंछियों में चहक उसकी
हर शै में जलवा प्रभु का, कर प्यारे बंदगी उसकी।

कोयल करे कुह–कुह पपीहा करे पीहं–पीहं
सब तेरा गुणगान करें सब में है प्रभु तू ही तू।

नाम जपा या मीरा ने शबरी और कबीरा ने
पल में आकर दरस दिया ष्याम सुन्दर रघुवीरा ने।

भजन–385

है कृपा तेरी मेरे सत्गुरू
तूने जीवन मेरा बना दिया
मैं भटक रहा था जहान में
तूने ज्ञान अमृत पिला दिया।

तेरी वाणी में है वो असर
जिसे सुन कर खिलता है हर बशर
हर बशर के दिल में ज्ञान का
तूने दिव्य दीपक जला दिया।

मैंने ढूंढ़ा तुझको जहां में
पर पता तेरा कहीं ना मिला
जब पता तेरा मुझे मिल गया
तो अपना पता ही भूल गया।

तेरे दर्श की लगी प्यास है
तेरे दर पे आऊं ये आस है
इसी आस ने मेरे ह्रदय की
उमंगो का दीपक जला दिया।